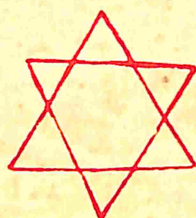
जयतु शारिकै:



प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोपशोभिताम् ।
पाठेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम् ॥

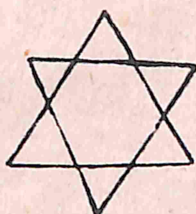
श्री शारिका लीला-लहरी

(नौ तरंगों का संग्रह)

पाँचवीं बार

प्रकाशक :

श्री श्री जगदम्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था-हारी पर्वत
श्रीनगर-काशमीर



जयतु शारिकै:

प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोपशोभिताम् ।
पाठेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम् ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(नौ तरंगों का संग्रह)

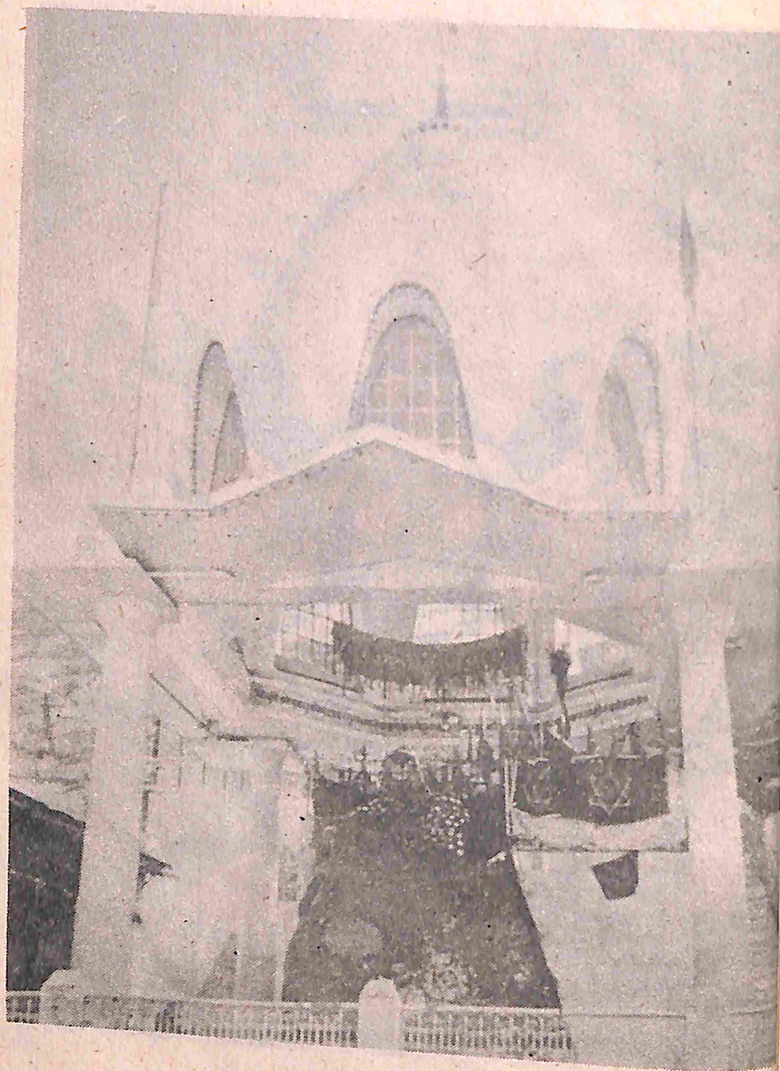
पाँचवीं बार

प्रकाशक :

श्री श्री जगदम्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था-हारी पर्वत
श्रीनगर-काश्मीर

मूल्य ;





"धार्मिक–संस्कृति और कश्मीर"

कश्मीर का प्राग्-ऐतिहासिक युग (Pre-historic-Period) उतना ही पुराना है जितनी स्वयं कश्मीर की धरती और इसका परिवेश। भूगर्भ-वैज्ञानिक खोज के अनुसार सतीसर का पानी आज से तीन-चार लाख वर्ष पहले यहां से निकास के क्रम में चालू हो चुका था। नीलमत पुराण (B. C. 200) की रचना में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है[1]। दक्ष प्रजापति के हवन की आग में झुलसी सती को उठाकर भगवान शंकर ने कश्मीर के इस अपार सरोवर में अध-जली सती के पार्थिव शरीर को प्रवाहित किया था अतः इस कारण इसका नाम सतीसर पड़ा[2]। इस सरोवर के पानी को निकास देने का प्रयत्न महर्षि कश्यप की निरंतन तपस्या का फल है। इसके अतिरिक्त 'कश्मीर' देशवाचक नाम भाषात्मक तीन बिन्दुओं पर आधारित हैं।

"क + अश्म + ईर"

'क' का अर्थ है पानी, 'अश्म' का अर्थ है पत्थर या पहाड़ और 'ईर[3]' का अर्थ है बहना या निकास देना अतः महर्षि कश्यप ने पहाड़ों के बीच रुके हुए पानी को तपस्या के प्रभाव से निकास दिया और उसका नाम कश्मीर [क + अश्म + ईर = कश्मीर] पड़ा। कश्यप आर्यों की एक शाखा थी, जिनका विस्तार रूस के कास्पियन सागर (caspian sea) से लेकर कश्मीर तक था। और इनके प्रमुख नगर काश्यप स्थान[4] (काफिरिस्तान)

---

1 नीलमत पुराण :- श्लोक 45-70, 127, 150-240.
2 नीलमत पुराण :- श्लोक 127.
3 नीलमत पुराण :- श्लोक 226-227.
4 थामस वाट्टरस :- ऑन युवान च्वांगस ट्रेवल्स इन इण्डिया-122.

सिन्धु - कश्यप[5] (हिन्दू कुश) कश्यप - गृह[6] (काशगर) और कश्मीर आदि। यही कारण है कि कश्मीर की वैदिक तथा शैवी कर्मकाण्डीय व्यवस्था के प्रेरक ऋषि लौगाक्षि ने डंके की चोट की तरह इस बात को दोहराया है- "सरिताम् काश्यपीनांसरितो यज्ञकीर्तिम् इच्छमानानाम्"[7]। (यह सूक्त (वैदिक) उन - काश्यपियों के निमित्त है जो यज्ञ कीर्ति की इच्छा को प्राथमिकता देते है।) कश्मीर की इष्ठ देवी शारदा है और शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी पीठ से उसका स्थान पश्चिम में पड़ता है। वास्तव में दोनों शक्ति पीठों में शिला (चट्टान) का ही भव्य स्वरूप है। अन्तर मात्र इतना ही कि शारिका-पर्वत पर चक्रेश्वरी स्वयं मौन यन्त्र स्वरूप में विराजमान है और शारदा शक्ति पीठ में मुखर वाणी स्वरूप सरस्वती है। भक्तजन शारिका के चक्रेश्वर शक्ति पीठ में श्री यन्त्र की तपस्या किया करते थे और तपस्या का वरदान शारदा के शक्ति पीठ के पास मिलता था[8]। शारिका पर्वत के नीचे वितस्ता का प्रवाह है और शारिदा भगवती के नीचे मधुमती नदी का प्रवाह है। नीलमत पुराण के आधार पर कश्यप ऋषि ने सारे देवी देवताओं को कश्मीर बुलाया और सबों ने अपना अपना स्थान[3] यहाँ अपनाया। यही कारण है कि कल्हण राजतरंगिणी में लिखते है "तिलांशोऽपि न यत्रास्ति पश्च्यास्ती थैंबहिष्कृत"[9]। (कश्मीर प्रदेश का कोई भी ऐसा स्थान नही है जहाँ पर तीर्थ नही है)

---

5 गिलगित मैनस्क्रप्ट-212. 6 गिलगित मैनस्क्रप्ट-107.
7 लौगाक्षि पद्धति (लौगाक्षिकषिका समय 400 B.C. है)
8 शारदा महात्म्य पटल 3. 9 कल्हण : राजतरंगिणी 138.

कश्मीर देश स्वयं माँ भगवती का स्वरूप है। यह बात स्वय भगवान श्री कृष्ण ने कश्मीर में आकर, राजा दामोदर की विधवा रानी यशोवती को कश्मीर के राजसिंहासन पर बिठाते समय इस प्रकार से कही थी "कश्मीरः पार्वती तत्र[10]" (कश्मीर की धरती स्वयं में पार्वती का स्वरूप है) धर्म और धार्मिक अनुष्ठानों की दृष्टि से कश्मीर शाक्त-धर्म का अनुयायी हराप्पा की संस्कृति के साथ-साथ हो रहा है। शाक्त संप्रदाय की मान्यता हैं कि यह सारा ब्रह्माण्ड मात्र एक अपार सक्रिय-चेतना का प्रवाह है[11] (The entire Cosmic-universe is creative-conscious flow) श्री अभिनव गुप्त[12] ने अपने तंत्रालाक में इस अपार की महाशक्ति को द्वादशकाली के प्रतीक के रूप में इसका विभाजन 360° अंशो या डिग्रियों में आकर इसके स्वरूप का अपार वर्णन किया है जैसे: द्वादशकाली का स्वरूप 12 की गिनती है। प्रतिपद्य (एकं) से अमावस्या तक 15 की गिनती बनतो हैं और फिर प्रतिपद्य से पूर्णिमा तक 15 की गिनती बनती है इस प्रकार से 15 + 15 = 30 × 12 = 360° अंश, इस प्रकार हमारी पृथ्वी की अंश-रेखा बनती है। यही द्वादशकाली प्रथमतः सृष्टि (creation) स्थिति (Preservation) और संहार (Distruction) करती रहती है, (क) I सृष्टि + सृष्टि, II सृष्टि + स्थिति, III सृष्टि + संहार (ख) I स्थिति + सृष्टि, II स्थिति + स्थिति, III स्थिति + संहार।

---

10 कल्हण : राजतरंगिणी 1.72, 11 शिवदृष्टि-17.
12 अभिनवगुप्तपाद : तंत्रलोक, चौथा आह्निक.

ग) I संहार + संहार, II सहार+सृष्टि, III संहार+स्थिति। इस प्रकार से काल-चक्र का बनना और बिगड़ना निरन्तर चलता रहता है। कश्मीर का प्राचीनतम धर्म इसी दर्शन पर आधारित है। जो कलान्तर में वैदिक धर्म के साथ मिलकर एक नये स्वरूप में उभर आया।

शारिका पर्वत पर अवस्थित चक्रेश्वरी महायंत्र का सिद्धपीठ ब्रह्माण्ड - व्यापी शक्ति (Cosmic - universal energy) का एक स्वयंभूः (Automatic) स्वरूप है। इस महाशक्ति पीठ के चारों ओर आठ भैरवों का निवास है। भैरव का सामान्य अर्थ है :- "भ" भरण (सृष्टि या creation) "र" रमण (स्थिति या Preservation) और "व" वमन (सहार या Destruction)। भरवों की संख्या आठ हैं, इस का तात्पर्य है: पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर तथा चार कोण, जैसे पूर्वोत्तर कोण, पश्चिमोत्तर कोण, वगैरा। इस तरह इनकी गिनती आठ बनती है। इन आठों भैरवों में पूर्णराज भरव सदा चक्रेश्वरी महायंत्र के सामने रहकर लगातार प्रवाहित - जल से अभिषेक करता रहता है। चक्रेश्वरी महायत्र के बायें तरफ दक्षिण दिशा में काल शक्ति महाकाली का निवास रहता है और उत्तर में महायंत्र के दाये तरफ शारिका अर्थात विकास और समृद्धि देवी का निवास रहता है और पूर्व में सिद्धलक्ष्मी का निवास है। शीतला आदि देवियाँ भी पीठ के आस पास रहती है[13]। चक्रेश्वरी यंत्र के पास दक्षिण के द्वार पर गणनायक

13 यामिनी तंत्र.

गणपति का वास होता है और उत्तर के आस-पास वामदेव या वामकेश्वर का स्थान होता है। चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ का मुख पश्चिम की तरह बना रहता हे क्योंकि हमारी पृथ्वी माता भी अपने दैनिक शक्ति प्रवाह को अपने अक्ष (Axis) पर पश्चिम से पूर्व की ओर परिक्रमा (Rotation) करती है। इसी परिक्रमा को कश्मीर के तांत्रिक क्रम-स्तोत्र में अस्तोदित (Rotation) का नामकरण दिया गया है। शाक्त-तन्त्र शास्त्र के आधार पर जहाँ भी इस प्रकार का चक्रेश्वरी महायंत्र होता है उस प्रदेश में आंशिक शक्तियों या भगवतियों का स्थायी आवास आवश्यक होता है। जसे चण्डी, दुर्गा, उमा, राज्ञा बाला, त्रिपुरा, भुवनेश्वरी, सरवस्ती, भद्रकाली, ज्वाला, भर्ग शिखा तथा त्रिसन्ध्या भगवती आदि। यामिनी तंत्र के आधार पर कश्मीर में इन सब ही शक्तियों का भव्य निवास है यही कारण है समूचे भारत में "चक्रेश्वरी महा श्री यंत्र" मात्र कश्मीर में ही है। महाकवि बिल्हण ने 'विक्रमाङ्कदेव चरित' में कश्मीर के प्रद्युम्नपीठ के चक्रेश्वरी महा श्री यंत्र को इन शब्दों में अपनी भावना प्रकट की है "यत् प्रद्युम्नक्षितिधरनिभादुत्तमाङ्गं बिभर्ति"[14] (शारिका पर्वत का प्रद्युम्नपीठ महायंत्र गर्व से सिर उठाये हुए है)

यामिनी तंत्र के आधार पर चक्रेश्वरी महायत्र के पादतल (bottom) में पूर्व और पश्चिम की दिशाओं में निरन्तर जल कुण्ड का प्रवाह होना आवश्यक है। शारिका

14 बिल्हण : बिक्रमाङ्कदेव चरित, सर्ग 18, 15, (10th century A. D.)

पर्वत के पश्चिम में पूर्णराज भैरव का जल-कुण्ड है और पूर्व में पुष्कर बल (पोखरी बल) का जल कुण्ड है [कश्मीरी भाषा में जहां भी पानी या पानी का प्रवाह होता है, वहां बल साथ जुडा रहता है जेसे देवीबल, यारबल, आगबल हजरत बल आदि]

पौराणिक कथा के आधार पर मां शारिका (मैना, कश्मीरी हॉर) का स्वरूप धारण करके अपनी चोंच से मेरु पहाड़ के एक बड खण्ड को उठाकर उस भयंकर राक्षस के उपर फेंका जिसके फलस्वरूप वह राक्षस वही नीचे दबकर मर गया। शारिका महात्म्य और सोमदेव के कथा सरित सागर में इस प्रकार की कथाएं मिलती है। नीलमत पुराण (200 B C.) में शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी महाश्रीयंत्र का ऐतिहासिक साक्ष्य इस प्रकार से मिलता हैं:-

आषाढ नवमी चैव यशोविजयकांक्षमि।
पूजनीया महाशक्ति चक्रेशयंत्र वासिनी॥ १७

[यश और विजय की कांक्षा रखने वाले मनुष्यों को आषाढ शुक्लपक्ष नवमी (9th day of Bright fort night of Ashadha) को चक्रेश्वरी महायंत्र की पूजा करनी चाहिए]

नीलमत पुरान से लेकर कश्मीर के सब ही संस्कृत इतिहासकारों ने शारिका पर्वत और चक्रेश्वरी महायंत्र का साक्ष्य प्रस्तुत किया है। इस में कल्हण, जोनराज, श्रीवर और शुक विशेष उल्लेखनीय है। प्रवरसेन द्वितीय के समय कल्हण लिखते हैं:-

---

15 शारिका महात्म्य. 16 सोमदेव : कथासरित सागर 73, 109.
17 नीलमत पुराण.

"श्री पर्वते पाशुपतव्रतिवे षस्तमागतम्"[18] ॥ [उसी समय श्री पर्वत अर्थात् शारिका पर्वत के निवासी तथा पाशुपत मत के व्रत के व्रती अश्वपाद नाम के सिद्ध ने अपने मेहमान राजपुत्र प्रवरसेन को भोजन के लिए कन्दमूल देते हुए इस प्रकार कहा]

'श्री पर्वत' शारिका पर्वत का दूसरा नाम है, जिसका संबन्द महाश्रीयंत्र से है। यहां इस बात का संकेत देना आवश्यक बनता है कि मुगल सम्राट अकबर द्वारा बनवाई गई बड़ी दीवार[19] या कलाई से पहले देवी आँगन का इलाका "सिद्धगिरि पाद"[20] तक फैला था। 'सिद्धगिरि' स्थान वाचक नाम भाषा के अपभ्रंश के कारण आज 'सज़गँरी' मोहल्ला है। जहाँ पर पूर्णराज भैरव का मन्दिर और अमृत-कुण्ड (चश्मा) है। देवी आँगन और सज़गरी मोहल्ले के बीच का इलाका आजकल 'हवल' कहलाता है। शक्तितंत्र के आधार पर इसका प्राचीन नाम "शवर"[21] था जो आज 'हवल' कहलाता है। शवर शब्द का सवन्ध पाशुपत से है। अतः हवल का इलाका पाशुपत संप्रदाय का एक पावन तीर्थ सगम रहा है। पंचस्तवी में इसका साक्ष्य इस प्रकार से

---

18 कल्हण : राजतरंगिणी 3 267.

19 अबुल फजल :- अकबर नामा 1084-85.

20 कल्हण : राजतरंगिणी 3 378 [कश्मीरी भाषा में 'द' का परिवर्तन 'ज' में हुआ करता जैसे संस्कृत सिद्धकथा (सीधी बात) किन्तु कश्मीरी 'स्येजकथ' (सीधी बात)]

21 सस्कृत में 'शवर' का अर्थ शिकारी। कश्मीरी अपभ्रंश में संस्कृत भाषा की 'श' ध्वनि 'ह' में बदलती और 'र' 'ध्वनि' 'ल' में बदलती है। इस प्रकार सस्कृत 'शवर' 'हवल' में उभर आया है।

मिलता है :- "शिवामन्वग्यान्तीम् शवरमहमन्वेमि शवरीम्"[22] [शिकारी रूप शिव के पीछे-पीछे चलती हुई—शिकारिनी का रूप धारण किए हुए शिव शक्ति स्वरूप माँ भगवती को बार बार प्रणाम करता हूं] कश्मीर के महाराजा रणादित्य के राजकाल का वर्णन करते हुए कल्हण कहते है :-

रणारम्भास्वामिदेवौ दम्पतिभ्यां व्यधीयत्।
मठः पाशुपताभ्यां च ताभ्यां प्रधुम्नमूर्धनि[23] !!

[इस प्रकार रणादित्य और उसकी महारानी ने रणारम्भा स्वामी तथा रणारम्भा देव नाम के दो मन्दिर बनवाये और पाशुपत संप्रदाय के साधकों के लिए प्रधुम्न शिखर पर एक मठ का निर्माण किया]

चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ का प्राचीनतम नाम 'प्रधुम्न - पीठ' रहा है। जैसे "प्रधुम्नपीठे स्थिता"[24] (प्रधुम्नपीठ पर ठहरी हुई)। पचस्तवी में भी चक्रेश्वरी शक्तिपीठ का नाम "प्रधुम्नसीम्नि" ही मिलता है[25]। कई टीकाकार भ्रम के कारण 'प्रधुम्न' का अर्थ कामदेव या भगवान श्री कृष्ण के पोते अनिरुद्ध से जोड़ते है जो सरासर गलत है क्योंकि शाक्तमत श्री कृष्ण से भी प्राचीन रहा है। इस तथ्य को गीता जी में भगवान श्री कृष्ण स्वयं "मम योनि महत्ब्रह्म" (मेरी शाक्त योनि ही विशाल ब्रह्म है) कहकर स्वीकारते है। वास्तव में संस्कृत भाषा में 'धुम्नम' का अर्थ है— शक्ति, चेतना, सत्ता या बहूमूल्य सपत्ति (Energy, Strength,

22 पंचस्तवी : सकलजननीस्तवः, स्तव 55.
23 कल्हण : राजतरंगिणी 3.460.
25 पंचस्तवी : चर्चास्तव 2.14
24 शक्तितंत्र.

power valuble Property) "द्युम्न" के आगे का 'प्र' उपसर्ग (Preflex) है। संस्कृत में 'प्र' का प्रयोग उत्कर्ष (Exalation) के लिए होता है जैसे :- ताप (आंच) प्र+ ताप=प्रताप (विशेष आंच) इस प्रकार से 'प्रद्युम्न' का अर्थ है "ब्रह्माण्ड व्यापी अपार चेतना" Infinite casmic conscious enegrgy)। यह एक अद्‌भुत आश्चर्य का विषय है कि कश्मीर के इतिहासकारों ने शक्ति चक्र चक्रेश्वरी सिद्धपीठ का नाम 'प्रद्युम्न' ही प्रस्तुत किया है। कल्हण[26] ने प्रद्युम्न-मूर्धनि तथा प्रद्युम्नपीठ, जोनराज[27] ने प्रद्युम्नाद्रि तथा प्रद्युम्न-गिरि, श्रीवर ने प्रद्युम्नशिखर[28]। सोमदेव ने भी अपने कथासरित[29] सागर में शारिका पर्वत के लिए प्रद्युम्न पीठ का ही नाम दिया है। जोनराज सुलतान बडशाह के दरबारी इतिहासकार रहे है (1420 59 A.D.) उनका कहना है कि सुलतान बडशाह ने प्रद्युम्न पीठ की तलहटी में ही अपने नये नगर का निर्माण करना चाहा। जोनराज के कहने का तात्पर्य यह कि सुलतान बडशाह ने शारिका पर्वत के प्रद्युम्नपीठ की छात्र छाया में अपने नये नगर का निर्माण करना चाहा[30]।

कश्मीर के शाक्त सप्रदाय (cult) का सीधा संबन्ध विनष्ट हराप्पा की संस्कृति से है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण

26 कल्हण : राजतरंगिणी 3.460, 7.1616
27 जोनराज : राजतरंगिणी–589
28 श्रीवर : जैनराजतरंगिणी–1.7.104; 2.88
29 सोमदेव : कथासरित सागर 73,109.
30 जोनराज : राजतरंगिणी - 589.

हेरत (शिवरात्रि) के पर्व पर पूजा जाने वाला सन्प-पोतल (स्थाणु-पुत्तल) है क्योंकि हराप्पा की खुदाई में भी पक्की मिट्टी के 'सन्यपुतल' पर्व 'सन्यवारी' आदि वडी तेदाद में मिले है। यह एक स्वीकृत तथ्य हैं कि मोहन-जो-दारो और हराप्पा के लोग शिव और देवी पूजा के उपासक कश्मीरियों की तरह ही रहे है। इस कारण हेरत, हार मण्डल, हार-गिन्दून और हांर (मैना) आदि उनके ही धार्मिक उत्सव रहे है और इस प्रकार हराप्प से कश्मीर तक एक ही धार्मिक संस्कृति के लोग आज से 5000 वर्ष पहले रहा करते थे।

अन्त में चक्रेश्वरी के महाश्रीयंत्र के बारे में कुछ कहना आवश्यक बनता है। चक्रेश्वरी महापीठ शिला के रूप में विधमान है और शिला पर विभिन्न प्रकार के त्रिकोण, पञ्चकोण, षट्कोण, अष्टकोण, दशकोण, द्वादशकोण, तथा षोडशकोण गोलाकार वलयों की तीन जोड़ियां इसके अतिरिक्त दक्षिण में गणेश जी का सिर, तथा तीन स्थानों पर मैना (हॉर) की आकृतियां है। इसके अतिरिक्त बीच-बीच में मोहन-जो-दारो के आकार के अक्षर और ब्राह्मी लिपि के अक्षर और वर्ण उकेरे या खुदे (Carved) हुए मिलते है। आश्चर्य तो इस बात का है कि प्रत्येक खींची हुई रेखा एक तो स्पष्ट और सीधी खींची हुई है और प्रत्येक बिन्दु पर कोण का निर्माण करती है। एक व्यवस्थित श्रीयंत्र, जेसा कि बंगाल आसाम, केरल कर्णाटक और मध्य भारत के शाक्त पीठों में मिलता है, कश्मीर के प्रद्युम्नपीठ का चक्रेश्वरी यंत्र उनसे यथार्थ में भिन्न है। हमे संयम से इस बात को नये सिरे से समझना है कि कहीं किसी अन्धकार के युग में हमारी अतीत की

परंपरा लुप्त हुई है। वर्तमान प्रधुम्नपीठ के चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ को हम शारिका भगवती का स्थान समझ बैठे है किन्तु सबसे उलझा हुआ प्रश्न यह उभर आता है कि एक ही पीठ पर दो शारिकाओं का अस्तित्व सम्भव नही है। सही बात तो यह है कि प्रघुम्नसिद्ध पीठ से उत्तर कर जब हम उत्तर दिशा की ओर परिक्रमा के लिए आगे की ओर बढते है तो सामने दायें तरफ पहाड़ की तलहटी के ऊपर 'हांरी' भगवती का पावन स्थान मिलता है। कश्मीरी भाषा में 'श' ध्वनि में प्राय: बदलती है इस भाषावैज्ञानिक (Lenguistics) नियम के आधार पर संस्कृत 'शारी' या 'शारिका' का स्वरूप हारी या हॉरी या हारिका हुआ है। अतः प्रथमतः हमे यह समझना है कि प्रधुम्नपीठ का स्थान चक्रेश्वरी यंत्र का स्थान है और शारिका का स्थान 'हॉरी' का स्थान है। वास्तव में अगर हम फिर से इस बात को समझे कि पर्वत का नाम शारिका पर्वत है और वह इतिहास से स्वीकृत भी है रहा प्रश्न शाक्तपीठ चक्रश्वर यंत्र का, वह स्थान किसी भी देवी से सबन्धित न होकर केवल प्रधुम्नपीठ है और प्रधुम्न का अर्थ है ब्रह्माण्ड की अपार सक्रिय-चेतना शक्ति और चक्रश्वरी पीठ इसी का शक्ति स्रोत है।

सन्तों की चरण धूलि
डा० त्रिलोकी नाथ गंजू
82 सत्थू श्रीनगर।

होराष्टमी सप्तर्षिशुभ संवत् 5059
श्रीनगर - कश्मीर (भारत)

2006-5082
5059 → 1983

वर्ण क्रमानुसार भजन सूची

अ

भजन	पृष्ठ		लीला	रचयिता	
८४	136	1	अज़ वाति बूज़ुम मोल स्योन	—स्व० श्री ज़िन्दा कौल	
५६	99	2	अज़ सा'ञ विनती सत्गुरु साधै	— ,, ,, कृष्ण दास	1
५३	94	3	आपा'र्य यपा'र्य चो.पार्य पानस	— ,, ,, परमानन्द जी	1
११६	176	4	अ'रिञि रंग गोम श्रावण. हिये	— ,, श्रीमती अरञिमाल	
३५	57	5	अन्त.काल.चि ज़ाल.छम नमि हाल निशि	— स्व० श्री कृष्ण दास	2

आ

भजन	पृष्ठ		लीला	रचयिता	
१२१	182	6	आम.च् मनस र.च वासना	... ,, ,, ज़िन्दा कौल	
७७	129	7	आरुत प्रारान छुस बरतले	...मा० जगन्नाथ आली	

इ

भजन	पृष्ठ		लीला	रचयिता	
३२	53	8	इत दित दर्शुन भस्माधार	...स्व० श्री कृष्ण दास	3
९९	155	9	इतना तो कर ले स्वामी (हिन्दी)	... ,, ,, ब्रह्मानन्द	2
३४	55	10	इमय पत. दिमय नाद	... ,, ,, कृष्ण दास	4
५९	103	11	इन्द्रिय द्वार ज़ा'नित सुज़ान	... ,, ,, बोन. काक	

भजन	पृष्ठ	लीला	रचयिता	
		उ		
४२	73	12 उत्तम भाव सहज़ यज्ञस	...स्व० श्री सहज़ानन्द	
६३	149	13 ओम परवुन हंस. ताजदार	... ,, ,, आफताब जी	
		ओ		
७८	131	14 ओस कस रूज़ित अन्दरी वैर	...मा० प्रेमनाथ जी 'प्रेमी'	
४६	88	15 क्याह सन. गोम तत मंवित सुखस (वाक्य)	...स्व० श्री टीका लाल	
		क		
४०	68	16 करा इयि म्य कुन गिंदुन दिमस चंदन हार...	,, ,, वासुदेव जी	
६७	153	17 कर सन. कुनुय बनि स.ति तस	...श्री नीलकंठ जी	
१११	169	18 कर सना ह्यथि ज़न्म यत हृदयस अदर श्री कृष्ण०	...स्व० श्री ज़िन्दा कौल	
३६	67	19 करसै सो.नि पोशन माल.	... ,, ,, वासुदेव जी	
८६	144	20 कमल रूपी च्रण चा'निथ रटोय शरण च्य आये—	,, ,, कृष्ण दास	5
४७	86	21 कलजुग नहीं करजुग है यह (हिन्दी)	—स्व० स्वामी रामतीर्थ जी	
६१	106	22 कस क्याह ज़ेनुन छु यमि ससा'री	स्व श्री लक्ष्मण जी	
६७	113	23 करुम म्य हे प्रभो ! मंगल	,, ,, ठाकुर जी	
१६	33	24 कृपा करत हरि हरै	,, ,, कृष्ण दास	6
३०	50	25 कृष्ण. छुक मज़ हनि हनि लो लो	,, ,,	

ग

१०३	158	26	गा'फिल म. बन पायस प्यतो	,, ,, ठाकुर जी	
७०	119	27	गोकुल हृदय म्योन तति चोन गुर्यवान (सामान्य)		
१२७	190	28	गोकुल हृदय म्योन तनि चोन गुर्यवान (मोक्त व्योल)	,,	
१	1	29	गो डच गणपत जिसय कुन कर नमस्कार	मा० शिव जी	

घ

७५	127	30	घन्योमुत छुम मनस चोन माव	मा० काशीनाथ जी	

च

१७	29	31	चानि बरतल रात्यं रा'च.य	स्व० श्रीमती अरणिमाल	

च़

१२	23	32	च़राच़र छुक परमेश्वरो	अज्ञात	
१२६	189	33	च़ाल. क्रम अशवे कोताह ब. च़ाल.लाल	स्व० श्री परमानन्द जी	5
३८	65	34	चि़त गोम शांत चोन प्रेम अमृत चोम	,, ,, कृष्ण दास	7
४५	79	35	चेतन स्वप्रकाश सर्वात्म ज्ञानी	,, ,, देव काक	
२४	41	36	चो.यिशीत लछ जन्म धा'रित चि़तामन देह०	,, ,, लछ. काक	

छ

५७	101	37	छुक मोक्ष दाता पान. च़.य	,, ,, कृष्ण दास	8

भजन	पृष्ठ		लीला	रचयिता	
			ज		
१०७	163	38	जाफ.यं पोशस छु लक्ष्मी अंग ता'य	...स्व० श्री कृष्ण दास	
			ज़		
६४	110	39	ज़न्मस इथ यति केंह छुन लारुन	...स्व० श्री परमानन्द जी	6
६०	105	40	ज़ाक नन्द. गोरिनि अक. नन्दनै	... ,,	7
८२	134	41	ज़ानखै कर जान फिदा'ई (गज़ल)	... ,, ,, उस्मान	
			त		
८३	148	42	तरवुन छु करनोव हक दित छु वनन	... ,, ,, ज़िन्दा कौल	
१०२	157	43	त्रि जगत् नाथ. परम्. अनन्दं	... ,, ,, ठाकुर जी	
			द		
१	147	44	दान मन सा'वित अथ धारनोवथम	... ,, ,, ज़िन्दा कौल	
२२	38	45	दितम दर्शुन म्य वर्षण तल.	...कलंदर श्री लस बाबा	
९२	148	46	दिल फो.लि दर्शन चाने	...मा प्रेमनाथ जी प्रेमी	
१०१	156	47	देवी चरण चा'निय भक्त स्वरण छिय	...स्व० श्री कृष्ण दास	10
१०६	162	48	देहकिस द्वारस ल यि ओपरावजि	.. ,, ,, चन्द्र काक	
८१	134	49	दौरि दुनिया सोरि आ'ख.र० (गज़ल)	...स्व० श्रीमती अरनिमाल	
			ध		
८८	142	50	धर्मुक वैर को.र ख'ति हा'रवनस.य	...स्व० श्री कृष्ण दास	11
[illegible]	155	51	[illegible] (हिन्दी)	...स्व० श्री ब्रह्मानन्द जी	

न

१२४	186	52	नाद बिन्दु परमानन्द.नन्द, लालै	...स्व० श्री कृष्ण दास	12
४४	77	53	निरलां वास दय वर्तन त्रिकाल	... ,, ,, बोन काक	

प

११३	171	54	परि पूरण छु नूर. मोरमुतये	... ,, ,, आफताब जी	
७४	125	55	पाद कमलन तल मा'जि म्य'ति वरतम	...श्री नीलकंठ जी	
४	8	56	पादि कमलन तल ब.आसै करनि चा'निय अस्तुति	...स्व० श्री विष्णु दास	1
११२	170	57	पा'नि पानस दितो वौ.नये	...स्व० श्री नन्दलाल जी त्राली	
१०	20	58	पानै बिहित पननिस वानस	...कलंदर श्री चिकन बाबा	
१२०	180	59	पानै म्य पान हा'वित आशायि धारना'वित	...स्व० श्री ज़िन्दा कौल	
२६	49	60	पांछ दोह यावन.नि श्रावण.नि सूरी	...कृष्ण दास	13
२१	37	61	पूर्ण पुरुषस सुरासुर वदनस	... ,, ,, परमानन्द जी	8
६	12	62	पो.त जूने मो.त वुछ.नोवुम	... ,, ,, आफताब जी	
५०	91	63	प्रये चाञे दयो नेरैं	... ,, ,, मकुंद राम	
७	13	64	प्रातः काल आव म्यति अनत गाश मति	... ,, ,, विष्णु दास	2
८०	133	65	प्राव कैवल्य हा केवलो	... ,, ,, ठाकुर जी	
७३	124	66	प्रेम पोश लाग शेरि तसंज़े	... ,, ,, परमानन्द जी	9

भजन	पृष्ठ		लीला	रचयिता	
			फ		
४१	69	67	फुलय ल'जिम सहज़किस संजीवनस	,, स्व० श्री लछ क क	
			ब		
२०	34	68	ब. तन मनै अर्पण बनै	,, ठाकुर जी	
१०५	150	69	बनुन आज़ाद जि यक निर्णय	,, विष्णु दास	3
१४	150	70	ब्यल ता'य मादल ब्यन. गुलाब पंपोश दस्ता'य	,, कृष्ण दास	14
४८	87	71	ब्यल पूज़ा कर निष्कल कल माला धरस.य	,, ,,	
२७	47	72	बन्द कोरनस ब. बाशे	,, ,,	
			भ		
६६	116	73	भक्त वत्सल मोनुक म्या'नि मनन.य	,, ,,	
६८	114	74	भगवान तमि काल कर म्य अनुग्रह	,, ज्ञनकाक तुफशी	
५४	95	75	भेद दृष्टी सा'व हार	,, कृष्ण दास	15
६८	154	76	भ्रम छु संसार शम त. ज़ीवो	,, श्री नीलकंठ जी	
			म		
१३८	196	77	मधु कैटभ मारनि युद्ध वेष धारवनि शुद्ध शांत दो.ध चूर गूर गूर करयो	स्व० श्री कृष्ण दास	16
३	7	78	मनि छुम मेलहा पननिस यारस	,, ,, वासुदेव जी	
११३	184	79	[illegible]	श्री नीलकंठ जी	
११७	176	80	मुझे राम से कोई मिलादे (हिन्दी)	,, अज्ञात	

७९	I3I	81	मेव. कनि मुख्त. वो.थ चन्दन बागस	,, स्व. श्री कृष्ण दास	I7
२६	45	82	मो कलाव मंज़ कैदखानै	,, ,,	
४६	83	83	म्य संतन हिश न छै शांती न शम दम	,, ,,	
			य		
१०९	I66	84	यस छु हटि वासुक तस छु जटि पोत्र	,, ,,	
८७	I40	85	यार सं.दे दादि दो दमुत दिल बहारस क्या करे	,, जिंदा कौल	
			र		
१०८	I65	86	रस पूर्ण परम सदा शिवह	,, परमानन्दजी कौल	I0
५८	I02	87	राधे श्याम हरि कृष्ण (हिन्दी)	,, कृष्ण दास	I8
५१	92	88	रामन सिद्ध क'र म्या'त्र मन. कामन	,, हलधर जी	
१८	30	89	राम लीला चा'त्रिय वदै	,, ठाकुर जी	
			ल		
१२५	I88	90	लथ ला'इथ संसा.स पत लारस ल'तियै	,, कृष्ण दास	I9
५२	93	91	लथि दारि ओ.परित सपद मावरयो	,, कलंदर श्री लस बाबा	
६५	III	92	ललवान लिरि हक ज़रि जेरि ग्रारि बोन.	,, स्व० श्री आफताब जी	
१६	28	93	लाल लगयो बाल भावस	,, आनन्द जी	

भजन	पृष्ठ		लीला	रचयिता	
			व		
१५	27	94	विनत बोजतम् च राधा-कृष्ण	...स्व० श्री कृष्ण दास	20
८३	135	95	वुछित गत चांघ देवागत	... ,, ,, जिंदा कौल	
७६	128	96	वलो श्याम लालो व. कोता इ चालै	...श्री नीलकंठ जी	
११४	173	97	वन्दयो मुख ब. पादन	—स्व० श्री प्रकाश राम	
			श		
६५	151	98	शरीर जोलनं अंमि मदन वारन (गजल)	— ,, ,, रहीम साहिब	
७२	124	99	शिव नाथस प्यठ सपज़क स'तिये	... ,, ,, कृष्ण दास	21
१२६	198	100	शिव शंकर भव भय हर	... ,, ,, गोविंद जी	
७१	122	101	शुभ मुख हाव म्यति अमृत चावतम	... ,, ,, परमानन्द जी	11
२३	39	102	श्याम सुन्दर जी लाल वना	... ,, ,, केशिव काक	
३७	61	103	श्याम सुन्दर बेह सुन्दर जाये	... ,, ,, कृष्ण दास	22
११०	168	104	श्री निराकार त्रिभुवन सारै	... ,, ,,	
१३	23	105	श्री राज राज़ेश्वरी आमति शरण छिय	... ,, ,,	
			स		
२	19	106	सखियव रूठुम हा'य रूठुम हा'य	...स्व० श्रीमती अरनिमाल	

१०	145	107	सन्यास बे परवायि मस्तानै	... ,, ,, जिंदा कौल	
११५	175	108	सिर्यि वुज़नोवुम चन्द्रम सोवुम	... ,, ,, कृष्ण दास	24
११	21	109	सुख शुभ दर्शन चाने	... ,, ,, आनन्द जी	
६६	112	110	सुन्दरो सो.न संदल गरै	... ,, ,, अज्ञाता	
४३	75	111	सो.कलि निष्कल द्रायि सो.कले	... स्व० श्री परमानन्द जी	12
५५	97	112	संकट कट अथ. रट दगालै	... ,, ,, कृष्ण दास	25
२	5	113	संसार सागरस सुम दित तर अपोर	... ,, ,, हलदर जी	
८५	136	114	स्मरण पनन दिचा'नम प्रेमुक निशान०	... ,, ,, ज़िन्दा कौल	
११८	177	115	स्मरणि चान्य पाप सा'रिय हा'री	... ,, ,, कृष्ण दास	26

ह

१२२	183	116	हतो जीवो तसं.ज थव कल	... श्री नीलकंठ जी	
८	14	117	हरि राम टाठि मित्रय म्यानि	... स्व० श्री राज काक	
११६	179	118	हिमाल पर्वतने वरि जायक	... ,, ,, कृष्ण दास	27
५	10	119	हे कृष्ण ! दया छयना गछन	... ,, ,, केशिव काक	
३१	52	120	हे दय ! बोज म्यानि लोल नाद	... ,, ,, विष्ण दास	4
३३	54	121	हे दय ! बोज़ कर्ण च्यय रुस्त कस ब. वनै ...	,,	5
१४	26	122	हे दयालु ! क्रुस ब. चंचल लो लो ...	,,	6

भजन	पृष्ठ		लीला		रचयिता	
२५	44	123	हे दयावान ! म्य ह्यु व चोर च्य कोताह प्रारे	...	स्व० श्री कृष्ण दास	28
६३	109	124	हे निरंजन ! कष्ट भजन	...	,, ,, ठाकुर जी	
१०४	159	125	हे प्रभु ! अज्ञान का'सित ज्ञान दिम विज्ञान दिम....		,, ,, कृष्ण दास	29
२८	48	126	हौश दिम लगयो पपोश पादन	...	,,	
३६	58	127	हो शान जीवो देह दो छु नशान	...	,, ,, लछ काक	

श्री गणेशाय नमः

आदि शक्ती हुन्दुय टोठ संतान।
महा गणपत जय जयकार॥

त्रि नेत्र धारी छुक च् एक दन्तो
डयकि छुय शूभान चन्द्रम तार
गज़ मुख बाल चन्द्र लम्भूदरो। महा०

सिज हंदि दात छुख च् विनायको
वल्लभा ह्यथ गगुर वाहन
दीवन हंदे चय सिद्धि दातो।
महा गणपत जय जयकार॥



नमः शिवाय

तारि छुस गोमुत तार दिम भवसर.
शंकर ईन्य आर म्योनुय॥

१ यावुन ह्यथ गोम यिथ प्योम बुजर
स्वप्न वथ ओस लुकचार म्योनुय
न्यथ हाव शिव रूप मंज चिथ मन्दिर.। शंकर०

२ माया ज़ाल वठ रठ चठ अकि दर.
लबि कनि थव परिवार म्योनुय
अन्तर मुख रोज़ सुख भर. दुःख हर. शंकर०

३ वैराग्य मछ़ जोर सु.ति त्याग खंजर.
देह अभिमान मद मार म्योनुय
जिन्द थव वांसि सू.ति सेज़र त. पजर.। शंकर०

४ वासनायि म्यानि मंज बस प्रकृति पर.
पछ़ि सुस्त थव आचा़र म्योनुय
लछ़ि प्यठ प्योमुत लुस करतम खर.। शंकर०

५ क्या कर सारे वांसि कोर म्य गर. गर.
कस अकिस वोत उपकार म्योनुय
नशनिक वेल. पशनुय व्ययि अरसर.। शंकर०

६ वासनायि अरखोरस करनाव अ र.
चन्दुन कर दिवदार म्योनुय
यारि ह्यु सञ्ज कर अद वन्दस दंर.। शंकर०

७ अन्न दात जानि मंज ख्यन चन उदर
सु आहा़र पूर्ण बेचा़र म्योनुय
असत्वुथ च्य कुन कर शांती श्रोक पर.। शंकर०

८ सास ब-ज़ उलट रायि कोह जन गयि खर.
वास कचि ह्यु विस्तार म्योनुय
दय छुक त लय कर निर्णय-नय स्वर.। शंकर०

९ प्राव जन्मचि खंडिथय आवि गयि खर.
अति क्या पकि घाटजार म्योनुय
थोद तुल त. पथर प्योमुत प्यठ थर.। शंकर०

१० प्रारब्ध फल बूगनुय छुम त. क्या कर.
पोत फेरनस छुन वार म्योनुय
प्रानि वैर मंज़ कड नवि धैर्य सू.ति दर. । शंकर०

११ दोह आयि छोय दित अन्दर त न्यब्र.
अज़ ननि कुस आसि यार म्योनुय
परद थव कोंग पोश ह्रद क्यथ गछ़ भर. । शंकर०

१२ छयोट त. श्रूच़ मत. वुछत. अछत. म्योनुय घर.
शिव लूक ह्यु बनि द्वार म्योनुय
यमदूत खोच़न सू.ति अभय बर. । शंकर०

१३ छि़ट वासना म्यानि छल निर्मल सर.
काम क्रोध चमार मार म्योनुय
ब्यल पत.र सू.ति वातिज जन वर हर. । शंकर

१४ विचित्र पूज़ च्यत नेत्र कमल कर.
इन्द्रिय शुत्र रूग हार म्योनुय
ब्यल पत.र सू.ति प्रधान करनेश्वर. । शंकर०

१५ पाद थकि पकि. पकि. नाद करत. अन्दर.
खलवत बनि दरबार म्योनुय
जगतचि रक्षायि हंज़ विन्था कर. । शंकर०

१६ उपकार सू.ति पननुय छुक च. वुपर
रचि़ वति लगि रोज़गार म्योनुय
दात नाव कडनावतम ज़गत ईश्वर. । शंकर०

१७ कम कार करनि आस गम कास दम मर.
यार छा यि भ्रम संसार म्योनुय
ही अगम अपार ही दिग्मबर हर.। शंकर०

१८ लूक हंज़ि ज़्यवि परनाव परात परात
परनय महिमना - पार म्योनुय
पुष्प दन्त आचारि बन नन्दकीश्वर। शंकर०

१९ सत संग रंग दिम राय मुख भंग पर.
ध्यान सू.ति प्राण सन्दार म्योनुय
यति तति शूभ अन युथ न. वति प्यठ मर.। शंकर०

२० अज्ञान काठ ज़ालित भस्माधर
तीज़ रूप थव आकार म्योनुय
देह कतिरिस दुह कास भास भास्कर.। शंकर०

२१ चित. पीडा कास नत. यति क्या कर.
मृत विज़ि छांड हितकार म्योनुय
ही इष्टदीव भ्रष्ट प्रकृत थव म. ज़र.। शंकर०

२२ पाप ज़ाल अग्नि नेत्र सू. ति जटादर.
चय छुक व्यग्न. हस्तार म्योनुय
न्यग्वरथ दिम अछि क्याज़ि लगनम धर.। शंकर०

२३ शुरि त. बा'च बुछ बुछ ओश त्रावान जर.
कुस वदुन स्यद करि कार म्योनुय
यिन त्युथ मर. ध्यान. निश गछ. व्यसमरः। शंकर०

२४ वांसि हन्दि करतूत ग्रोंठकनि गयि खर.
मृत विज़ि ती निवार म्योनुय
मन निम परम सुख दिम परमेश्वर। शंकर०

२५ हे महेश ज़गत ईश हे विशेष ईश्वर.
छति कीश बोज़ ज़ार पार म्योनुय
दीश. दीश. फिर म वातनाव पननुय घर.। शंकर०

२६ मोह मस चथ छुस दूश लद फिर म्य सुर.
आशतोष कँछ.ा यार म्योनुय
कृष्णस मोक्ष प्राव नाव अमरीश्वर.। शंकर०



फुल. वनि सोन्त. छुय म्योन सालो।
लालो अज़ वलो माल्युन म्योन॥

१ आरवल आर क'च् गयि. कमि हालो
च़ालि च़ालि ओश दारि हारान छस
यच् काल गव वुन्य प्रार कूत कालो। लालो०

२ यमबरज़ल लजमच् भुमबरनि जालो
च्याल ह्यथ मसवल प्रारान छस
दूरिरुक दाग दिलस ह्यथ छुयमु लालो। लालो०

३ माय चानि सुलि विलि फोज़ि ही मालो
ल'यि लोस इ.य कर दिय दर्शुन
द्रिय चानि छम वुन्य यूत नों ब. च़ालो। लालो०

४ रोश रोश करहै पोषन मालो
रोशि मति गमोय ना गोशन म्योन
रोशि मा पोष.नूल दोह गछि बोबालो। लालो०

५ आदनुक याद पाव बाद. मो डालो
नाद लोय कुकिलव गीविन्द गू
आदन बाजि म्यानि त्राव शुरि खयालो। लालो०

६ बा'लि वन्त. इयना ना'लि छस मालो
वा'लि छिस कनन्य ग्राय मारान
का'लि मा रा.वव कस क्या मलालो। लालो०

७ साकया प्याल चाव माला मालो
युथ न.स. बाक़ी रोज़ी ग्राव
मस चथ रस. रस. बन. मुतवालो। लालो०

८ सास मज खास सुय रटहोन नालो
सास मलि सन्यास मेलि गोपालो
भासकर सास छुय ना'ली नालो। लालो०



१ म्य सोंगो पान. दर्शुन चोन बन्यमना शारिका दीवी
मनस मंज राग चोनुय वनि सन्यमना शारिका दीवी।

२ म्य पियिनः माज्य पायस मन, ब. करहय चात्र आराघन
म्य अन्दरी चानि लोलुक श्रेह, गन्यमना शारिका दीवी।

३ यि दिल म्योन ज़न छु क्रेन्खा अख,
लगित क्रेहञर छु अथ प्यठ सख
अक्षर अथ पन.नि भक्ति हुन्द ख.नखना शारिका दीवी ।

४ ब. छुसना क्रूर अज्ञा'नी, स्यठा मुरखा त. अभिमानी
म्य माता गाश ज्ञानुक सु'य अन्यमना शारिका दीवी ।

५ लगान कोताह मधुर दुनिया, यि खा'ली आसवुन स्वप्ना
म्य सोरुय सिर ज़्यनुक मरनुक न. न्यमना शारिका दीवी ।

६ दिवान भ्रम आय मोह माया, दया करिना महा माया
म्य संसारच यि मोह माया छन्यमना शारिका दीवी ।

७ ब. प्रेमी छुस तसुन्द अभिलाश, करिम ना माज़्य पूरण आश
उपाया भव.सरस तरनुक करिमना शारिका दीवी ।



होश. पोश. नूल थव कन
वाणी वन हारि लोलो ॥

१ राधा कृष्ण कृष्ण वन लोलनि अशि दारि लोलो
रंग किञ तस ह्यु बन वाणी०

२ गु'ड कर मन बिंदराबन अद. नेर ब'रि त. दारि लोलो
श्याम रूप वुछ हन हन वाणी०

३ चाव वीद कामदीनन थन भखचि हंज़ि चड़वारि लोलो
चथ बनि आनन्द गण वाणी०

४ तती व्रच गूपियन कुरमुत छु मन तारि लोलो
व्यापक वासुदीवन वाणी॰

५ प्रेम. सू.त्य कर मन बिन्द्रा बन नाद लायस प्यार लोलो
भक्ति भाव. अख बनि दुंन वाणी॰

६ बुज जसुदा छ.स ललवन मूह पूतनायि मारि लोलो
यछ बबि दुध चन सतज़न वाणी॰

७ भक्ती मंज बन अरज़न रथ. बान सुय लारि लोलो
किसि प्यठ छुस गोवर्धन वाणी॰

८ मन. वाजे कृष्ण नाव खन धीर. अल्मास तारि लोलो
गलि पानय क्रूध. दर्योधन वाणी॰

९ हिमसाये कंसस मारन सूद्म दारे तलवारि लोलो
माझि यइम राज तस ह्यु ज़न वाणी॰

१० खटय् खटय् छु नोन बासन अंदरिमि छपि छारि लोलो
चित् वुज़मल. घट कासन वाणी॰

११ वृन्दा वनकुय वन मन म्योन उच्चारि लोलो
सब्ज ज़न लगि चरणन वाणी॰

१२ दास यति राम खेलन व्यास नारद त. लारि लोलो
बोलनावुन शुकदीव ज़न वाणी॰

३१ यूगियव भूगिथ भूगन दोपहस ब्रह्मचारि लोलो
निर्मल निष्कल निरगुण वाणी॰

१४ कृष्णस टोठ विष्णारपन नत. यति क्या लारि लोलो
जान्य मंज तस ति सोहम अन वाणी॰

ॐ महाराज्ञायै नमः

व्यज्ञान मूर्ति राज्ञा ज्योती सुज्ञान आश्राण च्य प्रज्ञावान
सत् चित् आनन्द गण उदैती कोटी सूर्यन हुंद च्य प्रकाश
सुराट भाव. किन्य फैले मची विराट रूपस बाह्य अंतर
सम्राट शक्ति सम्वित ज्योति तत् त्वमसि पद चोन विकास
पूर्णा पूर्ण. तीत सम्वित ज्योति भेदा भेद पर शिवाक्षर
खन्डाखंड अवतरणन भगवती, सत् सौ प्रकाश



अन अपीक्षत भावनावतम पूर्णानन्द स्य मनस
टोठि तस विन केंह न ज़ानुन गव ज़ि टोठयोम दय मनस।

१ पांन्य पानय ज़ान ज़ानिहे मानि बूज बुज़मानि हे
क्युथ त. क्या, कति तति व्यपान कव. नवि हे त.प्राणि हे
बोज़िनय बूजिथ त. रोजि नय कूच् वाय् वन्य नय मनस
टोठ तस विन्य केंह न. ज़ानुन, गव ज़ि टोठयोम दय मनस

२ भोग भुक्ता क्षेत्र क्षेत्रज्ञ शिव शक्त. ई वुनुय
शम त. दम तय भाव भावना भक्त मुक्त ई वुनुय
चक्रवरतस त. कंगालस वयि वुंन ई वय मनस टोठ०

३ ब्रह्म निर्वाण शब्द प्रकाश अन्दर. न्यबर. अक्षरी
हुंल त. स्युद शुज़रिथ श्रोचव सू.त्य वार पाठ्यन् वाश रुस्त
दगि. लोलच लगि हे क्या रगि रगि ई पै मनस टोठ०

४ जग छु संग्रामा त. मन छुय राज. अमिकुय ज़ेन वन्य
वासना न्यरवासना ह्यत अप्रमानस मेनवुन
छुन. पु त फेरवुन वन. हा कोताह ज़ि लय मनस टोठ०

५ आईनस मंज वुछ्त केंह मा वुछ वुनिसीय रुस्तुय
आन. मंज मा मु ख छु खटान, कांह ति अनिसुय रुस्तुय
आस मो उ न कासती, गव खास कासिन खै मनस टोठ०

६ मन व्यचारव तय मदारव सू.त्य अनुन होश. सय
मु त लु त लु त होश अनुन पज़ि तिय मनोशसी
नत. क्या सुय पलज वुनुय, आसि ख्यन. ख्यन प्रिय मनस टोठ

७ शल्प शल्पत सोर कलपित कलप. कल्पांतन लगुन
पजि दु य त्रावनि छु प्रावुण युस इ रावन अथि युन
व्यापि कुस तस व्यापकस पुरुषार्थ पोश हा बुय मनस टोठ०

८ भ्रांत तै भ्रम ज़ोनमुत संसार प्रान्यव ई वुनुख
सोंथ हरुद पनुन त. परुद दफत. तिम इम मा च़ छुख
वोन्त छा यथ भवसरस रंग रंग छिर चोय-ई मनस टोठ०

९ साध सन्त छिन. अंत ज़ानान आदि यस छुन. आसवुन
श्रुच़ हन्दे आगन्यायि सू.त्यन एक छु अनेक भासवन
सारिनुय सुय ज़ाननुय छुय करत. ई. निरनय मनस टोठ०

१० पान. छुन. करता अकरता भाव अभावै बुरमुतुय
राव. राविथ पान पन.नुय होश. बुरमुत परमुतुय
त्यलि पप्यस करमच यि क्रय, ख्यति यलि चलि रै मनस टोठ०

११ आस परमानन्द प्रावित, परमानन्द ब्युन म. रोज़
स रिसुय मंज़ सारिसुय ह्यु पार सुय वात नुन म. रोज़
ई.य चेतन रूफ प्राविथ. कति विखेफ ओर लै मनस टोठ०

१ भूल बाल. बालकन सू. ति खेलनावतम
बालक अवस्था प्रावनावतम
ज़ान करनाव तम पान परज़ नाव तम
सुधि वान्यन पाठ्य् हाव तम रूप ।।

२ कठिने भवसर छांठ वायनावतम
मुह पोज़ त्रोतुम हटिस.य ताज़
लटिस.य वृषभस थप करनाव तम सुधि०

३ थज़रै प्यठ-अख नजरा त्रावतम
शेशरम नाग म्य थावतम नेब
वनि इत. अनिरकि सनिरै म. रावतम सुधि०

४ ब्रह्मण ज़न्म दिथ मत. मन्दछावतम
नभ प्यठ बुन मत. दावतम दभ
अमर नाथ अमर बनाव तम सुधि०

५ दासन हुन्द दासा गंज़राव तम
मत मशि रावतम पननी ज़ान
यति छख पाने तोल वात नावतम सुधि०

६ अज़पा जप यज्ञ ज्योत प्रज़लावतम
होद शीश ज़न मुचरावतम म्य
ही महेश ह्रति केश मत दिशरावतम सुधि०

७ सत् चित् आनन्द अमृत चावतम
नित्य बास नावतम सोहम सू
ॐ शेव शम्भू शब्द शुभरावतम सुधि०

८ मुह मायायि सू.ति मत. तंत्रलाव तम
सत्‌ची कथ पावनाव तम याद
चित् कुयि चेनुन निथ चेन. नावतम सुधि०

९ सत् के निर्णय पयि पक. नावतम
दय पनने नय हावतम वथ
नाव छुम कृष्ण शिव भाव बढरावतम सुधि०



आशि चानि बरतल आस अनाथ।
दास कत्र. छुस उदास अनाथ॥

१ त्रय. ताप. दुःखमुत प्रेमुक स्नेह,
नेह छुम न. च्यय व्यन ख्यम ना वेह
त्रेश. त्रेश. जन्म. जन्म. पिपास अनाथ दास०

२ इन्द्रिय हन्दरा विधि छुम मन
सन्दरिथ लोल रेह छुम न. हिवान
दुदमुत कमि. क.इ कास. अनाथ दास०

३ होन्यन अथि व्योमुत शाल जन
हाचि सू.त्य रूदुम न. नम न्याल नुंन
काल गुंफि सह सनदि त्रास अनाथ दास०

४ सास क्रूह छंडिथ आशावान
अथ छुन फीर्य फीर्य यूर्य. इवान
लब. तव. देव. बरन्यास अनाथ दास०

५ होशव बो वूनचमुत रोशन छुइ
वन. क्या हाल म्योन. रोशन छुइ
प्योमुत च्यानि श्राम. खास अनाथ दास॰

६ पजि यी ती करनावत. म्य
ज्यथ ज्यथ मत. मरनावत. म्य
परमानन्द यूग अभ्यास अनाथ दास॰

– ० –

परम. धामुक म्य चावतम दामो
सत्गुर. मोक्षदायक रामो ॥

१ त्रय. ताप कामनायि आमतावै
व्यसरावान छुम भक्ति भावै
फिरवान त्रशना गाम. गामो सत्गुर॰

२ गा'लिथ काम क्रोध ज़ा'लिथ तम
सार द्राव पथकुन कुनुय सोहम
अनुग्रह. चानि सू.त्य गाश आमो सत्गुर॰

३ ज़िंद युस मरि तस क्याह् करि काल
रोज़्यस न. गरि गरि मरनच ज़ाल
प्रेम अमृत चावतम दामो सत्गुर॰

४ मन तय प्राण युस करि अरपण
सन्मुख सुय बुछि नारायण
इथ. पाठ्य लछमणन बुछ रामो सत्गुर॰

५ तारि भवसागरस चोनुय नाव
नाव तरि त्यलि यलि गलि वरज वाव
फटि न. जि रोज़्यस न. पत. पामो सत्गुर०

६ सूरुम श्रम च्य पुशरोवुम पान
निर्वाणकुय दिम ज्ञान विज्ञान
निर्मल निष्कल निष्कामो सत्गुर०

७ मूह त.रि सू.त्य छ़स बर. गोमुत
संताप ताप ज़र ज़.र. प्योमुत
ह़ोल च़लि चाञि इन लोल ग्रामो सत्गुर०

८ राम लक्ष्मण च्य वन्द वञ पान
परम आनन्द आनन्द प्रावाण
दाम. चावतम योग. बल. रामो सत्गुर०



च्यथ आकाशस भास्कर म्य बासितम
हच़र भाव कास्तम हरि शम्भो ।।

१ लम्बोदर. सुर. गुरु. हर शंकर गंगाधर सोहम सो
ज्ञान गाश सो-प्रकाश आस्तम त. कास्तम हच़र०

२ तन. मन. सुउन वगुन हनि हनि ननि
फना फिला वजान शिव शम्भो
सनिधान दीप्तिमान संतुष्ट आस्तम हच़र०

३ राम. श्याम. कृष्ण विशन शेव भव. भय. हर
सर. कुरजि वुजि ओम हमसू
निष्क्रयमय न्यरणाय पयि भास्तम हचर॰

४ जल. थल. निर्मल. निष्कल. ओजल.
सम. बल स्मरणायि दिम शम्भो
कल. माल दारवज्ञि हनि हनि भास्तम हचर॰

५ सोवुन्द परमानन्द. आनन्द. कन्द.
नाद. ब्यन्द कृष्ण चन्द शेव शम्भो
ध्यान धारणायि ज्ञान मुख. सुख. आस्तम हचर॰



कष्ट कास्तम भगवान हरे
सतुष्ट रोजतम गरि गरे।

१ अमचे वुनरे वुन. रोवुस
मूह छटि अज्ञि घटि वति रोवुस
च्यय रुस्त कुस मे अथ.रुट करे संतुष्ट॰

२ भव. सर. कर्म.नय रटिनम खोर
इमजोर ला'गिथ गोस कमजोर
छांबरि लुगमुत छस बांबरे संतुष्ट॰

३ वीर. ब. लागय शेरि पम्पोश
गद गद वानियन थावतम गोश
वद. वद. यच छम मिज मा हरे संतुष्ट॰

४ वैंकुण्ठ प्यठ इत नन. वोरुय
गरुडस खसिथ त्रा'विथ सवा'री
मुकलावतम संकटच थरि संतुष्ट॰

५ संकट मंज तस प्रह्लादस कन थोवथस आरचर नादस
हरनाकश्यप. अद. मद. वुतरे संतुष्ट०

६ हंग आख द्रौपदी नंग रछिथस नंग. वुछनस तस सामरथ कस
रंग रंग आभरण नाल्य तस हरे संतुष्ट०

७ लक्ष्मण छारुन परमानन्द चर चराचर युस अंद त वंद
लो लो करान नेरि उन लोलरे संतुष्ट०

–०–

सनियासय हा गोसाञ्ये कुञ्चि कञ्ज इखना वञ्ज ।

१ जटि मंज छय गंगा जारी जन छि वसान अमृत धारी
सूर.. भस्मा मलिथ छु तने कुञ्चि०

२ डयूकस प्यठ छिय इम त्रे नेथर शूमवञ्ज ज़न पंम्पोश वत्थर
वासुक नाग छुय योञ्चि कञ्ज कुञ्चि०

३ जाय च्य रटथम शिन्या शियन छायि छयूफ हाथ रूदहम नयन
सर्व व्यापक छुख हनि हने कुञ्चि०

४ खास वृषभा छुय वाहनय सैर. करान छुख त्रभवनय
छय च्य उमा खोवरि कञ्ज कुञ्चि०

५ पान म्यान्यो मो नाज़ तने काल वरिथ यऽथ सू.र बने
शिव च. गारुन मंजबाग मञ्ज कुञ्चि०

६ आरतिस कास्तम आरचरय घट. कास्तम अमरीश्वरय
मुख म्य हावतम हरमुख कञ्ज कुञ्चि०

७ चोन भुज़न छिय आयुधा शंख चक्र कपाल गधा
सारिन.य मंज छुख अन्दकञ्ज किञ्च०

ऊँ नमो जगदंबिकाय ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(प्रथम तरंग)

(१)

१ गो.डन्य गणपत जियस कुन कर नमस्कार।
पतह् रठ राजरेनि हुं द खास. दरबार ॥

२ वंनित क्या ह्यक. ब. देवी चांन्य लीला।
करै वोंन्य मूर्खगियि किन्य मूर्ख. खेला ॥

३ च. माता शारिका संतुष्ट म्य' प्यठ रोज़।
गदा आमुत ब.दर्गाह् छुस सदा बोज़ ॥

४ वहांरित ज़ाल संसारन वो.लुम नाल।
करुम वो.न्य चार. नत. क्या म्योन छुय हाल ॥

५ मदन लोभन मोहन कर-म.च. छनम जाय।
कृपाये किन्य करुम मो.कलावनुक पाय ॥

६ अहंकारन स्याठाह् ह्यो.तमुत छुनस तल।
इमन चो.न मुशकिलन माता करुम हल ॥

७ ब.दर्शन छुस न वातान न्यथ भवानी।
क्षमा पापन म्य' करतम मांजि भवानी ॥

८ को.ठ्यन शक्ती अंछिन थावतै पनुन गाश।
दरई दुनिया फकत चांन्यिय म्य' छम आश ॥

९ म्य' मूर्खस गछ्त. बूजित मा'जि भवानी ।
सिवाये चानि वन. कुस छुम म्यो'नुय ।।

१० दिलुक तमन्ना म्य' कडतं छुस ब. चोन दास ।
रक्षा करतं पद्यन चान्यन तल. य आस ।।

११ कर्मफल. किञ अगर कोंछा म्य छुम पाप ।
क्षमा सागर च़. य'मि किञ छक करुम माफ ।।

१२ कलम तुल. पान. लेख म्या'ञ कर्म लेखा ।
करुम स्य'ज़ कांह अगर ह'जि छुम म्य रेखा ।।

१३ कृपा सागर. जगत माता छु चोन नाव ।
शरण आसै पद्यन पनन्यन तल.य थाव ।।

१४ सिवाये चानि छुम नह कांह रछन वोल ।
च़. देवी म्या'ञ छखना मा'जि तय मोल ।।

१५ भुज़व अष्टादशव सूति कर च़. रक्षपाल ।
च़. य'मि किञ आस. वञ छख दीन दयाल ।।

१६ च्य रुस्तुय कस वन. कुस बोजि म्योनुय ।
ब. छुसना नाबकार सन्तान चोनुय ।।

१७ यि अक मशहूर कथ प्रथ कांह छु ज़ानान ।
कु पुत्र छय कु माता छय न. आसान ।।

१८ मंगुन छुम न तगान बोज़ुन तगान छय ।
चव.वुन शुर माजि इथ पा'ठि दो.ध मंगान छ्वय ।।

१९ दिलस य'च कोल अमिकुय छुम म्य हावस ।
दितम दर्शुन लगय पा'र्य पार्य ब. नावस ।।

२० ब. चान्यन पादि कमलन रथ वन्दय ना ।।
शरीर अर्पण पनुन च्यय पत करय ना ।

२१ पनुन ज़व जान वा'लिजि खोंठ वन्दय ना ।
पन.नि इम टा'ठि छिम सा'रिय वन्दय ना ।।

२२ लगय ना चाञि मायाये लगय ना ।
लगय ना बजि दयाये लगय ना ।।

२३ इमन पंम्पोश. नेत्रन च्यय लगय ना ।
मुकट धारी सुन्दर शेरस लगय ना ।।

२४ यि कंछा छुम चोनुय च्य वन्दय ना ।
क्षमा करतम क्षमा करतम च. क्षसा ।।

२५ च. छकना राजस्त्रि राजन दिवान राज्य ।
अतीत आमुत छुस ब. बख्शुम ज्ञानकुय ताज ।।

२६ गछान दिथ छक अमीरन च.य अमीरी ।
दरई दुनिया म्य करतम दस्तगीरी ।।

२७ च्य निश शाहो गदा प्रथ कांह बराबर ।
म्य पादन तल कृपाये पनञि किञ वर ।।

२८ ब. जा'री छुस करान च्य'य दस्त बस्तै ।
करय अंपन जिगर ज़न पोश. दस्तै ।।

२९ दो.युम व्याखा च्य हु छुमन. कांह ति दाता ।
बहर क.स्मुक मदद कर म्योन माता ॥

३० गंडित गुलि छुस करान च्यय ज़ार. पारह ।
प'तिमि वक्तय मतय करतम अवारह ॥

३१ परैशा'नी यि म्या'न्निय करत. वो.न्य दूर ।
इच्छाये दिल क'रित गछ़तम म्य मन्जूर ॥

३२ च़. छुख म्या'न्य इष्ट देवी कष्ट कास्तम ।
सदा सन्तुष्ट रूज़ित मनि भास्तम ॥

३३ वनान सा'री छि चान्ये जायि सिद्ध पीठ ।
सिद्धत करतं म्य हयू मोक.लित गछ़िय कीठ ॥

३४ ब. कश्मीर का.ति व'थि नेकनाम सतजन ।
कृपाये चान्यि किन्य सरतलि बन्योक सो.न ॥

३५ मूर्ख बोज किन्य न छुम शक्ती न भक्ती ।
दयालु छुख गछ़ुम बख्शित म्य मुक्ती ॥

३६ ब. छुस आरुत बन्योमुत आ'र्वल ज़न ।
गऴर च़लिहेम बनिहेम आ'न. ह्यु व मन ॥

३७ अगर रछ़्‌दं पद्यन तल कुस म्य पोर्यम ।
तवै किन्य चा'न्य भक्ती ज़ाह न. सोर्यम ॥

३८ कबूल गछ़तम क'रित वो.न्य म्या'न्य ज़ा'री ।
वन्दय रथ पादि कमलन मा'जि चो.पा'री ॥

३९ यि लीला परि युस सुबहन त. शामन।
तंमिस देवी सफल करि मनि कामन॥

४० दपान 'दासस' छय चांनिस टांठ भक्ती।
ब दुनिया सुख ब उकवा दिम म्य मुक्ती॥

---

(२)

ॐ श्री गुरुवे नमः।

संसार. सागरस सुम दिथ तर अपोर।
गछ़ शरण सतगोर. न अद. घाट वाति बोर॥

१ जीव. अग्यास. जख्मन निज़ानन्द बुलगार
सतग़ो.र यलि दियि अद. बलि बेमार
निर् रोग बनि योग ज़ख्मन बेहि कोर गछ़०

२ मोह. बांदिवानस काम क्रोध पहर-दार
वेडि खुल. गछ़न यलि ज़्यवि श्याम. सुन्दर
वसुदेव ख्यो.नि ह्यथ जमुनायि तारि अपोर गछ़०

३ दुख. सागरस मंज देह अभ्यास करनाव
पो.त नम. त. ब्रंठि नम. संकल्प. विजि वाव
वठि यलि फटि नाव मटि कस छु म्योन बोर गछ़०

४ गुरु. वाक्य. किश्त गर भक्तियि हंज नाव
सतगौर हांन्ज ह्यथ सुख. सागरस त्राव
वाव वहुत त्राव नाव वो.टि मंज गछ़ अपोर गछ़०

५ मोह राज. रावुण राग. राक्षसन ह्यथ
शान्ती सीताइ रामस चो.ल ह्यथ
लंकायि मंज ब्यूठ दैतन दितुन ज़ोर गछ़०

६ राम बन सागरस सोथ दिथ तारुन
रावुन मारिथ सीता तारुन
शत्रु रुस्त राज्य कर पृथ्वियि चलि ब़ोर गछ़०

७ सत्गो.र सागरस स'निस त. वोग.निस
व्यापक छु पानय ग'निस त. त.निस
सत. कथ भावनय वो.टि तरख अपोर गछ़०

८ ज्ञानखय सलाह गोड. घ'निराव श्रद्धा
गुरु वा:क्यस प्यठ ठीकित सदा
अनुभव. अनुग्रह. दारि खुल. गछ़िय तोर गछ़०

९ क'दलुक असबाब कर्मुक विस्तार
वैराग गिलकार शम दम छ़ान खार
मुक्तितता ह्यथ बनाव नित्य अनित्य'च सोर गछ़०

१० सथ डेडि सथ ठ'ठि तत् पद विशेषण
ठ'ठि दिस तमिकिय तिमय तथ शोभन
निर्वैर. भावुक कानुल 'तरि अपोर गछ़०

११ चिल दिस बन्द मुक्ती हुन्द अध्यास
निष्काम. बल छ़ुय छ़ल छ़ुय श्वास उश्वास
जीव. ब्रह्म एकतायि हुन्द दिज़यस ज़ोर गछ़०

१२ निर्द्वन्द्व. निर्वैर. निरअपेक्ष भावुक
दिस फरश काठकर गंड्स शुद्ध. भावुक
सतसंग मारजन साफि फिर चो.वापोर गछ०

१३ तत्व ज्ञा.नचि डेडि डीडि वोत्र प्रवुद्ध
वेदान्त सार तस नित्य. निज आनन्द
मज़बूत ठीकित यपारि तर अपोर

१४ आद्य अन्त. मध्य. निश. त्रिशून्य नाद बिंद
निमित्त उपादान कारण छ् अबिन्द
एक. भाव. यपारि अपोर कुन दोर गछ०

१५ हरद्वार आण कर सां'पनिय शुद्ध मन
भिन्न भावस़ स.ति ठीकित छु अभिन्न
निर्द्वंन्द हर. मोल हरमो.ख. द्राव सोर गछ०



(३)

मनि छुम मेल.हा पन्निस यारस,
प्रारस अ.शि मुकाम।

१ व'नि म्य दिचा़म यथ भव. सरस,
व्रन.कस वनि नो आम।
क्षण. क्षण. छयन नो तसं.दिन कारण प्रारस०

२ बुलबुल मुश्ताक छुय गुल ज़ारन,
ज़ाह ति नो तमन्ना द्रास।
का लि मा खज़ान लगि इथ बहारस प्रारस०

३ अ'दरी व'नि ध्यू वो.न्दि मंज़ यारस,
मंदिरस अन्दर चाम।
सौदा भ्यो.न भ्यो.न छु साहूकारस प्रारस०

४ दुःख छुम पूशुस न. लानिनिस कारस,
नत. क्याह् लेखन. आम
ती बो वनहस प्यथि ना पायस प्रारस०

५ युन त. गछुन छुय प्रथ ज़ीव. द्वारस,
इन. इन. मुस हो चाम।
सर. कोरथ.य नो इथ स'सारस, प्रारस०

६ सुय नाव स.ति छुम मे नाव तारस,
यमि नाव. सांपनुस राम।
'वासुदेव' लयि रोज त.थि दीवारस प्रारस०



(४)

पाद. कमलन तल ब. आसय, करनि चा'खिय अस्तुती।
मोक्ष दिम बो.ड वर्ग दिम हे भर्ग. शिखा भगवती ॥

१ गोम नेत्रन खून जा'री, छुस च्य कुन जारी करान
भास प्रत्यक्ष कास ख्वा'री, असि छि पापव व'लिम.ती पाणि

२ चानि आशायि योत ब आसै. ना उमेद नेरै न. जांह
या म्य वर दि मोक्ष. दामुक, नत. छुसै प्रारान य'ती पाणि

३ लोल॰ बागस पोश फो॰लि मे, वेरि चाम्ब चा॑य॒
शेरि लागै माव कोसम, शोल व॰नि कारे प॑ती प०

४ क्या वनय अ॑सि मंदछेम॰ति, चन्द॰ छ॑नि सोदा करान
कर दथा वो॰ञ वुछ म॰तथकुन, शर्मि स॰ति अ॑सि ग॑लिमती प०

५ चा॑नि गुण विस्तारनुक ताकत, अनि कुस कस वन्॰य
छुय च्य जय जय शाम॰सों॰दरी, जाम॰ शूभान छी छ॑ती पादि०

६ ज्ञान॰ दाता मोक्ष॰ दाता छख, जगत माता च॒ छख
हे भवानी कर म्य' वा॑णी, स्यद्ध मुखस दिम सरस्वती प०

७ पज़ि मन॰ युस भक्ति चा॑ञी, करि निष्कल राथ॰ दिन॰
क्या छु संशय तुसंदि बापत, मोक्ष॰दाम॰ कि बर व॑थी पादि

८ चा॑नि गुण छुस बो विचा़रान, पन ओम॰ कि खरान ब॰ छुस
अबसनकि वर॰,दो॰न कुनुय कर, नत॰ छु आछुर क॑ति क॑ती प०

९ सर्व॰ व्यापक छख चो॰ पा॑री, अ॑सि छि शा॑री क्या वुछव
वन च्य' रुस्त कुस बोज़ि ज़ारी हाव मु॰ख प्यठ पर॑बती पादि०

१० कर्म॰ हीनन धर्म हीनन, कर्तव्यन सान्यन म॰ वुछ
डाल स्यो॰ध अथ॰ कर्म॰ लानिस प्रक्रमस चा॑निस ख॑ती पादि०

११ वील॰ज़ा॑री बोज़ 'विष्णस' रोज सन्तुष्ट सर्वदा
छुय च्य' रौशन छुस ब॰ तोषण, चय म्य बख्शाक थ॑ज॰गती प०

(५)

हे कृष्ण. दया छुय ना गछन, भ्रम दिथ मचन गोख।
भ्रम दिथ मचन न्यन्दरि हचन, भ्रम दिथ मचन गोख।।

१ क्याह रुत समय ओसुय त्यले, यले च. राधा ह्यथ
प्रेम. स.ति रास. मंडलस मंज़ नचन। भ्रम०

२ अन्तर बहिर रातस दोहस, असि भाग्य. वुठव स.ति
तोलान प्रेयम बोज़ तारचन। भ्रम०

३ दर्शन दि करुणाकर. भक्त. वत्सल, उदास क'रित गोख
अथ रो.ट कर व्रच. गोपियि क'चन। भ्रम०

४ गोपियि शुराह सास ह्यथ, शुराह छु खेलान रास
आशचर-इ कुस ओस वो.ज़ मंज़ अचन। भ्रम०

५ माया मोहन चा'न्य मन मोहन, मोहन भ्यो.न भ्यो.न ओस
मोहन रंग रूप आमुत मुन्यन। भ्रम०

६ अमृत रूपी दर्शन. मो.खय, व्याकजि गा'मच. छुय
शुर्य ज़न वो.छे हचन व्रछन। भ्रम०

७ छयन कमि सो.नि साञि ग्रुतुय क'रित, कन क'मि भ'रिय सा'नि
मन सोन इनस छुय ना पचन। भ्रम०

८ अमृत. वपण. नारायणो, शेहलाव मन.य सोन
सन्ताप भव सागर. दज़. मचन। भ्रम०

९ असि लोल चोनुय गन्योमुतुय, कमि सो.नि ग्रुतुय च्य डोल
सुय लोल सन्यामुत असि कचन। भ्रम०

१० व.रय च्य कर्यथ विश्वम्भरय, बरय अचख ना
छुय ना सोन ज़र. ज़रै गछ़न। भ्रम०

११ त्यांगित लजायि क्यांनिस द्राये, सेवायि आये च्यय
पज्या. अनह्यों.त लागुन ह्यच़न। भ्रम०

१२ आदीन अनाथ भक्त आं'र.ती, पालान छि धर्म त. दान
हितकार अपकार करान गछ़न। भ्रम०

१३ श्रीधर. करुणाकर. श्याम. सों, दर., ज्ञानान च्य छि भास्कर
श्यो.न छुख न सति मति आं'सित ज़च.न। भ्रम०

१४ प्रेमन त. वीणायि आनन्द स्वरन, भ्रम दित न्यून मन सोन
ब्रजवां'सी दां'सियि मं'लि ह्यच़न। भ्रम०

१५ प्राणो! यी च्य कं'र.थ वां'णी, फीरित ब. इमोव. यूर्य
दुबार. मो.ख होवुत न. मोह. हच़न। भ्रम०

१६ केशन त्रां'विथ भूषण पूरित, डेशन छिन. मो.ख चोन
दर्शन करन वाजे मच.न। भ्रम०

१७ ज़ां'न्यी न. असि स्वां'म्य सेवा कं'रित, पूज़ा त. तो.ता केंह
दया कर असि विच़ार रछ़न। भ्रम०

१८ पज़िहे नतय छा धर्म करुन, फीरित न. नज़.र दिम्य
त्यां'गित मथुरायि गोख अछ़ रछ़न। भ्रम०

१९ चि़त बुद्ध मन प्राण अर्पण कं'रित, धं'रित छु चोनुय ध्यान
सुय ध्यान खेलान असि ज्ञान. वच़न। भ्रम०

२० रछ असि त्रण. त्रण. सारिय निशे सारिय ज़न राज ह्यथ
'केशव' आव आपदायव त्रचन। भ्रम०

---

(६)

पो.त जूने मो.त सुल. नोवुम, लल. नोवुम नारायण।

१ प्रयि त'मिसं.ज़ि ह्यि तन ना'व.म, पोश वथरस प्यठ गोशन
रोश. इयि ना होश राव. रोवुम। लल०

२ बाल. पान तस पत. राव. रोवुम, हाल. कमि सुय माल रटहन
शिव. शम्भो शून्य बोल. नोवुम। लल०

३ काम. देवस नाम. लेख. नोवुम, पाम थविनम कर डेशन
रुम. रुमै. राम रम.नोवुम। लल०

४ द्वार प्यठ द्वार. वार. वुछ. नोवुम, ज़ूनि छोंडुम मंज तारकन
मारकन मंज लाल. उलसोवुम। लल०

५ लो.लि मंज़लि लाल.लल. नोवुम, बोल. नोवुम सुबह शामन
चीर्य सोवुम मुलि वुजनोवुम। लल०

६ ज़ीर. बम. कुय सीर वु.ज़नोवुम, फेर. नोवुम तति हेरि बो.न
वेरि तमिसं.ज़ि शेरि वात. नोवुम। लक०

७ ज्यव नार.स.ति वार.छल.ना'व.म, तव. लोलुन नार शोलन
कनव बूजुम अ'छिव वुछ. नोवुम। लल०

कंद नाबद आरद नोवुम, फंद कंरित यूर्य अनतन
अंद लो.त्रमस न.वों.द फोल.नोवुम। ललः

हंस. द्वारय वार. प्रज.नोवुम, प्रारि प्रारोस राम. रादन
ब्रह्म.सर पान सर. कर. नोवुम। लल०

अथवासय रास खेल नोवुम, श्वास उश्वास नो.न छु भासान
सास 'भास्कर' विकास भासनोवुम। लल०

(७)

प्रातः काल आव म्यंति अनत. गाश मति.
छम चांञ आश म्य,ति पूरण कर।
लटि मुख हाव मोह. गटि करत नाश मति,
छम चांञ आश मति पूरण कर।

जन्मादि जन्मन ग्यूर आम फेरान.
छुस हालि हांरन डेशत कर
जल हाव मुख पनुन छुम न. बरदाश्त म्यंनि छम०

भक्ति भाव. स.तिन वति चाञि नेरय,
कति छुख आसान पैगाम सोज।
नत. दिम पन.नुय प्रोन यादाश्त म्यंति छम०

मोह. गटि मंज छुस वथ छमन, ईवान,
सत्गुर. हावतम सत.चिय वथ।
षथ हाव नो.न त्राव सूर्य प्रकाश! म्यंति छम०

४ हनि हनि फयूरुस ह्यथ मनि कामन,
शहरन त. गामन कति आसि यार।
छुख पाताल किन. छुख आकाश मति छुम०

५ निर्वासन. वनत. कति चोन आसन,
अन्धकार कास्तम वन्दयो प्राण।
करतम सो.दि वाच्चि हिश बा'श मति छुम०

६ कल्पनायि रुसतूय कल हो वन्द.यो,
कलि चाच्चि रा'व.म न्य'न्दर.र त. नेह
वो.ल. वोत्र विश्वास' च.लि अभिलाप मति छुम०

---

(८)

हरे राम. टाठि मित्रय म्यानि।
लागय दान. दान. तुलसी॥

१ कौशल्या हृदय. आनन्द. घन. पादि कमलन पान वन्दयो
निर्बन्धन. रघु नन्दन. दासस कास भव. बन्धनय
महा प्रभो शुभ. दर्शन दि लागय०

२ हा राम. श्याम. सुन्दर देव. हृदयस वेशि सेवैं चा'नि पदम पा
शरणे आससै वासु देव. चावतम चरण. चरण. अमृत प्रसा
परन प्योसस सर्व. ईश्वर. चे लागय०

३ ज़गतस उत्पत्त स्थित तय नाश तमि निश. सांपनुस निरआश
आदि देव. त्वं स्वयं प्रकाश केवल छम चरणारविंद. चिय आश
तन. मन. पान पुशुरमय चे लागय०

४ यम चावि ईश्वर प्रेमय रस तस थाविन. भव. नियम च्यतस
आव राज्यस त. अमृतस प्राव. नाव्यस परम. तत्वस
जीवन-मुक्त सांपनान प्रेमी लागय०

५ स्वर्ग सुख. खो.त. रस रागस रस. रस. व्यस, रावा'नी
ज़गत आकार. वृत्ति बानस चित्त. निश. म'श रावा'नी
राग. रस ज़ानि अख वैरा'गी लागय०

६ मूर्ख ज़ीवन काम. रस चाव जन्म. मृत ज्वरा रोग भागी
ज्ञाता ज़ीवन राम. रस चाव स्वत: सांपनान सर्व. त्यागी
शुक देव सु देव दत्त साक्षी लागय०

७ प्रेम. अगनस तेज़ बलवान भव. नियम. काष्ट बीज़ गालान
प्रेमी मनस छु संभालान नियमी ज़ीवन बन्धन गालान
सहज़ प्रेमी सदा नियमी लागय०

८ आश्चर्यवत् छु भगवत ध्यान अति वाहक दृष्टि मो. कलान
चित विकास.हृत्कमल फोलान सां'पान शुद्ध संकल्प बान
बनान निर्विकल्प समाधी लागय०

९ गौतमनि शाप स.ति अहल्या बनेम.च् आ'स जड शिला
जगत मंगल छि राम. लीला उदयस आयस शुभ. वेला
पादि स्पर्श स.ति बनेयि देवी लागय०

१० वलन. प्रास बुद्धिस्थित चिदाभास चित रंजन वाल. वाशे
चित्तघन. राम. साक्षात भास कास अज्ञान कर्म. जाल. पाशे
बंद घुस चिदाकाश पक्षी लागय०

११ मोक्ष दायक. मुकुन्द. राम. भाग्यइवान अजोध्या वा'सी
प्राव.ना'विथक विष्ण. स्वधाम. युस यछान योग. अभ्या'सी
भक्त. प्रिय. मोक्ष क'रित सा'रिय लागय०

१२ जगत गुरु त्वं पुरुषोत्तम सर्वेश्वर. सर्व व्यापक सम
भगवान् सुख. मुख. इलम श्रीमान शुभ. दर्शन दितम
करतम निर्वाण. उयदेशय लागय०

१३ जनार्दन गोपाल गोविंदय नारायण. विष्ण. वासुदेवय
हृषीकेश. माधव मुकुन्दय हरे राम. कृष्ण आद्यदेवय
आशा छम नाम निदान दानचिय लागय०

१४ प्रिय. बोध शुद्ध. चित्त क्षेत्रस बीजवत व'त्रिजि भगवत नाम
नावस स्वरूप बनि मित्रस चतुर्भुज श्याम सुन्दर राम
फल. दायक छि प्रेम. खेती लागय०

१५ देव. बुद्ध देव.दृष्टि छि साधन निष्काम सेवान तिम विष्णु पादन
परम. पावन छि राम. आराधन क्षय सांपनान अपराधन
उपासना बिना छुय न. गती लागय०

१६ दास छुन. स्वर्ग. सुख. पुछि राम बरतल चानि त्रा'वित लर
कास मनस नरक. दुख भय श्याम. दो. नवय अन्तवन्त अस्थिर
दासय छुय' प्रय शुभ. दर्शन चिय लागय०

१७ इछ गत छय राम. नाव. प्रेयमस तिछ गत छन. तपस त. व्रतस
प्राणायामस यमस त. नियमस राज्यस स्वर्गस त. अमृतस
राम. महिमा क्या वनि वा'णी लागय०

१८ ज़ीवनमुक्त हनुमान देवन सेवुन राम. नाव जा'नित सार
सोता-पति राम. जीवन कृपा को.रनस सारगी मुक्त. हार
हलमतस छय राम नाम. प्रीती लागय०

१९ चवान राम. नाम. रस गलि गले राम. सेवक महा निष्काम
मुक्त हारस फलि फले वुछनस न. कुनि श्रीराम. नाम
चू.न करि'त ओव हल म'ती लागय०

२० महा महिमा राम. नावस दैव. विभूत दर्शन नित
भान सांपनान निष्कामस चिदाकाशस अन्तर्गत
महा पुरुषण छु सुय हर्ष.य लागय०

२१ राम. नाम. रस महा देवस तवै सेवान सर्व लोक तस
गिरिजा राम. नाम भूषणस तोषान तोषान लागान मनस
क्षण. क्षण. नित साधान तो लागय०

२२ युस वो.र भक्ति योग. अभ्यासन सुय फेरान नित पंचन कोशन
राम. नाम. स्मरणा भूषण निवारान रोजतम दोषन
सां'पनान ज्ञान. गण सातकी लागय०

२३ आदन बाजि म्यानि म्योनुय स्नेह कव. कारण. केंहति छुयन चे
छाल. मार को.त गछ़क लालो वे अकि लटि रटत नाल. पायस पे
म्योन संयोग च्य स.ति वेदान्ती लागय०

२४ नर्क. वा'सी साधु निन्दक दुर्जनन क्रय सो.य निशदिन
स्वग. वा'सो छि सन्त. सेवक सन्तन पालान मधुसूदन
साधु वल्लभो लगय पा'री लागय०

२५ यस अनाथस वरि रघनाथ तस क्या करि अस्तुत त. निद
साध सन्त राम. रूप साक्षात रघुवरि प्रेम पुरुष सदा
राम.नाम. रस च्यथ छिवेम.ती लागय०

२६ च.दन वृक्ष संत दुर्जन मख मख च.दनस दिवास टख
मखस प्रत शायि अग्न दाहक च.दनस वरान हरि मस्तक
जीव कृत कर्म फल भोगी लागय०

२७ प्रेयमस छ्य सारिचिय सिद्धता महा दुर्लभ बनान सुलभ
यस वरि हरि हर विधाता दास. भाव. किञ सां'पनान प्रु
भ्रमर. कीटवत् छ्य प्रेम. खेती लागय०

२८ यस मनस आसि न. प्रेयमच लेश तस क्या करि गुरु उपदेश
तस कदाचित गलि न. राग द्वेष चलि न. तस माया मोह आवेश
सग. खो.त. सस्कार बली लागय०

२९ यत शायि आसन संस्का'री नागवत् वुज़ान तति प्रेम जल
स्वत: सांपनान आधिका'री प्रेम. जल. छलान चित वृति मल
सुख. सान बनान निवृत्ती लागय०

३० इथ. पा'ठि मेघ वालि वर्षण ज़ल.वेग छुन वुछान दारि त ब
तिथै पा'ठि स्वत: सिद्ध पुरुषण प्रवेश करान बाह्य अन्तर
सप्त. सिथि खोत छ्य प्रेम. नदी लागय०

३१ तीर्थ. जल कासान बाह्य मल अंतःकरण. वृत्त रोज़ान चंचल
राम. राग. यात्रा सफल चित्त. वृत्त बनान शांत शीतल
प्रेमी वो.र राम भगवा'नी राम महिमा क्या वन.वानी ला०

---

(१)

सखियव रूठुम हा'य रूठुम हा'य ग'छित ब्यूठुम हा'य गामन.य ।
तति विगिन्नय्व डयूठुम हा'य ब. चाक दिमना जामन य ॥

१ सिध जल. तन नावसा'य ब. सीर पननुय भावसा'य
क्याज़ि ला'जिथस पाम.नय ब. चोक०

२ बाल.प्यठ. नादा लायसय ब. साज. सेतार वायसा'य
छो.ञ छो.ञ करस रुञ. दामन.य ब. चोक०

३ तारा मंडला द्रामतुय जूनि नादस आमतुय
रो.व हा'य करव. सुबह शामन.य ब. चाक०

४ वन ना'गिज़ि द्रामचा'य डल सा'लस आमचा'य
जूला ज़ालव रंग. नावन.य ब. चाक०

५ स'खियव मनवित अ'नितोन आदन बोज ब्योन नुंद.बोन
वो ञ नय कां'सि बो हावन.य ब. चाक०

---

(१०)

पानै बिहित पननिस वानस आनस आनस़ वुछहन यार।
तसुँदुय सौदा हर दूकानस आनस आनस वुछहन यार।।

१ मस्त गय मस च्यत वा'ति लामकानस,
अयान सपदुक पननुय पान।
शाबाश ब'विनै अथ खुमखानस आनस०

२ फना फिला निश. छुय पानस,
बका बिला तहकीक कर।
ब्रह्मण ला'गित अछ बुत खानस आनस०

३ सा'लिकव मा'लिकी क'र यत जानस,
तिम छिय वा'तिथ पय दर ह्य।
आशक छु मुश्ताक पननिस पानस आनस०

४ आश्कव पान खोर अ'श्क. पेचानस,
हा'सिल सपदुक वा'सिल कार।
दम दम. ग्युंदहै पननिस जानस आनस०

५ पानै पानस ध्यान करु पानस,
आनस निश. तस लगिथ न. छयन।
मीलित सु डयूठुम दानस दानस आनस०

६ दस. स.ति पम्पोश फो.लियो जानस
गमगीन मो गछ रोज़ बेदार।
खय कास दिल किस आ'ईन खानस आनस०

७ हस्ती मो कर पननिस पानस,
मस्तीं पननिय रावान छ्य ।
'लस शाहो' लय कर प्राणस अपानस आनस०

---

(११)

सुख शब्द दर्शन. चाने, आनन्द घन टाठि म्याने

१ रात दिन करान छुस चिन्तन
क्षण. क्षण. छुम चंचल मन
ईश्वर० दूर्यर. चाने आनन्द०

२ राग चोन युस छुम मनस.य
सात. सात. रातस दिन.सय
म्योन दुख च्य रुस्त कुस ज़ाने आनन्द०

३ राजन ह्.दि महाराजे
टाठि म्यानि आदन बाजे
लीखित म्य क्या ओस लाने आनन्द०

४ यो.दवै च्. म्या'ञ कथ बोज़क
दूरि दूरि चूरि क्याज़ि रोज़क
रोज़ चूरि हृत गुहायि म्याञे आनन्द०

५ य'च् कोल च्य त. म्य दूर्यर
क्यथ ओरुत यूत कोरुत न. पूर्यर
मद. कर यि ज़'ट यलि आने आनन्द०

६ ओसुस जल बो.य निर्मल
मोह. काठक'शि कोरनम छल
वचनम कच. शीन. मात्रे आनन्द०

७ ग्रेश. ह'तिस.य मनस ग्रेशा
अमृत वर्षण बु डेंशा
गलि शीन अकि कटाक्ष. चाने आनन्द०

८ कर्म किनि वेष कम घा'रिम
गर्दभ बुथ बा'यं सा'रिम
वृषभ. वेष. तल अलबात्रे आनन्द०

९ कामनायि आतुर कोर.नस
अमृत भास्योम वेह. रस
ओ.परोवुम दात्रि दात्रि आनन्द०

१० कन थोवुम न. सत्गुरु शब्दन
जर छुनुम खो.टि प्रारब्धन
कर्मव को.डुस पयैनि छाने आनन्द०

११ आनन्दस चाव अमृत. रस
संमार. निश. बनि बेह्यस
बनि नो.न अनुग्रह चाने आनन्द०



श्री शारिका लीला-लहरी

(द्वितीय तरंग)

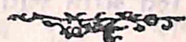
(१२)

चराच़र छुख परमेश्वरो   रछतम पनन्यन पादन तल

१ गज़. मुख. बाल. चन्द्र लम्बोदरो विनायको भ'विनय जय
हरमुख. दर्शन दितम ईश्वरो   रछतम०

२ निष्कल नाव चोन निरंजनो   सो.य कल धा'रित त्रिकारण
स्मरणि चाञि स.ति जन्म मृत हरो रछतम०

३ देवियि त देवता सारिय स'मित   न'मित करान चा'ञ स्मुरण
स्मुरणि चाञि स.ति सा'र्यं पाप हरो रछतम०



(१३)

श्री राज-राजेश्वरी आम.ति शरण छिय।
पूज़ायि लागोय पम्पोश गुलाब मादल त. हिय ॥
गौरी अम्बा अम्बुराक्षीम अहं ईडे

१ जगत अम्बा च.य छुख मंज वदनस असनाव
निष्बुद्ध शुर्यन दयायि हुंद दामान प्यठ. त्राव
कल्याण. सोस्त थाव स.ति अश. फचरन भरन छिय पू०

२ बाहन सिर्यन ज़चन चान्यन हुन्द प्रकाश
चरण चा'नी करान संकट. गटे छि नाश
निह.न्ज़े गर.दि स.ति देव मुकट. जरन छिय पू०

३ लोका लोकन ह.न्दि सत.जन कारण देव. गण
सिहासनस चा'निस दिवान छिय प्रदिक्षण
परम दाम.कि पुरुष प्यवान परन छिय पू०

४ षट्चक्र. रूपी चक्र नागस छि न'नि नेरन
तेज़चि रेखायि चो.पा'र्य त्रिकोणस फेरन
योगी ज्ञा'नी प्राणी सुय ध्यान घरन छिय पू०

५ बुद्ध छन. वातन कम रंग चान्यन रंगन छिय
कामेश्वरी च्यय मन. कामनायन मंगन छिय
यछि चानि श्रद्धायि स'स्ति ग्रायि स्तुतायि परन छिय

६ पनन्यन भक्तियन दासन हुंदुय प्ययनय पास
तिह न्दे पासै कुकर्मन ह-न्ज़ गटय म्य कास
ज्योति-स्वरूप हाव छुय च्य भूतेश्वर.ग्र द्र.य पू०

७ भगवत् मायायि ह.दि रंग चा'नी छि रंगा रंग
चाने स.ती छुय योग छिय भोग छुय संत्संग
तप जप समाध क्रिया कर्म करन छिय पू०

८ महा माया च.य छख चट ग्रसि माया जाल
ग्रसि वो.लमुत छुय गृहस्थ.कि काल. सपंन नाल
ल'गिम.ति सा'रिय पनन्यन पनन्यन घरन छिय पू०

९ कम भक्तियि किथ भक्तावारन स्वरन छिय
कथ कामि लगव क्या तगि ज़िन्दै मरन छिय
च.इ टोठ स'च् चाथि स.ति अ'सि दिन दिन भरन छिय पू०

१० प्रसाद कर गाल ज़न्मा ज़न्मन ह.न्दि अपराध
सञ्ज रंगय ज़लय मंज़ ह्राव पम्पोश. पाद
इम तिम स्वरण यथ भव.सरस तरन छिय पू०

११ चाने सूती सृष्टि गयि न'बी जय म'विनय
मंज़ शून्य. उत्पत्त स्थित सा'प.नी जय म'विनय
कलर ज़ु.गच महाराज. रा'नी शरण छिय पू०

१२ कुनुय यलि ओस वुछन वोला तस कुस ओस
ज़गत यस ज़ाव मा'जा मोला तस कुस ओस
चित् शक्ती चाने एक अनेक स्वरण छिय पू०

१३ च्यय अजपा गायत्री पांछ कारण ग्यवन छि गीत
निस्त्रिगुण छख गुणन चान्यन स.ति परतीत
चाने स.ति कार अन्तःकरण करन छिय पू०

१४ अनेक नागन प्यठ चोन निर्वासन आसन
प्यठ शेष. नागस विष्णु रूपय छख भासन
सा'रिय गुण चा'नि महा पुरुषय वरन छिय पू०

१५ च्यय किति नाना रंगै भोजन रनन छिय
न्यय निश सुवर्ण बानन ल'दित अनन छिय
नाना रंगव मिठायव थाल भरन छिय पू०

१६ चाने दयायि स.ति क'ङि बडय्व ब'डि ब'ङि नाव
निष्बुद्ध 'कृष्णस' निश वा'णी हु'द अमृत द्राव
परण वाल्यन ज़न्मस ह.न्दि दुख हरण छिय पू०

(१४)

हे दयालु छुस ब. चञ्चल. लोलो।
अनुग्रह. चानि बेमार बल. लोलो॥

१ कर्म.हीन छुस आमुत संसारस
चन्द. छोन छुस लु.गमुत व्यवहारस
अविद्यायि ह'न्ज़ छुम गांगल. लोलो अनु०

२ लय विक्षेप भय. स.ति छुम आवरण
मल खो.तमुत छुम अन्तः करणन
विवेक. पाञ्नि पान बो छल लोलो अनु०

३ जान ज़ा'नी ज़ांह् तिनो ज़ोनमख चय
ज़ान दिम तिछ् ज़ा'नित तत्व गलि दुय
दिम निश्चय युथन. ज़ांह् डल. लोलो अनु०

४ छुस ब. लो.गमुत संसार. सर.सय मंज़
रोवमुत छुस पननिस घर.सय मंज़
ध्यान स.ति ज़ाल ज्ञान. मशअल. लोलो अनु०

५ प्योमुत छुस गटि मंज़ अनतम गाश
त्युथ गाश हाव युथ नो.न छु सिर्यि प्रकाश
का'फी छुम चा'ञ अख वुज़मल. लोलो अनु०

६ बान. हीन बो द्रास खान. गदाये
अंग हीन छुस फेर. कोत जायि जाये
दिम भिक्षा अनुग्रह. खल. लोलो अनु०

७ यम्बर जल बो.म्बरो छुस यो प्रारान
वेरि चात्र पान छुस पा'रावान
वन वन. छुस व्र'च् म्रारज्ञल. लोलो म्रनु०

८ लोल. बागस फ'लिमो गुल त. गुलजार
पोशन्लो म्रज वलो छ्रावु सब्जार
होश दिम युथ पोश. वा'र फो.ल लोलो म्रनु०

९ हा 'विष्णो' पननुय पान जानतन
यलि जानक त्यलि बनि सरतलि सो'न
चित म्रा'नस करत. स्.-कल लोलो म्रनु०

(१५)

विनत बोज़्म च. राधा कृष्ण. लागय लोल. नादा बो।
भरय लोला परय लोला करय हो हो करय हो हो ॥

१ च. छुक योगुक ज्ञानुक गुल ब. छुस ना भाव कुय बुलबुल
च. लोब रोज़न ज़रय मा बो करय०

२ च्य छुय पंपोश पाद.च द्रूय वरुम छुस भक्ति बाग.च हिय
च. नय डेंशत हरय मा बो करय०

३ च. छुखना प्राण बो छुस तन सत्ता वा'नी छ्रि दो.न मिलवन
च. नय म्रासक मरय मा बो करय०

४ ज़लस मंज़ गा'ड ज़न छस ब.य ब. छस च्यय स.ति ज़ल छुख च
च्य' रुस्तुय वो.ञ दरय मा वो करय०

५ ब. छस च्यय मेघ. वर्णस मोर र'ट्टिथ छस खोर रासस मंज़
नच्य लूकन खरय मा वो करय०

६ च्य सवेस छस ब. कुम.री ज़न करन छस बूलि म'शित हन ह
छ.नय त्रावि'त घरय मा वो करय०

७ च छुख चन्द्र' ह्यु ज़ोतन ककुव ज़न छस च्य' कुन वोल
वुछुत नय अ'छि ज़रय मा वो करय०

८ च्य 'श्रीकृष्णास' ब. छस प्रारान दितम दर्शुन इतम लारन
च्य रुस्तुय वोञ वरय वो करय०



(१६)

लाल. लगयो वाल. मावस राम. नावस पार्य लगय।

१ टंग ओ.ननस विवहारन रंग. बुलबुल गोम को.ल
गंग. वोञ चाव मंज़ यत तावस राम०

२ भक्ति मावय नाद लायय अर्द्र. रातन सुन्दरो
चानि दर्शन कुय छुम म्य हाव्स राम०

३ हे मुरारि! वील. ज़ारी म्या'ञ वोज़ख ना कनव
छुक च. टोठान भक्ति मावस राम०

४ त्रटि ह्.न्दे सायबानो गटि ह्.न्दे गाशरो
मोह. अग्निगटि मंज़ लोगुस दावस राम०

५ गो.व गोमुत बोर पापुन दोह लो.गमुत छुम दरय
नाव ल'जिम च् मंज़ न्यथ. वावस राम०

६ हे शेव ! छुक सर्व. व्यापक ब्यथि छुक विश्वम्बरय
केशव. तार दिम वर्जनिस वावस राम०

७ क्रूठ प्योमुत छुम म्य पानस संसारुक लंगरय
व्यम. क्या छुम न. केंह ति छावस राम०

८ बाल. भावय व नि म्य दितिमय वनि नो आहम च्. ज़ाह
वनि इतमों ती छुम म्य हावस राम०

९ शयि शये शय च्.य छुक शय नो ब्यथि रोज़ि कांह
शयि रूद यलि टोठयोक कावस राम०

१० 'आनन्दो' भक्ती त'मिस.ज ज्ञान पननुय मोक्ष उपाय
व्रत त'मिस.ज़ धर पुन्यं त माघस राम०



(१७)

चानि बरतल राव्यम रा'चय आवाज़ वा'च्.य नो

१ चों.ज़ शोभहय बो ख'ज़मा'च्.य
ग्रंज़ साहिबो ह्य'चथम न. ज़ांह
तथय नाव प्योम ललह मा'च्.य आवाज़०

२ बालि रनिमय सार्यय न्या.भा'च़.य
ख्यनि साहिबो आहम न. जांह
तवय लल छुस छिन्दरे मा'च़.य आवाज़॰

३ घरि द्रायस बा जमा'च़.य
वनि साहिबो आहम न. जांह
का'लि मेलव कया मा'च़.य आवाज़॰

४ खा'सि वो.ज.लि बर.ग छ. च.ई
छुस ब. स्वग.च य'म्बरज़ल
दादि वों.बर.नि बर. गा'मा'च.य आवाज़॰

५ बा'लि बा'ली मो पख यच.य
गा'लि का'त्याह संसारन
का'लि सूरच़न गछ़ान म्य'चय आवाज़॰

---

(१८)

राम. लीला चा'ञिय वनय श्याम. सुन्दर नारायणय
तन. मनय अर्पण बनय श्याम. सुन्दर नारायणय
निर्गु'णय निरञ्जनय श्याम. सुन्दर नारायणय

१ चानि लोलुक छुम होल गोमुत
देह.किस ज़िसिस.य मंज़ ब. प्योमुत
वन. कस दुख म्य छुम क्षण.क्षणय श्याम॰

२ यमि योनिये छुम ह'जि का'र.य
गोस. म्राव वो.ञ म्य छुम को.सता'र.य
मुख हाव दुख क्यन म्रास ह्यनय श्याम०

३ नट ब'नि ब'नि नाटक हा'विम
ईश. ! कम कम वेष बदला'विम
निन. म्रास ग'छ्रि ग'छ्रि इन. इनय श्यास०

४ कृतिस कालस वो.ञ बो म्रारय
बोछतम म्रा'च़'र ज्ञार. पारय
म्रार ह्यिनय रघु न दनय श्याम०

५ यथ वेषस मंज मो.कलावुम
योगानन्दस मंज म्य सावुम
मो च़. म्रानन्द निर्बन्धनय श्याम०

६ माश. स'स्तिस यथ संसारस
कमि बापत पत्त. पत. लारस
म्रत. गत पठ च़ट़म पन. पनय श्याम०

७ कालस छुन. करार क्षणस
म्रास करान रातस ब. दिनस
चानि दर्शन. म्रमर बनय श्याम०

८ कालस निश उपदान संसार.य
का'ली तथ बनान म्राहार.य
मंग. क्या तग. म्रास मरण.ज्यनय श्याम०

९ भोगन मंज़ तृप्ती म्य न आये
युथ मृगिग्नन मृग तृष्णाये
अमृत चन.कुय छुम म्य विनय श्याम०

१० श्वान नीरस हडन टकान
ट'कि ट'कि पनने ज़्रस्म. बकान
रस रतुक तस हे रस गछाय श्याम०

११ कोमल पादि कमल मलय
हे शरणागत वत्सलय
कोत ब. चलय च्य निशि रोज़ छ़यनय श्याम०

१२ सुख केवल चा'न्यिय स्मुरण
सुख केवल चोनुय दर्शन
हे निर्द्वन्द्व. आनन्द गछाय श्याम०

१३ 'ठाकुर' च.य हृषी केशाय
बुद्धि पर युस निश.चल राग. द्वेषय
सर्व आत्मा च.य सनातनय श्याम०



(११)

कृपा करतम हरि हरै   ब. क्या करै ज़ोर ।

१ लूसित प्योमुत छुस बुज़रै खो.तमुत छूम बों.ड बोर
यथ पंचालस ।कथ. पा'ठि तरै ब०

२ आर.ह छु वज़ान वो.गनि दरै बारह छु करान शोर
छो.प छु करान समन्दरै ब०

३ व'नि व'नि य'च गोस च़खि अंदरै ननन ज़न छ्ुम चोर
छोपि हुंद सुख दिम योगेश्वर ब०

४ पख. छम जरिमच़ छुम ज़र-ज़रै बन्यो.मुत छुस मोर
हीन छुस खोरन हंदि आ'रचरै ब०

५ सन्मुख रोज़तं श्याम. सों.दरै प्रभात ह्यु व चो.पोर
गुथ न. पंपोषस दोह लगि दरै ब०

६ आभास. चानि स.ति गा'म लि खरै अन्तः करन चो़र
म्य भास प्रकाश रूप ईश्वरं ब०

७ त्रिगुण उलंघितछुक शंकरै शक्तियि चानि छुस लोर
ओ.गणिस दो. गणाव कुनिय वरै ब०

८ चो.रों.ग ज़न म. फिरनाव घर. घरै यि बा'ज़िगर छा सोर
दूबार. म. डाल प्यठखा'र दरै ब०

९ मन्दर चा'नित ज्ञान, धरै हावुम चूरिम पोर
तथ मंज रूजित आनन्द भरै ब०

१० 'कृष्णस' मुच.राव बाव,कि बरै कुनिय वरै तोर
युथ लरि ह्यथ चयय बसि अमरै ब०



(२०)

वो तन. मनै अर्पण बनै नारायण. श्रीमद् नारायणं।

१ भ्रम. किनि संसार सत्रूप जीनुम
दुखस.य प्यठ सुख मन.न.य मोनुम
भास्तम त. कास्तम मोहुन सनै नारायण०

२ चयय रुस्त नाश. सो.स्त ईश्वर. सोरुय
मृग तृष्णा ज़ल. चिय दोर. दोरय
स्मृत पन.ञ दिम च.इ क्षण क्षणें नारायण०

३ यथ प्यठ ईश्वर. स्थित थव. चयन व्यन
सोरुय गछथ पोञ सारुन क्रंजलयन
आसर. चोन थव. सनातनै नारायण०

४ संसार. कुलिस शरीर हर्द पन.य
कामना सहित तथ कुलिस मूल मन.य
काल. छटि स.ति नटि मंज दिन. दिनै नारायण०

५ मूल संसारुक मन यलि गले
जाम. बदलावन.चि आपदा चले
मन गाल ज्ञान. खड्ग स.ति ज्ञान घनै नारायण०

६ देह. अभिमानन हनि हनि जोलनस
दम. दम. क्रम. क्रम. शीन जन गोलनस
स्मरणि चानि निश को.रनस छ्यनै नारायण०

७ थज.रुक जल युथ कल. छावि पलन.य
ती करनोवनस ममता मलन.य
ममतायि हंज़ बुद्ध दितम सत् जनै नारायण०

८ अच्युत सत्.रूप. निरामये
भव. भय. नाशस गछि चानि लये
चानि प्रयि दय ब.ति च्यय ह्य बनै नारायण०

९ विस्मृत को.रनस अविद्यायि दोषण
भ्रम. किनि वश् मांपनुस पंच कोषण
पंच. कोशातीत. निरञ्जनै नारायण०

१० दिनम अपि रजनी सायं प्रातः
शिशिर वसंती पुनरायातः
काल.देव करान ग्रास शनै शनैः नारायण०

११ मन म्योन मोहित को.र मोह. मस. न.य
ब्रेह्यस कोर.नस तृष्णाइ रस.न.य
मोह मद गाल व.न हे मधुसूदनय नारायण०

१२ काम.देव कान.य स्य'जरावानय
तस यस मनस आसि न. चोन ध्यान.य
सर्वं आपदा नाश चानि दर्शनै नारायण०

१३ जीवन छुय जीवन चा'नी स्मरण
देव. भाव देवन करुन चोन कीर्तन
उत्पत्त सारिचिय चानि ईक्षणं नारायण।

१४ जीवन हंदि जीवन. देव. देव
आनन्द दायक बांधव त्ममेव
सर्व आत्मा रूप. सुदर्शनै नारायण।

१५ हे निराकारै सर्व आधारै
चानि दर्शन मुक्त बन. नरक. नारै
सुख. रूप. पुख हात्र हे चिद् घनै नारायण।

१६ सत् रूप. ज्ञान सत छुम मलिन प्रकृत
संताप अग्नस ग्यव जन ब. आहुवत
कष्ट गाल सतुष्ट बन जनादनै नारायण।

१७ खो गया दिन दिन सो गया लडकपन
आगया यौवन पीडा उत्पन्न
तेरा अनुग्रह मेरा विनय नारायण।

१८ आसुरी प्रकृत निर्मल करतम
शुद्ध प्रकृ'च किञ गोविंद. वरतम
कर अभेद पानस स.ति पूरणै नारायण।

१९ सारिन.य आत्मा पर प्रेमास्पद
सर्व आत्मा चा'ञ भक्ती स्वत: सिद्ध
मूलस थक छ्.न मूल. कराणै नारायण।

२० सर्वात्मा चा'ग्र एकात्म भक्ती
यस आसी तस भव. बंध. निशि मुक्ती
'ठाकुर' बंद. भाव व्यथि अर्चं नै नारायण०



(२१)

पूर्ण पुरुषस सुरासुर विन्दनस परमानन्दस परमात्मन ।
तस हस्त क्या छुम दप. पान वन्दस परमानन्दस परमात्मन ।।

१ कृष्णस जग यस तुँद ब'लि चंदस
चिनमय मंदिर द्वारिका तस
सुदाम सालिग्राम सुय पूजि थों.दस परमानन्दस०

२ द्वार. द्वार पूज़ा मुख अरविन्दस
सर्ग. अर्घ. स.ति जन अमृत रस
पुष्प. कनि आकाश पृथ्वी गंधस परमानन्दस०

३ ध्यान. ध्यन. धा'रित मन निस्पंदस
क्षण. क्षण. पनुन आचेर वनहस
लगहा न. व्यथि व्यथि अज्ञान द्वंद्वस परमानन्दस०

४ वर. य'मि थि निद्रा दिच मुचकुंदस
कालयवनस सुय काल बननस
पीताम्बर. स.ति ला'गित फंदस परमानन्दस

५ वन.न.भि म्य यछ्य एकादशस्कंधस
बोजनस तव.किस परमंग्रर्थस
मन. राव. निशचल बेहि मसनंदस परमानन्दस०

६ जिन्दगी छ्य्‌फ दिथ रूव देह. जंदस
स्पर्श. रो.स्त वोत तस अपरस
वाठ छुय तसुंदुय प्रथ पैवन्दस परमानन्दस०

७ स्वर यमि ग्रतमुत छुम प्रथ बंदस
गुरु प्रणव.य ध्यान करि प्राणतस
ब्रह्मा ऋष त. यस गायत्री छ्‌'दस परमानन्दस०

८ 'परमानन्द' मेली परम. आनन्दस
महिमा मेलनुक बनि मावस
पान. व.नि इथ पा'ठि रव छुय इंदस परमानन्दस०



(२२)

दितम दर्शन म्य वर्षण तल. बेमार बल. ब. बेमार बल.

१ रापुन रोव न. रोवण. तल.
ब. बंदे कल. त. हावतम रोय
गुपित गंगा भरत निर्मल. बेमार०

२ बखान शिवहू घु शंख.कि बल.
प्रधान छु म नार शशिकलि रहे
रो टुम छल. अ'क. ब्रह्माण्डतल. बेमार०

३ प-रुम ओमकार सोऽहं तल०
क'रम पानस सो.य कल मे
हरव दोप पान ओंठकुन वल. बेमार०

४ अचान ओसुस ब. बीमस तल०
यछान ओसुस गोछुम यी मे
तरुन तार. सो.थि ईश्वर जल०

५ गशुन ओवुम म्य संसार तल. बेमार०
मशान आम सोर गंजरुम मे
दुशान छुम केवल सुन्द फल. बेमार०

६ वनान 'लस.शाह' वो.वुम यी फल०
ग्यवुम रातस दोहस यी मे
चो.लुम वसवास म्य आ'ईन तल. बेमार०



(२३)

श्याम. सुन्दर जी लाल बना खेली बना राधायि स.ति

१ वेल. इथ कोन. खेल.नि नेरव नन्दलालस मेल.ति नेरव
यि छ़ केवल प्रयोजना खेली०

२ श्याम. सो.न्दरस तस कामदेवस राम,चन्द्रस श्रीकृष्ण देवस
अ'सि छय् गा'मच तस अर्पणा खेलि०

३ आश्चर्य छा मेलुन तसुन्द जीवन स.ति खेलुन तसुन्द
पान. ब'नित बिन्दराबना खेलि०

४ प्रेम. आनन्द. व ण़ा वायन तथि मंज ना़नम्योद २ लायन
गछि सुफल मन. कामना खेली॰

५ द्राव पाल.नि वादन सान्यन फुर्य दिनि कर्म फलन प्रान्यन
पाल. व.नि क'र सा'ग्र पा़लना खेली॰

६ आयि जमुनायि ज़ल तन ना वित प्रोन म'शरा' वित नो.व प्रा'वित
शोभव.नि भूषण वर्धना खेली॰

७ अ'सि छय आमच़ असंख्य स्त्रिये तृप्त आनन्द अमृत गये
त्रय गुण क'र.ख प्रार्थना खेली॰

८ वो.सि इथ कोन. विसव इथि रास. कोन असव असव
गेलि कुस मेलि नारायण खेलि॰

९ ज्ञान गव अथि लगुन न. यमस गयि प्रावित परम ब्रह्मस
मोक्ष. पद भक्ती कारणा खेलि॰

१० पोष. कुल्यन मंज देव चा़ये ला'गित बबूर रूदि छाये
च़रण. कमल वरिना सना खेलि॰

११ आ'सि देवता तति दर्शनस पोश वर्षणस हर्षणस
पोश वर्षण त. अविछिना खेलि॰

१२ यूरमुत ओस कुकिलव ओलुय प'तिमि ज़न्मुक चो़लुक होलुय
भोरुक लोलुय बुश गोक मना खेलि॰

१३ पननि शब्द.च. छुन थाल.ज ज़ान छुस भव.स.र.बुज रुस्त वज़ान
यि छु जडमूढ गुहयुल वना खेलि॰

१४ हृदय मंज ह्यथ भगवत् चरण आ'सि तथ निथ सेवा करन
ब्रह्मस स.ति रूदुक न. भिन्ना खेलि॰

१५ सनकादिक नारद मुन्नी व्यास शुकदेव यी करव.नी
राधा कृष्ण.न कीर्तना खेलि॰

१६ लूक. वन.वु.न क्या करि तिमन आ'सि ब्रह्म.ज्ञान घो.नमुत इमन
कथज्ञि करन.च छख कल्पना खेलि॰

१७ रास. अमृत रस गछि़ चो.नुय भक्ती रस य'मि न. चव रूद छनुय
रूद छोन ज़न्मनि ज़न्मना खेलि॰

१८ रस उपदन कर सत भक्ती गोपियव भक्तीवत प्रा'व मुक्तो
मुक्ती छन. भक्ती बिना खेलि॰

१९ द्रायि निमल था'वित वों'दस गयि प्रा'वित परमानन्दस
क'रख 'केशिव' आराधना खेलि॰



(२४)

१ चो'यशित लछ़ जन्म धा'रित चिन्तामन देह अथि आव
देवन किन्नरन गंधरवन दुर्लभ रटुन यहोय देह आव ।

अविना'शी पान. शम्भू यमि शाये अथि आव
आगरो च य कव. लो.गखो हा घर.चे छा़ये ।।

२ अश्वत्थ नोव कुल नाश. रुस्त वोन जनार्दनि धनुर्धर.सय
मूल ह्यो.र कुन लजि बो.नकुन पत्र वेद तथ कुलि.सय
युसुय तत ज़ानि वेद त'मिय ज़ोन पा'र्य जा'न तस शिवस.य आ॰

३ अमृत फल सुय कुल छु दिवान राज़ योगिन ति छोत.ये
हठ. योगियन कर्म कांन्डियन दुर्लभ वातुन तो.तये
रेइ पकुन तोत. सं.ज वुफ ख'ज़र कुलिस.य इथ.ये आ०

४ भ्रम काया माया छै पो.ज़ वोज़ टाठि बोज़
भ्रम त्रांवित रोज़ ब्रह्म.य सर. खर, करत. अंज़ि दो
सत्-चित् आनन्द अद्वैत.य रोज़ि रोज़ बोज़ आ०

५ नज़ि रटुन नज़ि त्रावुन युथुव ओसुक त्युथुय आस
युसुय अन्तर सुय बाहिर युसुय स्वामी सुय दास
पांनि पान अरूप दय साध वन्य. योग अभ्यास आ०

६ आत्म. सांच्छी टाठि ज़ानतो शरीर आव छण भंग
संसार. किस दुख. रूपस योग. लयि च.य असग
भूर् भुवः स्वः च्यय निश द्राव छुख च् सांच्छी च्य न रंग आ०

७ ज़ीव यलि गछि ईश्वरस लीन सुय ज़ीव अद. ईश्वर
विश्व रूपस सुय भर्ता सुय हर्ता गव हर
अविनांशी तस नाव.य अद्वय आनन्द सर.कर आ०

८ हर घरि तै ब. कुसू छुस सुय मरि घर. परि. युस
सुय ब. निर्मल आत्मा ज़ान मरि मो.र जुव अमर गव
पांनि पानै तति सुय घरि वनत. व्याक अद रोज़िं कुस आ०

९ दिव. मरै मंज़ गामि गोम गुपित वनान रुवये
ब, नमा सु युस ब. वनान मन्दिन अंदर दिवये
वन मवनन चृरिम देवी पं.चिम मोच् पत. शिवये आ०

१० अंत रछिन योनियन हव छम्रप. छ्यप्‌रे गिंद. लो
गुर. इयछी हर घरि बोज़ भूर्‌ भुवः स्वः छ्‌.ड लो
यमि योनिये बुछ्तः ऋषो ज़ुत. लाला गव लों ग्रा०

११ रंग. लरि छुम रंग. रुस्त दय प्रथ वान. सुय रंगरुय
नाना रंग धारण सुय ना रंग तस न. गुयर.य
ज़ानी कुस तस निराकारस सारगी यस छि नेत्रय ग्रा०

१२ चेनत.मनँ चिन्ताय मन आव चिन्तामन चित रुप प्राव
खस.व.ने वस.व.ने हंस. द्वारँ पूर्यं आय
ज़ानत. हरमुख. द्रायि गंगा चय दिवये तन नाव ग्रा०

१३ शब्द. ब्रह्मस गछ्‌त लये सो.य प.य कासि मनि खय
खय आवित मन चित गव च़्नतन प्रथ शायी दय
दय टोठ्‌योम ऋषि पुत्रो तस त. म्य दूय रूज़नँ ग्रा०

१४ दय नो.नुय ठोर पननुय मरनुक रस तित्त च्यय
म'रित परम. जान दय छु दिवान मरि मो.र जुव अमर गव
राम लंकायि रूद सन्मुख साक्षात दर्शुन हव ग्रा०

१५ वेद शास्त्र प'यँ प'पं छिय प'यंम.ति जयं गछ़ांन
अपरिस निश. नेरान छिय चोर वेद ब्ययि पुराण
अज़ानतो शब्द. ब्रह्मय परम. पद दयि वथ मान ग्रा०

१६ सहज विचार सहज. पाठ'यस सुय ज़ानि सहज़ानन्द
भूत. विचार भ्रम जानतो विषय रस मूटानन्द
मूर्खं. भावूय निश्चय कर शुद्ध नेरि सत्‌ चित्त आनन्द ग्रा०

१७ निश्चल नित्त सहज़ानन्द कुल अकुल गछि नाशस
भाषि वस्तूय अविनाशी दय निशि ज़ान वछुन. गाशस
बोधि सुय भाषिराज़ योगी च़ेन.वन स्व प्रकाशस आ०

१८ काम. क्रोध. लोभ. मोह. स्पन्द.य ग.ति खोत. छुय ग.तलुय
ईर. सा'रिय जीव धा'री अमि ग.ति कुस छु मो कलय
वस्तु विचार क्षमा सतोष यस छु तस तार सरल य आ०

१९ 'लछु' नोव दय नाना रूप द्राव जगम त. थावर.य
रूप ना तस ना नाव.य परम आतमा सु अपर.य
तत्त्व प्रकाश साक्षात्कार अंदर. न्य'बरै अछ्यर्.य आ०



(२५)

हे दयावान. म्य छुव चोर च्य कोताह प्रारै ।
असि.व नि मुख वस.वुन अोश छुम म्य धारे धारे ।।

१ फाक. दिथ दिथ गयि वासा यति क्याह हा'सिल आव
चारिरस म्या'निस वो.ज़ टोठ मनस इयि आराम
चित. शांती व्रत धारे नित्त दुर्गत हारे अस०

२ छिन. ठीकान प'कि प'कि कुनि अनेकन भवनन
च़ंचल क'र्यम.ति म'सि कूति यमि आवागवनन
कर्म.फल स.ति छुय भारे यथ अट. अनवारे अस०

३ रंग रंग डलनुक सामान. समय छुय इथ प्यव
च्यय शरण आयि पननि करतूतुक तसल्ला गव
हे दयावान' दया का'री म्य कोताह यारे अस०

४ कूति बदकार दुराचार परम्पार क'रित
कूनि बदबक्त गुनाहगार ब यकबार द'रित
कम गछिय क्याह च्य' म्य'त्यय चा'त्र दया बो.ठ खारे अस०

५ मदछा छय ना को.र वां'सि म्य' चाने चाने
ज़यवि कित्र को.र वनुना नत, महिमा कुस ज़ाने
मुय वन नुय भव.सर तारि अद. कस करि तारे अस०

६ काल. दिच. डाल. फिरव माल. करव र.ति र.ति कार
सुब्रह यलि फोल. त. पगाह आलस्यकुय रो.ट दरबार
गयि वांसा गज़रान दिन असि वारे वारे अस०

७ चानि रायि को.र म्य' यि केंछाह ती थव मन्जूर.य
नत. कुस ज़ानि करि.त्र भक्त किया गछि पूर.य
काम क्रोधस लोभ. मोहस मद स.य कुस मारे अस०

८ मूत. विज़ ध्यान थवक प्राण सु म्य' संधारे
वार. 'कृष्णास' निर्मल करि भव. सागर तारे
पद्म, पत्र.कि पा'ठि सर.मंज जल तस कति लारे अस०

(२६)

मो.कलाव मज का'दखानै ।
हा दया वानै वा.लो ॥
हा दयावान. भगवानै हा दया०

१ ब्रूनमुत म्य' छुम ज़ाल मोक.लावि चोन अनुग्रह
छुम ज़ल,र्य ह्यु.व निशानै हा दया०

२ न्यथ. न'नि सं.दि सायेबानै छुस ब. ताप तचि बुडर मंज
त्राव रूदा आस्मानै हा दया०

३ मंमवुन छुस छुमन. बानै बडि दय. करतम दया
बान. लदतं मान. सानै हा दया०

४ प्रथ सौदा छु वान. वानै गछि आसुन चोन भाव
अद. मेलि पूरि परमानै हा दया०

५ छुम व्यठाह बो.ड कारखानै अद वाति चानि प्रियम. स.ति
सत्य देव. सत्य नारायण हा दया०

६ हिय ब. लागै दान. दानै द्रय च्य' छै राधायि ह्.ज
यि मंगै तो दिम च्. पानै हा दया०

७ सों.बरित छुम सामानै वति लागुन च्यय तगिय
अद, प्राव. आश्चय थानै हा दया०

८ छुक कुनिय रूप. भगवानै द्वैत.अ छुम म्य भासान
त्रिभुवन स.ति अज्ञानै हा दया०

९ द्वारिका जन प्रथ मकानै वुछ बनोवुथ कृष्ण' च्यय
यि छु चोन सोन छुय बहानै हा दया०



य'च् काल वोतुम प्रारान प्रारान न्यबर बरस तल।
विनत करान थारान थारान त्वं देव. दीन वत्सल।।
थो कुस ब. जन्म धारान धारान बो.त्र मुचरावतं बर।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर।।

श्री शारिका लीला-लहरी

[तृतीय तरंग]

(२७)

बंद कोर.नस बू. बाशे जगत.'चि वाल. वाशे ।
मो.कलय चात्रि आशे शिव नाथ. अविनाशे ।।

१ भाव. स.तिन इम'यो हर मुख. व'नि दिमयो
मोह. घटि ह.दि गाशे शिव०

२ कैलास कोह. छा'ग.त धारणायि ध्यान धारत
सत् चित्. आकाशे शिव०

३ ज़प. शबनम धारे पपि ब्योल तप. वारे
कांह फोल गछि न. हाशे शिव०

४ शभु नाथ. साधय आवाहन. नादै
सात्रि बोज शुयं भाषे शिव०

५ तार हिम मोह. वावस मायायि द'रियावस
कड दुख. नावि पाशे शिव०

६ संसार.के सरय बो हर. नाव. स.ति तरै बो
काम संकट विनाशे शिव०

७ कृष्णस आप चा'त्रि बहशुस पाप प्रा'नी
शापन कर च. नाशे शिव०

होश दिम लगहो पपोश. पादन ।
हा साधन हं.दि साधो हो ।।

१ यगियन हंदि योग, प्रा'ग्रियण हंदि प्राण.
ज्ञानियन हंदि ज्ञानो
चानि प्रसाद, स'ति सिद्ध छि तप साधन हा०

२ अच्युत. चानि स.ति चित्त.कुय चे.नुन
नत. गछि मेनुन कंजल्यन पोत्र
प्रेम जल. छुय वुजान भाव. नाग.रादस हा०

३ ब्रह्मण जन्मस इथ छुम न. ब्रह्म स्मृ'च
वुछ म, म्यात्रि राक्षस प्रक्'च कुन
चानि सच भक्ती वा'त्र क'र प्रह्लादन हा०

४ पूर्णं पुरुष. छुम चा'ग्री लादन
प्रणव. पान वद.होय चो.न पादन
नाद. बिंद. कन थव सान्यन नादन हा०

५ विचार . नेत्रय जा'त्र गाश अन छि म'नि
हर. हरमुख. च्य दिमहोय त्र'नि
निष्कल. मन निष्काम. राम. रादन हा०

६ अनुग्रह चोन गछि आसनि साधन
क्या छु पापन कमन ज्यादनप्यठ
दय छुक क्षय कर सान्यन अपराधन हा०

७ 'कृष्णाय' चा'त्रि, कपटत्रि तल नेरिहे
अद. कति पा'ग्हि आम. न'वि न'वि
पुश. कति प्ययिहस होंजन त. रादन हा०

८ छो.पि मज तस छो.चरा नेरिहे
अद. कति वनिहे जेछर यूत
याद है प्ययिहस बुज़ि छुस आदन हा॰



(२६)

पा'छ़ दोह यावन.नि श्रावण.नि सूरी।
यी भूल त्याग. कस्तूरीये ॥

१ मत वुछत. ससार.चि वोभायि कुन
मत. वुछत. देह. सो.न. लकायि कुन
व'दि व'दि गयि ल'दि ल'दि लूर्य लूरी यी॰

२ संसार वन छु कस लारि क्या यस छु तस
जेठुन छु ब्रेठुन बस कर बस
यति प्यव सारिन.य पुषि पूर्य पूरी यी॰

३ व्यवहार. बो.ज स्व'स्त अन. घन. घार स्व'स्त
गाट.जार. स्व'स्त ब्रह्म विचार ह'स्त
मूनि हिवि गयि हनि ज़न वूर्य वूरी यो

४ ज्ञान. वैरागुक बन. अधिका'री
संकल्प विकल्प सा'रिय त्राव
ममता पत थाव वय युथ न. दूरी ई

५ मोह. ज़ाल. मंज़ नेरनुक उपाया.
कर. राज. हंसुन साथा त्राव
अमर नाथचिय जानवर जूरी यी०

६ क्रियायि खो.त. छुय शुद्ध वासनायि फल
पूज़ायि खो त. प्रेमस त. मायि फल
'कृष्णस' रायि चानि आयि मन्जूरी यी०



(३०)

कृष्ण. छुक मंज़ हनि लो लो ।
वनि इत मनि रुकमणि लो लो ।

१ सोज़ै ब्रह्म. ज़न्मुक मंज़िमयोर
वासा प्ययिय इख नत. म्य' जोर
विचार. पुल्नि च्य' स.ति अन. लो लो वनि०

२ योग. किस बामस प्यठ म्य' खार.नाव
दोह तार. मंज़, रूदि, म्य' म. प्रार.नाव
मुख हाव तन लाग तनि लो लो वनि०

३ रा,छि छिम च्य' निशि वातनस क.ति
ज़ोर. निम ल'डित, ह्यथ पानस स.ति
च्य रु'स्त नत. क्याह म्य' बनि लो लो वनि०

४ काम॰ क्रोध लोभ॰ मोहुन शशपाल
ज़ेन॰नि आव मे कस वन॰ ह्राल
ज़ोर॰ निम इम ओर॰कनि लो लो वनि॰

५ शरणागत वत्सल छुय नाव
धर्मस यथ नावस म॰ मंद॰ छाव
वीर॰ धर्म॰य चोन ननि लो लो वनि॰

६ भक्त॰ वत्सल॰ छुक बोड॰ बल वीर
मो॰कला'वित निम को॰रहम गीर
आ॰चर म्योन च्य' कुस वनि लो लो वनि॰

७ अ'छि लोसं च्य' वुछि वुछि ईम
दर्शन दिम म ति पातस निम
युथ न जांह अथ॰वास छपनि लो लो वनि॰

८ ध्यान, ज़ापोवन्तस कास म्ह' ह्रान
वासनायि ज़ामोवग्नितयि सान
मनि मन नित॰ दाज़ कनि लो लो वनि॰

९ म्यानि ससार॰ यश॰ कुय मा'जि मोल
तृप्त कर ज़ोवराव मो॰क्तुक ज्योल
भक्ति कुलिन॰य मो॰क्त छनि लो लो वनि॰

१० तन सुख मन सुख भाव भाव॰नाव
सुख॰ सुख॰ ,कृष्ण' कृष्ण॰ सुख ह्राव
अख सुखिया अख सु वनि लो लो वनि॰

(३१)

हे दय. ! बोज़ म्या'नि लोल. नाद कूत गोमुत छुस बदाद ।
इथि दुख. मंज कर म्य' आज़ाद दयाल. बोज़. फयरयाद ।।

१ थि छु संसार भ्रम त. बाज़िगार अत जो़नुस न. कांसि अ'कि
ज्यूठ सो.दराह बे शुमार तार जो़नुस न का'सि अ'कि
यथ न. अंत आसि तत कति आद दयाल०

२ मोह. आवल नि फाट. नोवनस छ्ट. छ्ट. कर. नोवनस
गोस बांबरि थर थर छम नरि जंघ. वाय. नोवनस
वांति लगनस दिम विवेक. पाद दयाल०

३ देह इंद्रिह त. छि परिणा'मी मन छु इहुंदुय स्वामि
अथ मनस पत. पत. दोरुन सो.छय बोज़ ह.ज खा'मि
संकल्पन ह.ज छस उपाद दयाल०

४ चाञि आशायि च्यय कुन आस छ्ट. छ्ट. सकट म्य कास
छुस चोन दास प्ययिनं पास हृदयस मंज़ कर म्य' वास
ज्ञान. अग्न जाल म्या'नि अपराध दयाल०

५ संकल्पन त. विकल्पन स.ति गब म्योन वर्तन
विवेक. नो.म शिल वासन' चूरि नियहम हन हन
होश डालान छुम म्य' प्रमाद दयाल०

६ गोस. क्याह गो.य क्याज़ि रूठहं छायि छय्प दित ब्यूठहं
दूरि रूज़ित लावि मूरे नार ललवून थोवथम
दिम दर्शुन मन गछ्यं शाद दयाल०

७ यम नित आसि सम. चित मन सुय ज़न गव सतज़न
ष़ुतियन मज़ ति छि वसनन यी छ़ वोंन्मुत ब्योसन
सुय छ़ तपजप सो.य छ़'य समाध दयाल०

८ आसि करवुन अजपा जप धारणायि मजत्रावि डाफ
अंतः किनि दूर को.रमुत संसारुक सताप
छुस न. शुमार छुस न. तेदाद दयाल०

९ हे दयालो. ! देह त्याग. विजि नेर सन्मुख पानं
वृत्त म्या'ञय पजि रजि स.ति पा'विज्यन समाधानै
दुभर्लं छ़म पान. युन याद दयाल०

१० निर्वाण. पद दित. 'विष्णस' चावतन विज्ञान रस
रोजि अन्द. कनि शुमारस मन. कामनायि चलनस
हृदयस मंजं रटि चा'नि पाद दयाल०



(३२)

इत. दित. दर्शन भस्माधारै आरै कोताह काल ।
हे शंभो ! रक्षपाल स्वामी हे शंभो रक्षपाल ॥

१ ह्र. दित दर्शन मर. कास्तम आस्तम ना'ली नाल
लोल.चि बबरे तर छुम द्रामुत गोमुत घुम य'च काल
दयायि जल अथ बब्रे सग दित पननुय अथ. च.य डाल हे०

२ मोह. सिधि उदरस मज छुस ईरे य'ति छुम सुम नत. तार
तल. छुम जलकुय नोजर हावान प्यठ कनि छुम गट.कार
नरि छम हृजि ता'य जग छुम बे सो.र किथ पाठि मारे छल हे।

३ कुष.मचि खो. परे मंज छुस प्योमुत प्यठ. छुम कर्मुक तात्र
अ'न्दरी अन्दरो अक छम चाम चं बत. ल्यजि हुंद छुय छात्र
शेहलन खा'त.र प्यठ कनि छकतम अक अमृत जल चाल हे।

४ ईश्वर ! म्यान्यन पापी कर्मन कुस करिय शुमार
चय छुक अनिनाय अत्र.गट कासान चय छुक बखशन हार
य'मि किथि सा'रिय छिय च्य बखनान दोनन हुंद दयाल हे।



(३३)

हे दय. ! बोज कने च्यय रो.स्त कस ब. वने।
करयो अचंने च्यय रो.स्त कस ब. वने ॥

१ समार आवल.नुय यि छ सनि खोत. सो.नुय
अ'पि मज आस ह्यने च्यय।

२ जोवनस मोह. मसे ब्दुम न. दान ह्यसे
उन्मत गांस तने च्यय।

३ हरम म्य कष्ट हन हन हरि हर छक थवुम कन
आ'चं'र आलवने च्यय।

४ सूक्ष्म निर्मल करुम वत प्रत्यक्ष पा'ठिन ब. वुछहत
स ति ज्ञान. लोचने च्यय।

५ चितस सयकल करुम पूर अज्ञान मल गछयं दूर
हे टाठि तिरजनै च्यय०

६ पादन तल. ब. मरै चा'ञ.य स्तुता करै
वार. बार आर अनै च्यय०

७ वासनायव नाल. रो.टहस संकल्पव ब. चोटहस
कोडहस पन. पनै च्यय०

८ दितं सत्सग म्य हरदम इयं शांती त. शम दम
ब'नित आजाद बनै च्यय०

९ 'विष्ण' थावतन समाधान च़ल्यस यव. देह. अभिमान
मंगन छुय क्षण.. क्षणै च्यय०



(३४)

इमय पत. दिमय नाद क्यथो म्य याद प्योहम।

१ च.य छुक जप यज्ञुख जप च.य छुक तप. वनुक तप
च.य छुक साधन हुंद साध क्यथो०

२ च.य छुक योगियन हुंद योग चय छुक प्रा'णियन हुद प्राण
च.य छुक सत.कुय संवाद क्यथो०

३ च.य छुक डय्.क. च.य छुक टिक च.य छुक दूर च.य नजदं
च.य छुक सायंयनय हुंद आद क्यथो०

४ च.य छुक दुख च.य छुक सुख च.य छुक परम. आनन्द म्
च.य छुक कम च.य छुक ज्याद क्ययो।

५ च य छक साधन हुन्द सग चाऩ्रे तनि सफेद
पपोश हिव्य छि चा'नि पाद क्ययो।

६ वेदन मंज़ छुक साम वेद देवन मंज़ इन्द्राज़ह
दैत्यन मंज़ छुक प्रह्लाद क्ययो।

७ रजो गुण. छुक ब्रह्मा सत्व गुण. विष्णु भगवान
तमो गुण. गाशान व्याद क्ययो।

८ धर्म.चि लरि कर्म.कि बर. थाने स.ति अच.न
च.य छ.क क.न त. च.य बुनियाद क्ययो।

९ य'मि युस ज़ोन सुय त'मि मोन च.य छुक ध्यान कर्म
वनै च्यय ब. लानिनि वाद क्ययी।

१० लोल.नि साज प्रेम.कि ब'ग. वायय सोज़ दमा
हतम योर हातम दाद क्ययो।

११ 'कृष्ण' धार.नावुन ध्यान सुय ध्यान यत दपन ब्र
ह्यय शिवराग दित समाध क्ययो।

१२ संकल्प त्रावि_ रटि मन प्राण वासना गालि दिर्
धाऩ्रि दयायि प्रावि बिंदु नाद क्ययो।

(३५)

अंत काल'चि ज़ाल. छुम तमि हाल. निश. रछतम दये ।
दिम अभय वर छुम यम.त्र थर कर दया मृत्युन्जये ॥

१. भव. सागर. दिवयि रंगस आयि कति का'त्याह गये
पार तारुम वो.ठ म्य' खारुम दुख निवारुम मंज़ भये दिम०

२. आस्तं खो.श कास्त दुख मास्तं सन्मुख दये
मन म्य छुम आईन. सूरत साफ कर रटुमुत खये दिम०

३. किथ पा'ठि जिंदै मरव वो.त्र क्या करव वांसा गये
मायि र'टि पनन्यव यरत्र बस. नाव मंज़ शांति शये दिम०

४. वश्य छि गा'म.ति संसारस यश कडनस खो.श छिये
ओर. योर. नित. ज़ोर. म्योनुय मन. च. मंज़ निर्णय नये दिम०

५. नुन शरीरस वा'सि हु'द आराम वुष्मक्यन क्याह लये
यत दपन भूमा छि तत थानस म्य निम सत्गुर पये दिम०

६. निच. म्यानर म्योन लाग.त्र को.स अत लागत छ्ये
पत मो.चक सोरुय च. पानै अथि कालस क्या इये दिम०

७. शून्यकिस शून्यस वनैं क्या तन सो.रुण कांह् वय ह्ये
करत. निर्वासन च. दासन मोत्त मस प्रत कांह् च्यये दिम०

८. चल.नावक ज़ीवत.कि छट युथ न. इछ मूर्च्छा प्यये
फो.लनायक यस च. चित सुय मखचि बागस फल ल्यये दिम०

९ श्वेत द्वीप·कि हिवि मनुष्य कर पालव·नि काल त्रये
मोत्त अमृत प्याल· चाव अज्ञान रुस्त निरामये दिम०

१० गछ शरण 'कृष्णस' कॉरिय अन्तःकरण लय मंज़ प्रये
लूक डॅशन दय सो·रन आलव करण जितेन्द्रिये दिम०



(३६)

हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान अमर पान कव· मशान छुय
१ काल·ञि च्ंजे देह यलि प्यवान सु कुससन· युस मॅरित गव
वो·थान बेहान मोगान सुय यलि गछान देह अद प्यव
देहस च्य क्या हिशर छुयो ज़ुव ज़ान ईश्वर· अंश दो ह०

२ ज़ुव ज़ानव·नी छिय ज्ञान वान·य नतव इम मूढ मॉवस गय
नाना योनियन देह आदिकन कुंमीपाक अर्णवन प्यय
पुण्य पाप कर्म, शापन वॅलिम·ति जन्म-मरन -रोगन त्रय ह०

३ ईश्वर· अंश अग्न त्यंबर अज्ञान· काठस संद·यॅज़े
काठस ह्यथ सुय अग्न त्यंब्रर ईश्वर अंश सांप·निज़े
यि दय, धन· तस यस गुरु कृपा भ्रम· य ससार गंज़,र्य ज़ेह०

४ गोड· छुक विषय मोगन भ्रमन पतव विफल नेरन दुख
काल·ञि सिंघे तिमय तरन सिद्ध यस गुरुजरन परम सुख
महा चंचल मन लय करन सु·रान सुदेव अंतर्मख ह०

५ संसार यशस वश गछि भूत.य थ्यकन देह् कि डबर दो
छम लरि छुम राज्य छुम नाव गोत्र छिम बंध बांधव मित्र दोस्त
थरि पोश ब.र जन गयि काल छटे व'र्य द'यि तिम इम अमर दोह्०

६ सतुक यश सुय इन्द्रिय र'टित सो.रान सु देव आत्म शिव
तुतान नित्य तस देवता सा'रिय पितर सत. ऋषि-चंद्रम-रव
अनेक अश्वमेध-नरमेध क'र्य त'मि ध्यन भवनन हुंद स्वामी गवह्०

७ पतव कां'लि देह प्यवन खोचन तिम टा ठि र'छम. ति इम
चितायि हुंदुय यत्न करन या'ज दज़ि मो.र घर. गछ्न तिम
पतव तस स.ति कुस छुय पकन कस यम किंकर पचंन दो ह्०

८ तवय अमृत कथा वनय मरन. ओठुय हा म'यज़े
मरणाय मरुण गव दय सो.रुन योग लयि सुय दय सो.यंज़े
सहज अमृत च्य गलि गले यम भय. भव.सर त'यंज़े ह्०

९ युथ नो यि कथ व'नि क'नि प'ति गछिय त.गछक गटे मंज़
युथनो यि वथ पक.ज मशिय कठकशि लगक छटे मंज
यि कय यि वध पालन प्रावक दय. घरि मेलिय वो.टे मंज ह्०

१० इमय यथ कथि यछ पछ भ'रक सत्संग नावे त'रित गय
यमि भवसरै स्वरूप विमुख तिमै अकाल. म'रित गय
देह.चि छ़ाये ल'गि मोह. माये पलव पानस फ'रित गय ह्०

११ हरन तिमै सो.रुक न. ईश्वर घरुक भ्रम गोक असुरगय
इम गय शरन तिम व'र्य हरन यम. त्रास. कठिने उद्धर गय
घर बार वर्जित अंदै रूज़ित काल.त्रि सिधे अमर गय ह्०

१२ काल'त्रि च.जे गछान खंजे सुन्दर त. गंदर गछान दो
अन्न पान च्य क्यत रोचान छुयो च्य क्यथ मन अद. पचान दो
कालस हारि भयस तारि च. कोन. दयस सो.रान दो ह्०

१३ कालुन दुर्भय सु क्युन सना जन्म कष्टय सु क्या गव
ईश्वर अनुग्रह यस भाग्य ज़नस ननि छुय पाने उदय शिव
ज़न्म कस सन. सुफल गछे त्युन कंमि सना युथ अमृत चव ह०

१४ इमन भाग्य उदय करान स्वामी सो.रान वों.दे मंज़
आकश. पाताल. तरित गछान क्रीडा करान कंदे मंज़
संगरमालन शीन. इथ. ज़ल द्राव ज़लं बिंदु सिंधे मंज़ ह०

१५ इम ज़नि आसान कुने कुने व्यापक तिम ह्नि ह्ने मंज़
यस लोल ईश्वर. सुँघ घो.न मने तस कोन. तिम् अद वने क्रिये
युस यी वने सुय निय बने इम संमि नित सनि वो.गने क्रिये ह०

१६ मधुर वेह छुय मनुक विषय हा मित्र रूपी शत्रु ज़ान
युत नो फसक लसक न. अदह मन लय कर दैव सो.रुन ज़ान
वेह गलि दह यलि शत्रु गलन नित योग. अमृत चो.नुय ज़ान ह०

१७ इन्द्रिय अति विषय महा वीर.य मन राज़ महावीरन दो
अक वीर दह सास वीर कि इरे भ्योन भ्यो.न दल छुक त्युथुय दो
अंकिस.य कामे सांरिय क्रि लारान क्या तति उपाय ज़ीवन दो ह०

१८ कुस सन. इथ्यन वीरन मारे मन वीर राज़स रटे कांह
मयस कासे मक्ति आसे सु जन यो.दवे टोठे कांह
वुज़मलि सुय रंट आकाश चटे रवस रटे कांह ह०

१९ नाथो ब. नो रानम मंगै म्य रावणुन राज्य करे क्याह
यि कंह देहस प्रारब्ध आसे तत मंज़ हरे त. हुरे क्या
ओपुप दुलभ यन्यीप सुलभ स्वराज्य लोभुन वों.दे मज़ ह०

———

(३७)

श्याम सुन्दर॰ वेह सुन्दर जाये।
वथरै मन मथुराये लो लो॥

१ प्राण॰ पवन॰ स॰तिन मुचरन॰ आये
नव द्वार देह द्वारिकाये लो लो
वृंच गोपियि च्यय वुछने द्राये वथरै॰

२ बाल॰ रठ नाल॰मति स॰ति पालनाये
साछि मखिच् हंज़ि कुब्जाये लो लो
निष्काम॰ सिद्ध कर॰ मन॰ कामनाये वथरै॰

३ टोठयोक गज़ेंद्रस कथ विद्याये
आहिरस कथ श्रद्धाये लो लो
कमि ओचि खुश सांपनुक शिवराये वथरै॰

४ केवल बख॰च हुन्द कर म्य उपाये
स॰ति पननि प्रेम॰ त माये लो लो
वासुदेव॰ वास कर मंज़ वासनाये वथरै॰

५ राज॰ द्वारस चांनिस भिक्षाये
आधीन कर्म हीन आये लो लो
चार॰ कर म्य आर॰कचि सुशीलाये वथरै॰

६ सुदाम ज़ांनित कर म्य उपाये
वो॰लमुत छुस ज़िष्टाये लो लो
खो॰चर॰य म्योन पुर स॰ति पूर्णाये वथरै॰

७ बान. रोस्त द्रांमुत छुस भिक्षाये
त्रूंचमुत दैव सपताये लो लो
भिक्षुकस त्राव राज़ हंसुन साये वथरै०

८ फल. दायक. चानि खल. किन ग्राये
ग्रनुग्रह तोत पूरि त्राये लो लो
वो.वमुत कैंह ति छुमन. कर्म भूमिकाये वथरै०

९ शो.ज़राव संकट ग्रह दशाये
उल्ट. समयस प्यट ज़ाये लो लो
फिरथुर कर च़ सानी कर्म लेखाये वथरै०

१० भाव. मुच़कन्द म्योन पननि इच्छाये
साव मंज़ मोह. निद्राये लो लो
वुजनाव मंज़ स्मृच़ गुफाये वथरै०

११ पानस पत. दोरनाव म्याज़ि राये
सिर्यि रूप. ज़न पो.त छाये लो लो
ज़ाल मद. कालयवनस कायाये वथरै०

१२ मारका'ण्डी ज़न चाज़ि ग्राशाये-
ग्रायस मंगने च्य ग्राये लो लो
कालम ग्रास कर भास जायि जाये वथरै०

१३ ग्रात्मा राम. निवृ'च़ हंजि राये
स.ति पक शांत सीताये लो लो
दण्ड कर प्रवृ'च़ शूर्पणखाये वथरै०

१४ गाल मोह रावणस त. क्रोध. सेनाये
जाल लोभ.चि लंकाये लो लो
विवेक. मन. लक्ष्मणने भाये वयरं॰

१५ सत्गुण प्रक्'च कौसल्याये
मुख हाव स.ति दयाये लो लो
राज्य कर आनन्द. प्रजोब्याये वयरं॰

१६ ज्ञान. ताज दित ध्यान. धारणाये
स.ति स्वतन्त्र ताये लो लो
चित्त तस्तस बेह ह्यथ समताये वयरं॰

१७ होशयार रोज़ मंज योग. निद्राये
ह्यत समदृष्ट एकताये लो लो
तुर्या रूप. मंज राज. सभाये वयरं॰

१८ अज ताज का'त्याह गयि क ति आये
वत.गत यत यात्राये लो लो
एक. कुस्र वोत चात्रि अनेकताये वयरं॰

१९ वीर.क'र्य ईर. चात्रि विष्णु मायाये
बडि दय. बेपरवाये लो लो
इम त'र्य तु. तिम ता'र्य चात्रि कृपाये वयरं॰

२० म्य'ति तार भव.सर. आवल.नि जाये
स.ति विवेक. उपाये लो लो
युथ देह. डंग. सोऽहं हम. वाये वयरं॰

२१   ॐशिव नाव ज़पनाव भावनाये
अज़पा ज़प मलाये लो लो
मन नाव-आत्म तीर्थ-चि यमुनाये वथ्रैं०

२२   राम-चन्द्र० शिव लगह़ोय एकनाये
ह'वित चन्द्र कलाये लो लो
मोह़ गट-कास म्याञि बोज़ मीनाये वथ्रैं०

२३   सावधान मन कर य'ज़मन-माये
योस द्रायि मंज़ प्रज़ाये लो लो
वर तस बो-ञ वा'णी कन्याये वथ्रैं०

२४   विश्वरूप व्यूग ल्यूख कर्मं- लेखाये
स-ति नाना वर्णाये लो लो
शक्तिपात, दृष्ट थव प्यठ निष्ठाये वथ्रैं०

२५   कर्णेश्वर्यन ह्रंस गूर्ये भाये
रास खेल-नि नञि द्राये लो लो
थफ कर कृष्ण-नि' राग- राधाये वथ्रैं०



'लल' व चा़यस स्वमन- बागस वछुम शिवस शक़्त मीलित त- वाह
तति लय को-रम अमृत' सरस ज़िंदय मरस त- म्य करि क्याह

—ललेश्वरी

श्री शारिका लीला-लहरी

[चतुर्थ तरंग]

(३८)

चित्त मोम शांत चोन प्रेम. अमृत चोम ।
ओम् श्रीमन् नारायण नारायण नारायण ओम् ॥

१ बमि संसार. मंज़ पत. लार्यम क्या
दय. नाव स्वरण. रुस्त थावुम म. ज़ांह
चानि भक्ति भाव ख्यो.त कांह परम सुख छा
पत. वन. भिचुका हयुव बादशाह
ओ़ठ.य म्य हास फिर घरि कुय भ्रम गोम ओम०

२ मन. वाजि नारायण नांव स्वनतम
संकट. गटि मंज़ अनतम गाश
राथि मंज़ वनतम मोक्ष पद वनतम
प्रकट वनतम परम आत्मा
क'त्र ज़ाहिश बुद्ध छम थ'व ज़न करत.मोम ओम्०

३ नज़ि ज़ांह्ज्यवहा नज़ि ज़ांह मर. हा
नारायण नारायण करहा नित
चानि नाव. स.ति भव सागरस तरहा
ध्यान चोन स्वरहा थव म्य स्मृत
होश दिम व्यवहार राग द्वेश इथ व्योम ओम्०

४ हकरे बनि मंज मन. गगुराय चाव
योर. खत क्या चाव ख्यत क्या द्राव
कायाथि ब्याग्नि मंज छु आश्चर्यवत वाव
रूप छुस क्युथ क्या छुस स्वभाव
निलेप द्रास पत. क्या ख्योन क्या चोम ओम०

५ योर मय व'हरित तोर माख व'टिथय
को जि मंज फ'टिय.य छुय होख पान
क्या लारि धन' सों बरित पान च'टिथ य
धर्म व्यवहार कर ख'टिय.य पा'ठि
जन्मस इय करनाव धम.च का'म ओम०

६ ब'डि ब'डि कार क'र्य क'र्य क्या प्रोवुम
ध्यक.नोवुम छुम बो.ड खानदान
यश. पुछि मान. पुछि दोह रावरोवुम
लूकन होवुम देह अभिमान
ह्यस फिर म्य मोह मस च्यत पान व्यसरयोम ओम०

७ मृत. विजि माजमल गं'ज रावतम
म'शरावतम जन्म.कि करतूत
यम. किंकर बुथ मत. वछनावतम
नारायण नाव थावतम याद
युत छु त्युथ चत 'कृष्ण' प्रेम दो.ध ओमजोम ओम०



करसै सो.न पोशन माल।
अज़ इयि लाल. सोनये॥

१ मय खा.नके हा कल. वाल असि मय ह्योत चो.नुये
ठ्यालत. त्याल. माल माल अज़०

२ तसुँदुय मय त. तसुँदुय प्याल तसं.दे वान. क.ननै आव
खुँब.चि कुँज़ं तस हवाल अज०

३ दूर्यर त. लो.ग कोताह चाल. मूरे नार छुम ललवोन
शूरे पान कंहि संभाल अज़०

४ यंमि लायि लोल. सोदरस छ़ाल तंमि खोर लालि दुरख्शान
सुय रूद आद्य अंत बहाल अज०

५ तेजोमय युस नूरान. विज़े वुज़नावन गोम
करसै शिल दिल हवाल अज०

६ केंह गय रिंद केंह रिंदान. केंचव रिंदव ज़ोलुय पान
केंह गय अचित च्यवान प्याल अज०

७ दाग सुय ह्यत कुनि गुलालि. बाग.चि हिय सु छ़ाव्यम ना
नावस तून ता"य रटनै नाल अज०

८ केंचव को.ड मुल.क दाल. केंचन निशि हावान पान
केंह गय बर. ज़न गुलाल अज०

९ वंलि म्य तंमिसं.दि लोल.कि जाम अज़ इयि श्याम सोंदर सोन
सुय इयि 'वासुदेव.नि' साल अज०

(४०)

कर हयि म्य कुन गिंदुन दिमस चंदन हार ।
आद्य शक्तिय शिव जियस नमस्कार ॥

१ ओमय आद्य ओमस अन्दर पञ्चाकार
ओम्य ज़गत धारित केवल निराकार
ओमुक निर्णय कुस वनि ध्योन-२ छुस विस्तार
ओमस पार्य ओमम हर मुख. नमस्कार आद्य०

२ ओमय छु सार. ओम.चि स्मुरण मनस धार
सहज़ स्वरूप आनन्द प्रावक मुक्ति द्वार
मक्ति देव. प्रमाण थावक. वनि उद्धार
भक्ति स.तिय लय कर भक्तयो लमक तार आद्य०

३ मोह.चि न्यंन्दरि अन्दर म. गछ गिरपतार
बोघायि अन्दर न्यंन्दरि गछतो खबरदार
स्यो.ध वो.थ न्यन्द.रि इन्द्रिय क्रीडस निश रोज़ खबरदार
दिल थव डंजे लंजि छुय बिहित जानावार
बोलानावुन लोल. पनने सुय सू.य ओमकार आद्य०

४ आनन्दमय ग्नक थ्याल चात्रनय म लापाल
मावनय सौख्य स्वमनि सोऽहं सहाकार
त्रिगुण उल्लंघित निर्गुण छु पा.नय निराकार
अनतन लये मनस स.तिन पनुन यार आद्य०

५ पान पनुन यंमि कोर. सहो. ब. संसार
वही तंमिसज़ सही सां'प.ब ब. सरकार
'वासुदेव.' मेलव देवाद्यदेवस ब. विस्तार
सार सही आद्य अन्तस छुय दरकार
पादि प्रणाम नाद विन्दस छु बारंबार आग०



(४१)

फुलय लंजिम सहज़किस संजीवनन
समय वांतिथ कुनि भुवान मनुष्य ज़नस
सहज़ पूज़ा करि कूँत्राह नारायणन
श्रेयान धर्मक्रुमम्य पनुन निस्त्रैगुणय

गव कल्याण स्वधर्म. मरुण पर धर्म ज़य ज़ान मये ।

१ पर गव यि शरीर बोज देवन तिक्रुय नश.वुनुय
यि करि शरीर रंब.वुन बो.द तांय पश्यवुनुय
आत्म. धर्मी दुख ना हरि तोष.वुनुह श्रेयान०

२ स्वधर्मी युस पांनि पानै पानस अर्चान
अनेक रूपम भेद ना तस केवल यु मो.चान
स्वधर्म. विधा तस बिना कांसि न. व्यचान श्रेयान०

३ घंटायि शब्द ठिवि हस्तुय छ्य वज़वुनुय
सदा शिवस निश. नेरान सुय बोज़वुनुय
बो तन मोरय ओर. योरै सुय रोज़वुनुय श्रेयान०

४ मधुर मस.य ब्रह्म. योगुक च्य गलि गले
दीर्घ. रोग.य सतारुक तवय बले
ननिय सु ईश्वर निश पानस स्देह चले श्रेयान॰

५ सुत.य सुत.य देह. देशस भ्रमर छु त.य
सु जुव म्योनुन युस केवल ब्रह्म छु त.य
वाक् ईश्वरीय रूप नाव तसुंद सु पर छु त.य श्रेयान॰

६ व्य'च़स न. कुने यी ब. आ'स.स तिय दो मो.चस
प्रज़ायि आंगन बाल. पानय रुमा न'च़स
युथ्य ख'च़स थ्यन पोरन त्युथुय व'छ़स श्रेयान॰

७ सु मा डयूठवन नाव गोत्र वर्ण. रुस्तुय
युस दजि नता'य हो खि नता'य छ़्यनन. रुस्तुय
सु शांत प्रकाश सिर्यि ज़न द्राव लोसन. रुस्तुय श्रेयान॰

८ सर्वारंभ.य त्रा'वित युस दयस रटे
तस दय दर्शन सिर्यि ज़न दियि मोह त्रि गटे
दय ललि टोठ्योस सा'यस.य मज तस केंह न मटे श्रेयान॰

९ सु देवदत्तस पोश लागस नित्य नाश. र'सितिय
अकाल. पोशन छुक उत्पन्न आकाश. ख'सिथ.य
ज्ञानान तिम ज़'नि सुकृति ज़नाइम गांश स'सितिय श्रेयान॰

१० स्वछन्द नाय.य ओस पाने सु बा'लिये
युस कदि ओसुम छायि रूज़ित केंह का'लिये
युधिष्टियर जन चक्रवत द्राय सु का'लिये श्रेयान॰

११ स्वरूप.य ज्ञोन भगवान संतव राज़ ऋषव
अनेक. रूपी रूप तस द्रायि अरूप सु गव
सु शांत प्रकाश सुलभातित सलुभ लयव श्रेयान॰

१२ ब्रह्माण्डस द'यि व'नि म्य दिचाम आगुर कते
सहस्र. दलय. फोलित आव सुयोग. वते
सुदर्शनस केंह न. विना लभुम न तते श्रेयानः

१३ स्वतः प्रकाश जानव..नि द'य स्वतः सिद्ध.य
स्वराज्य करान स्वदेशस सु शुद्ध बुद्धय
सधीर रोज़ू बोजु बोज़ू सु धर्म विष.य श्रेयान॰

१४ स्वमाला छुम स्व मने नित्य जपव.त्रिय
सुपद सुवाक सरस्वती छय वन.व.त्रिय
ननिय स्वजात शुद्ध स्फाटिक शांत शोल.व.त्रिय श्रेयान॰

१५ सुजन आसान मस च्यवान छु स्वतन्त्र.य
स बोध मये बोज़वनुय छु स्व मन्त्र.य
सु भक्ति विना भू क्रिया छय न सु तन्त्र य श्रेयान॰

१६ सुवा'दी कम केंह न मन्त्र कुस बनान
सु आनन्द. गण न'दियव इति अमृत फिरान
सु भाग तिमन च्यन इमय अद. न. मरान श्रेयान॰

१७ सु भाष. करान नाश. हस्तुय छुम सुय जुवय
जुवुय शिव.य जुव ब्रह्मा विष्णु जुवय
स्वतः चेतन युस प्रजायि कुनुय जुवुय श्रेयान॰

१८ गुपित कर्म नित्य करान सु कर्म. वान.य
परामर्श छुक स्वभाव छिय घैर. वान.य
सो.गत सो.वथ भाग्य हीनन ना ईवान.य श्रेयान०

१९ सो.जा'ञ किञिय नित्य सो.गत दिवान दये
दुर्भिक्ष न. कुने तति सुभिक्ष सु समये
सुघैर सुसग आद्य अन्त यथ न. समये श्रेयान०

२० अव्यक्त मूर्ती दृष्टमान आव सु चै.नन.य
परम विधान सु स्मृत छम सुधर्मवान.य
सु वा'नो हत्र केवल आन्नद स्वरूप निर्णय श्रेयान०

२१ सु दृढ करान बहु जन्मान्तरन.य सुकर्म
जगत मिथ्या ब्रह्म सत्य सिद्ध गव धर्म
सुधर्म फल द्रात्र 'सर्वं खलु इदं ब्रह्म' श्रेयान०

२२ ब. तस निशे सु म्य निशे दूर्यर. न. क्षण
दूय हव ग'त्रिम कस वनय लक्षण.य
सो योग. कला सु पूजा सु प्रदक्षण.य श्रेयान०

२३ सु शिव वने कस इये सु तेज. मये
सु वासना यस साधकस नित्य सु बोध मये
सु तेज गाशस अविना'छी वुछ हृदये श्रेयान०

२४ सु बूलि करान सुत. आर्यन सु बोध. ओरुय
चिन्तामन देह पारिजातक कुल देव. दरा.य
यि केंह मंगान सिद्ध गछान तत केंह न. ता'र.य श्रेयान०

२५ वय 'लछ' संख्या नाव तस.दि अलक्ष्य सु दय
सु भक्तिमये स्थूल सूक्ष्म हिहूंय सु दये
तस केंह न' अ'न्दी जान त. संदेह दपान तस दय श्रेयान०

(४२)

उत्तम मात्र. सहज़ यज्ञस ब्राह्मण नित्य हुमनस छिय।
देह अभिमान आहूती तिमय परम. हस.य छिय ॥

तति तोर सांरिय आरम्भ दोपन. वांर. वंलिमंति छिय

सहज़य ज़ान सहज़य मान सहज़ चेन सहज़. पान
सहज़ क्रय दोष यो.दवै मो त्राव प्राव सहज़. ध्यान
सहज़ छुय सहज़ रस चित्त सहज़ रस छुय म्य कारण.य
सहज़ पान नित्य प्रज़लान दूरी ना नेरि प्रावनुय
सहज़ क्रय शम्भोहस प्रयि मुय ध्यान पजि धारनुय सहज़ ज़ान०
सहज. लयि चलि मनि खय निशि बनि दय सहज़ानन्द
सहज़ भाव. दीप प्रज़ल्यव गट. चलि मेलि परमानन्द
सहज़ वारि सहज़ पोश फो.लि. फल द्राव सहज़ानन्द
सहज बीज़ आतम तेज़ चिन्मय अविनांशी छुय सहज़ ज़ान०
अविगटि कति सहज़.दृष्टी सोरुय प्रकाश.य छुय
सहज़य शम सहज़य सम सहज़य परम गाश.य छुय सहज़ ज़ान०
सहज़ वति रावुन कति रोवमुत मथि इवांनी
सहज़ कथ छय अमृत जन्म मृत सोर छिवांनी
सहज़ थान योगेश्वर नित्य समाध दिवांनी सहज़ ज़ान०
सहज़ नित्य आतम तत्त्व सहज़य ऊर्ध्वगति ज़ान
सहजय नाद सहज़य बिन्द सहज़य अव्यक्त.य ज़ान
सहज़य शिव सहज़.य शक्त सहज़.य परम गति ज़ान सहज़ ज़ान०

सहज शब्द ब्रह्म.य गव सहज़य ज्ञान 'अ' शब्दय

सहज़य सत्य विचारय सहज़य पर. प्रसाद.य
सहज़य थान अमृत छय सहज भक्ती छय अलवदय सहज ज्ञान।
सहज़ वाद गव संवाद सहज भाष्य गव संतसंग
सहज़ बोलि कूंछाह तोलि कूंछाह जानी सहज बंग
सहज़य सार्यकुय मूल.य सहज़य सारि निशि अ्सग सहज ज्ञान।
सहज ब्रोंठ सहजय पुत. सहज.य यत समयस छुय
सहजव स्वयं नाथय छुय सहज़.य अद ईश्वर कुस
सहजय आद्य अंत रोस्तुय सहज.य स्वरूप अरूप युस सहज ज्ञान।
सहज़ तारक मंत्रय सहज़य संत मार्ग.य छुय
सहजय गव वेदांत.य सहज़य वेद अपार.य
सहज़य तत्त्व बोधानन्द सहज़य ज़ानतो भर्ग.य सहज़ ज़ान।
सहज़य वाति न. लभुना वा'तित हनि हनि छुय
सहज़ यस नित्य अमृत दय. सहज़य मंज़ मनि छुय
दयस गारि सहजचार नित्य नाराण वने छुय सहज़ ज़ान।
सहज़य सिर्यि स्रो.त. छुय नो.न त्युथ छु गंभीर.य
गंभीर सान सहजुक भाव निथ सुर.वुन छुय वीर.य
वीर ना ईर. प्रत्यन छोय तुत मान कुस करि वीर्य
सहज़चि तारचि तूलित तस त. म्य भेद रचिनव कँह सहज ज़ान।
या सुय योताबू य ना कँह नत. बू.य योत सुय न.व कँह
सहज़ बाग अनन्त नाग ह्ययि तति ज़ाग सहज़ानन्द'
सहज वारि सहज़ पोश फो.लि फल. द्राव सहज़ानन्द सहज़ ज़ान।

(४३)

१ म.कलि निष्कल द्रायि सो कले।
वोथ मन.! हा कले शब्द जप ओं॥

२ होश थव वासनायि ध्यान रोजि सम
मन प्राण सत्य भासि सर.फो.लि पम
मान रट पानस विघ्न हान चले वो.थ०

३ कस चावि लोलकिस प्यालय मस
सुय करि तय ओर चावन यूस
लोल.कि द'रयाव. गो.ड पान छले वो.थ०

४ मन बुद्ध सू.ति छुय खूर ता'य हम
सोऽहं रजि सू ति प.वन नावि लम
अहं आ'वित सोऽहं फो.ले वो.थ०

५ प्राणचे त्रकरे शब्द पर.मान
सार रठ बो.ज सू.ति पूर तोलान
सत चिय साक्षी लेख. अमले वो.थ०

६ सोऽहं हायकि सू.ति परमानस
यति तति प्यतरुन छुय पानस
होश थव वासनायि युथ न माल गले वो.थ०

७ शब्द बूल कुकिले गोविंद गो
पीशनूल छिय जपान कृष्ण गोपो
आवुन सूरित कस्तूर कले वो.थ०

८ सो.न खसि कहवचि तार.चि तोल
तोलि सुय रचि रचि य'मि अहं गोल
भ्यो न भ्यो.न मो ल छुय सो.नस सरतले वो.थ०

९ यावन बागस फुलया छम
नाद खस साघान तेज बिंदम्
सत्य लोक समाधि सहज़ प्रज़ले वो.थ०

१० ही फो.जि जारन आरन आरवल
मख्वल गुलाब ज्यि यंब्र.ज़ल
बंबूर छारान छुय यंब.ज़ले वो.थ०

११ मनकिस ध्यानस सोऽहं खानस
संहज़ संदानस सो.रनुय ह्यु व
दम ह्यु सम रोज़ अद. पम फो.ले वो.थ०

१२ कन थव क्या वज़ान टल्द ज़ीर बम
च़ नतो आ'कलो दर नफिस दम
कलि-२ कल घनेयम वुज़ म्य शशीकले वो.थ०

१३ 'परमानन्द.' त्राव फिकिर. त. गम
चिंतामन रत्न सत्य ज़पुन ओम्
बू.य बू.य त्रां'वित दू.य मनि गले वो.थ

१४ ईय ओस रोव.मुत तीय पनने गरे
गोरन दुपनम अतिथय प्रार
ओरुत प्रारान ओश कर मेइयेले वो.थ०

१ निरला वास. दय वरतन त्रिकाल.
कर्ता भर्ता बाल. ब्रह्मचारो ।

भक्ति भाव. कोसम पोषने करे माल.
बाल. गोपाल. नन्द लालो हो ॥

२ प्रथ भूमिकायि मंत्र शून्या वलये
भ्रांति ध्यत करत. चित्त भगवानो
बुद्धि संयोग. साक्षात्कार भास्तम बाल०

३ विश्वेश्वर विश्व आत्मन भगवान.
विश्व रूप. किनि छुक उलसानो
विश्व आत्मानुभव दितं दीन दयाल बाल०

४ शुद्ध प्रज्ञायि हृदि सत् संयोग. मान.
मध्य मायि मध्य भूत प्रज्ञलानो
तेज़स्थ बालार्क तेज दीप्ति विशाल. बाल०

५ बुद्ध लय तन्मय विश्रान्ति स्थान.
चित्त गण. द्योतव.नि चित्त मानो
चित्त शक्तयानन्द. भोगी प्राज्ञ.काल. बाल०

पश्यन्ते यत्–वत् ज्ञेय योगेश्वर.
तत् वत् वुद्धित चित्त स्वप्रकाशो
बाह्यन्तर तेज. निर्भर त्रिकाल. बाल०

७ द्वादशांत· धास· वासी चेतन मान·
स्व सुखस्थान· सुख भोगानी
स्व परानन्द· आनन्दय सर्वकाल· बाल०

८ सहस्र· दल· प्यठ· स्वस्ति ज्योतिष्मान
अंड· पिंड· अखंड· दीप्ति मानो
अप्रमेय· अविच्छिन्न· दिन· दिक्काल· बाल०

९ परात्पर गाशरं ह् दि गाशर·
सर्वेश्वर· बोध· मानो
क्षेत्रान्तर्यामि क्षेत्र क्षेत्र पाल· बाल०

१० सत् सत्य तत् तत्व अच्युत· ब्रह्म तत्व
नित्योदित चिन्‍न विश्वस्वानो
ओंकार· रूप, परिपूर्ण· निर्देश· काल बाल०

११ सारातिसार· सर्व आत्म सर्व आधार·
देवाधि देव· गो धाम· नाथो
हे दात शक्तिपात· करतं उपराल· बाल०

१२ सुज्ञान· सर्वदा सर्वतो भास्तम
क्षण· क्षण· भासतम साक्षात्कार
कृपा करतं भगवान कृपाल· बाल०

१३ पादार्विन्द· अमृत तृप्तावतम
प्रावनावतं परम· आनन्द थान·
पाद· कमलन वंदे नेत्रन ह्·दि लाल· बाल०

१४ दासन क्युत ह्यो.त छुक बडि स्वभाव.
शुभ. दर्शन. वर दिवानो
विदुरस हाक. म्य प्यठ ग्रामुत साल. बाल०

१५ प्रारान प्रारान वोतुम यूल काल.
ग्रनुकूल भगवान. दयालो
ब्रह्मार्पण बोजतम प्रात: काल. बाल०

१६ श्रीधर. सुर. गुरु. बाल. दामोदार.
श्री कृष्ण. बासुदेव. श्री रामो
सुख. मुख सन्मुख ग्रास्त ग्रन्तकाल. बाल०
१७ निरला चानि संयोग. प्राव. यव.ना
सुज्ञान. विज्ञान. ग्रति वृद्धा
दय. गोविंद. दास.य बन. त्रिक. काल. बाल०



(४५)

१ चेतन स्वप्रकाश सर्व ग्रात्म ज्ञानी
सत् चित् ग्रानन्द गण परमाशक्त ।
नित्य सार संवित ज्योत ज्ञोत वानी
कृपा कर मा'जि भवा'नी ॥

२ नित्योदित चित्त रव ब.भासा'नी
विश्व ग्रात्मा चोन ज्योति स्फार
सर्वान्तर्यामि भाव ग्रास. वा'नो कृपा०

३ या द्वादश अर्क. तेजमान दीपिका
स्वप्रकाश गग़ सा चि.त्त प्रतिभा
सर्व तेजोमय श्री महारज्ञी कृपा०

४ दुर्गा अ०यय कर्ता अक्रिय
विश्वोत्तीर्णा विश्वरूप विश्वमय
स्वयंभो सर्वेतः ज़य वा.णी कृपा०

५ परा पश्यन्ती वैखरी मध्यमा
चोरि पाद. एकांग शुद्ध विधा
अनुभव. मात्रा शिव मशिनी कृपा०

६ सम शुद्ध च.तन निस्त्रैगुणी
सुर. गुरु. देव. द्रव चिन्मयी
क्या कर. निष्बुद्ध अस्तुत व. चा'नि कृपा०

७ शुद्ध बोध थावतम विध सुज्ञान.य
सोऽहं शब्दार्थ विज्ञान.य
पूर्णाहंता स्वरूप आसवा'नी कृपा०

८ ब्रह्मार्षण एकांत ध्यत थावतं
अनुसंदावतं सत् चित्त ज्योत
सुज्ञान. विज्ञान. सिद्ध पर रा'नी कृपा०

अनुग्रह चोन बनि यस भाग्यवानस
सुय गछि सन्मुख चित्त मानस
गलि अद. अज्ञान मोह मद मान.य कृपा०

१० अनुग्रह. किञ असि अंधकार कासक
याञ ताञ भासक सर्वतोमुख
सर्व आत्मा पर ज्योत द्योन वा'नी कृपा०

११ आदन. म'जिमय पर नाद. साधन
अन्य नादन हुंद छुम न. अभिलाश
वर चानि तर. कर. पर भक्ति चा'नी कृपा०

१२ भिक्षुक द्वार चोन चा़व भिक्षाये
शिव निर्वाण.कि अभिप्राये
दित. दान व'ड दात. छक आसवा'नी कृपा०

१३ चानि शक्तिपात. वात. ब्रह्म. निर्वानस
परम–स्थानस कर. निवास
भक्तय्न छय मुक्तिदा दय। चा'नि कृपा०

१४ क्षण. क्षण. च़रणामृत चोन चम हा
शम.हा चान्यन पादन तल
शाप पाप शोक संताप कास बा'नी कृपा०

१५ सम्मुख सुज्ञान. अनुभव थावतं
हावतं सुविचा़र. भवसर. तार
प्राराण आश्रित आशि छुस चा'नी कृपा०

१६ सूतक मृतक भय निवारतम
भव. सागर. मंज़. बो.ठ स्य खारतम
अत्यिन आर्चं़र छक कासवा'नी कृपा०

१७ आनन्द मूर्ति अमृतेश्वरी
अमरावती सरस्वती
द्वंद. दोष कास्तं विंध्य वासिनी कृपा०
१८ हिंगुला ज्वाला मंगला काली
पिंगला त्रिपुरी ह्रीं कारी
राज राजेश्वरी पर. राज रा'नी कृपा०
कठिने भव.सर. मत. मंद.ज्ञात्रतं
प्रावनात्रतं परम. आनन्द. थान
१९ कृपा कटाक्ष. तार दिवत्रा'नी कृपा०



श्री राज्ञी स्तोत्रम् ॥

१ स्मृतैर्वान्तर्गतं पुंसां हरन्तीं सकलं मलम् ।
जयत्येषा महाराज्ञी भक्तानां काम दायिनी ॥
२ त्रिजगन्मोहिनी ईड्ये मिहिरी भूत सद गुणे ।
नमोऽस्तुते महाराज्ञि पाहि मां शरणागतम् ॥
३ शेषाशेष मुखागण्य गुणे गुण गण प्रिये नमो०
४ सुरासुर नर सिद्ध वन्दनीय पदाम्बुजे नमो०
५ चराचर जगत्सृष्टि स्थिति संहार कारिणी नमो०
७ भक्त कल्पलतेऽनल्प वाङ्माधुर्य जितामृते नमो०

७ ब्रह्म विष्णु महेशान वन्दिते गिरिनन्दिनि नमो०
८ भक्तानां भीम संसार पारावार प्रतारिणि नमो०
९ निर्गुणे निष्क्रये नित्ये सच्चिदानन्द रूपिणि नमो०
१० राज्ञीस्तोत्रमिदं पुण्यं त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठेत्।
असंशयमशेषेण वशयेदखिलं जगत्॥



(४६)

म्य संतन हिश न. छ्य शांती न शम दम।
च. छुक पानँ ब. कुस छुस. कारतम भ्रम!!

१ दया सागर वनन छिय लूक सा'री
दयाये हुंदि समन्दर छिय च्य जा'री
दया हय म्य करक अथ क्या गछ्यि कम च०

२ म्य ज़न्मन हंदि महा अपराध हरतम
दया करतम म्य मूर्खस लोल भरतम
प्रियम दिम पूर त्युथ दूर गछि यम च०

३ फस्योमुत छुस ब मंज़ संसार. ज़ालस
फक्त छम चा'न्य आशा अन्त. कालस
क'डित निम ज़ाल. मंज़ बख्शुम परम शम च०

४ ब. कोताह रोज़ यति आ'म्ब.र मरुण छुम
कठिन संसारकिस सो दरस तरुण छुम
नितम मंज़ नावि प्रियमचि स्योद रटित नम च०

५ उपाया कर म्य युथ मन रोजि निश्चल
मलिन बुद्ध छम गनेम.च् बनि निर्मल
करुम ग्रंत: करण शुद्ध प्राव. उपरम च०

६ ब. छुस ग्रंदर न्यबर छ्यो्ट खोट क्रिया छम
फकत बोठ खार. बत्रे चा'निय दया छम
गंगा जल ह्यु व बनावुम श्रूच् उत्तम च०

७ शरीर प्यठ नज़र छम छुस ब. ग्रनज़ान
यछ़न छुस मान मा'नित मांसुक पान
ज्ञानुक सिर्यि मंज मोह रा'च् बनतम च०

८ यशस ह्यथ छम विषय भोगन हुंज.य प्रय
दया करतम दया करतम च० छुक दय
पखांडस काम. क्रोधस नाश करतम च०

९ शर.चि शोरह बने छम पाप प्य'च् सू.ति
कोहा हिश बडि छि खोचान ग्रथ वुछित कू.ति
च्. हावुस ज्योति रूप ग्रथ वो.थि जम जम च०

१० च्य छय द्र.य पननि कुत्र र.चि म्य द्वयि कास
च्य छय द्र.य पननि बजर.चि ज.म. जांह भास
चित्तस घननम त. जन्मस जांह म. ग्रनतम च०

११ कुनुय ग्रा'सित च्. नाना रूप, कित्र द्राक
च्य ह्यु व गुणवान निस्त्रैगुण छु कुस ब्याक
कुनिय तत् पद. सू.ति शो.ज़रावतम ग्रोंतम च०

१२ प'तिमि समये यमस निशि मो.कलावतम
च़ पानस ह्य व बनावुम मोक्ष दावम
असा'व.नि मुख फो.लनावुम क्य कोसम च़०

१३ छु सागर चानि कुनरुक सो.न स्यठा ज्यूठ
अ'नित दिम मो.खत नत. खारुन गछ़यं कूठ
ब.कथ सू.ति लाग हम किथ पा'ठि दिम दम च़०

१४ हवा ज़न बन बसंतुक अन च़. क्य बोश
फो.लन बुद्धि योग. बागस होश. किय पोग
तिमन पोशन प्यठ़य छुक शांत शबनम च़०

१५ ब.ब.य करनुक म. थावुम कांह ख्याला
न भाव्य देह देह.चि चाला त. डाला
गल्यम आवागवन रोज़.यम न. कांह गम च०

१६ जगत किथ दरिहे कुस कार करिहे
समय आधीन कुस ज़.यविहे त. मरिहे
छु ठहरा'वित अ'मिस चाने सतुक थम च़०

१७ अगम अपार छुक रिर्गुण निराकार
क्य केंछा यार कर भव.सागरस पार
क'रित सोरुय क्य थाव लोब निरालंभ च़०

१८ अविद्या कास्तम नित्त भास्तम सत
ज्ञान.च ख्यित दितम सो.य छुम परम. गत
अचित़ था'वित क्य पत मो.च़रावतं ओम् च़०

१६ च. सन्मुख रोज़तं अद. चाल सुख दुख
स्वस्थ बो.ठ मो.क्त सत् सागर दियम ग्रख
र'ठित निक होश देह. मंज़ चे नि क्या चम च०

२० स्वतन्त्र थाव म्य चे नुन शेलि ह्युव शम
स्वरूपस तेल.व.निस नशि.. छा कम
प्रियम मस मेली यस कम गेलि आलम च०

२१ पन.नि करतूत वुछि वुछि छुस व. आधीन
'कृष्ण' पननिस स्वरूपस मंज़ करुन लीन
करुस मन लय त. अद. नो.न नेरि सोऽहम् च०



(४७)

१ कलजुग नहीं करजुग है यह यहां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले।
२ दुनिया अजब बाज़ार है कुछ जिन्स यहां की साथ ले।
नेकी का वदला नेक है बद से बदी की बात ले।
३ मेवा खिलाओ मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले,
आराम दे आराम ले दुख दर्द दे आफत ले।
४ कांटा किसी के मत लगा गो मिसलि गुल फूला है तू,
वह तेरे हक में तीर है किस बात पर भूला है तू।
५ मत आग में डाल और को क्या घास का पूला है तू,
सुन रख यह नुक्ता वेखबर किस बात पर भूल है तू।



(४८)

बिल्व पूज़ा कर निष्कल

कल॰ माला धर॰स॰य हर॰ कल॰ माला धर॰स॰य
क्षय करि सान्यन पापन नाश करि सान्यन शापन
जय गंगा धर॰स॰य हर॰स॰य शंकरस॰य

ओम् शिव॰ शिव॰ शिव॰ शंभो ।
ओम् हर॰ हर॰ हर॰ महादेव ॥

१ सुय छु अज़र सुय छु अमर ध्यान पर परात्पर
तस छि ज्ञानन योगेश्वर आश्चर्यंक आश्चर
ज्ञान गाश अनि योग॰ नेत्रन वुछनावि आश्चरस॰य क्षय॰
२ त्याग॰ वैराग॰ चित॰ सीस्त थावि करनावि ब्रह्म॰ विचार
सतचे वति पक नांवित ज़ाननावि ब्रह्म॰य सार
आत्मा॰ बोधुक ज़ल वुज़नावि ब्रह्म भावकिस सरस॰य क्षय॰
३ हाथ गछि देह॰ अभिमानस अज्ञानस गंडि लार
अच्युतचे स्थिरतायि सू॰ति वत थावि ब्रह्म॰ आकार
तमि गुण ब्रह्मविन् साधन पादन अंछि जरस॰य क्षय॰
४ संसार यश भ्रम मांनित मन किनि थावि उदास
योग॰ ज्ञान ध्यान॰ सो॰स्त थावि बस्तियि मंज़ वनवास
चिन्मात्र ओत मुंचरावि मंज़ क्षण॰ मात्र॰स॰य क्षय॰
५ अंत काल चि ज़ाल कांसित चित्त थाव॰नावि निष्कल
च॰दुन चंद्रम॰ काफूर ह्यूब मोख सुय हावि शीतल
सानि पालन॰चि आज्ञा दियि अभयस त वर॰स॰य क्षय॰

६ धर्म. ज़ोर दियि तोर मुचरावनावि श्रद्धायि बर.स.य
ध्योर स्वारि चूरिमिस पोरस बसनावि शांति घर.स.य
कर्म. फलकुय बोर लो.चरावि देह् भ्रम किस स्वर.स.य भय०

७ सिर्यि ध्रुव प्रत्यक्ष भासित नित्य सन्मुख भा'सित
सतचे वति पकना'वित अज्ञान. गट. का'सित
आत्म. बोधुक दीप ज़'लि थाव.नावि मंज़ मरस.य त्रय०

८ बन. का'चाह् छय स्त्रियि पुत्र प्रिय अथ दपान माया ज़ाल
इथि ज़ाल. मंज़ डाल. दित कडि चट नावि मोह्. जंजाल
अतलास वलनावि सन्यास. व्'च थावनावि मंज़ धर.स.य त्रय०

९ कर्म हीनस दुर्गत हरि द्रार्यद्रस करि नाश
पालना सा'ब.य छस मटि गटि मंज़य अनि गाश
भार ह्यनस तारि "कृष्ण"स यथ भव. सागरस.य भय०



(४९)

वाक्य

वैकुण्ठ वासी श्री टिक काकजी

क्या सन गोम तत संवित् मुलस
बो धनै यो.दवै पो.श बन.खय
भ्रम रोवुक ब'भि रतन त. माकन
अमि रत.चि त. माकचि भो मर भय ॥१॥

मोग. बो.ज़रन थल छांगरि कोर.नक
लांग.थें लोगुत आ'सित राज़य ।
प्रकाशमान पान पान. निश ख'टरोवुत
पान प.ाट.नोवुत रत. त. माज़य । २ ।

आयस कदर नव ज़ोनुत वानय
शीन. मा'ग्नि ज़न मान. ज्य'गलित गव ।
वांज़ वान. वनत. यो.द बद्ध स्या वाग्नि
ज़ोनुथ नाव व्युत्थानय मैरव । ३ ।

देह छुय आयुकिस आ'मिस पनस
अलोंद, करान छुक शुर्य मावे
यि को.रुम त. यि कर. मरिके म्यान्यर.
कव. लो.गुख वासनाथि ज़ाल. माल वारो । ४ ।

घर. घर. करान हर. हर मोठुयो
मर. मर. को.रुथ अमर पानय ।
अस्थिर विषय वासना ग्रस्त पा'र.थ
मूढ. कोन. रूज़य स्मरण वानय । ५ ।

प'ज़ कल आ'वित पर कल प्रा'व.त
कृ'छि गाश रा'वित सपनुक अन्ध ।
विद्या सा'वित मोह् वुज़ना'वित
दृढ. संकल्पन करथ वन्य सम्ध्य । ६ ।

मूढव वूज़य सत.चि पथा
पामरव ग्यवन चि कथा ज़ान ।
रात दोह रावरोवुय तिमव वृथा
शों.गि शों.गि वीठि म्य'चि रथा ज़ून । ७ ।

स्यदलै स्यदिय सोरुय पानै
अथि छयि यि कैंह छुक छांडान ।
रावनै रावरुत गाह ज़न मानै
ज्ञान. उलसावतो यि अज्ञान ।
ज़ोर कव. बन्योक बोज़न.कि भ्रमय
ज़ानन.कि भ्रम. कव. रावरय ज़ान ।



ॐ नमस्त्रिपुर सुन्दय ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(पचंम - तरंग)

(५०)

प्रये चाने दयो नेरय ।
व. फेरय दरद. नयि हू हू ॥

१ ह्यतन सु.तिन पनुन रहबर गछक को.त रठ च. पननुय त्रर
न्यबर मो नेर च. अछ. अंदर दिलुक दिलबर छु सोऽहं सो प्रये०

२ च. अछ. अन्दर पनुन वुछ ओल च. पानै छुक घरुक घर वोल
ग्रटै फेरान महीन नेरान ब ज़ोर आव सोऽहंसो प्रये०

३ छय गफलत गट गाशस ठो.र तमिय गाशे घ'रित छुय मो.र
शबस खसान दोहस वसान शब.य सेज़ान छु सोऽहंसो प्रये०

४ छुखै रिंदान. कतरस प्यठ छु कतरै कुलि द'रियाव च्यथ
छ द'रियाव. दुर्रि अरफानै गुहान पानै छु सोऽहं स प्रये०

५ रब.य छुय सब सब.य छु'य रुत्र सपन रिंदान. बाज़ानै
छु हा'सिल बा सफा वा'सिल छु हा'सिल आशकै हो हो प्रये०

६ हुवल अवल हुवल आखिर हुवल ज़ाहिर हुवल बातिन
हुवेदा शाहि शाहानै वज़ान पानै छु सोऽहं सो प्रये०

७ अथव पनन्यव ल्यूखुम नामे "मकुंद रामै" पनुन अवहाल
यि कँह वव्याम. ती ज़ामै म्य अरामै छु सोऽहंसो प्रये०

(५१)

रामन सिद्ध क'र म्या'ञ मन. कामन
दामन रटस नित प्रभातन त. शामन।

१ महागणेशन ऋषि सिद्धि नाथन
नादन म्यान्यन यलि थोवुम कन
प्रजल्योम त्यलि गटि मंज सिर्यि हि.यू शुद्ध मन दामन॰

२ लूक. सरयि मज सरि गरदान श्रोसुस
वृ'च. लूकन निश हृर्षिदेव गोमुत
श्रोसुम भक्त मो कुल लो .गमुत वो.लामन दामन॰

३ शिव शक्ति पोश फो.लि जीवन मुक्ती
फल. द्रास अभिन्न अर्थ रस नाश. रुस्तुय
केवल हृदयस निष्कल जामन दामन॰

४ भक्ति भूमिकायि गुरु युक्ति बीज वो.वुम
वेद. थलि मंज सांख्य. सग स'गरोवुम
सिद्धांत. सोंतन त्य'लि क'डिस बामन दामन॰

५ शांती सीतायि मल गो.ल भूमिकायि
हृसो सोऽहं चरणन चर्यायि
नित लो.गमुत अमित ठोकित लक्ष्मन दामन॰

६ द्रोपदी का'ली पाप बाय खा'ली
करम.चि कुरुक्षेत्र शुद्ध य'च. काली
कृष्ण.ञ बहाली य'छ्य बलरामन दामन॰

७ अर्जुनस सुदर्शन. मुक्ती सा'पुज
गोतायि नित्त गावान गीत कृष्ण.नि
सो.य कल य'छ्म.च निष्कल सुदामन दामन॰

८ राज़. हंस सुंद साय प्यव मन. मथुरायि
वासुदेवन त. यो.छ् देवकी मातायि
सो.य जाय मन्ज़ूर क'र आरामन दासन॰

९ व्यासन वास को.र शुक. स'दि भागे
भागवत् ग्यो.व त'मि श्रीकृष्ण. रागे
ज़ागि कोन. जिज्ञास पय पैगामन दामन॰

१० नारदन नारायणस थी ओस मों.गमुत
साम वेद कृष्णुन रा.स मंज़ बूज़मुत
प्रय म'रनस अक्रिय 'हलधर रामन' दामन॰



(५२)

लयि दर्गि त्रो.परित सपद मावरयो ।
हर. ज़ीव. पर.यो सोऽहंसो ॥

१ मन सर. तन नाव. यछ् पज़ भरयो
प्राण. चूर हाविय गटि मंज़ गाश
इन्द्रिय शो.मरित आनन्द भरयो हर॰

२ गारस म'चि्थ·य वनवास मरयो
अथि च्यय इययो सोऽहंसो
सासा म'लित हय हंसो परयो हर०

३ गोकुल ग'छि. हय तवकल करयो
अथि च्यय इययो गाशो हो
शम सो वा'तित हम् सो परयो हर०

४ ओमके रस. सु्ति दिन त. रात मरयो
च्.य गोस ब.य तय ब.य गोस च्.य
वर्षण. तमिके दर्शन ब. करयो हर०

५ भूट. संसारस दोह तार मरयो
ताशोक छुम म्य चोन माशोको
आशक ला'गित च्यय पत. मरयो हर०

६ 'हनस थ्याह ताम्र हा ब. क्या करयो
रा'वित अथि इख 'लस-शाहो'
हर गुण चूज़ित सत नाव सो.रयो हर०



(५३)

अर्पा'य यर्पा'य चो.पा'य पानस ।
ब. पा'य लगस नाये लो लो ॥

१ शाह फेरि पानै शाह नत. कंमि खा'यें
ब्याज़.चि गयस त्राये लो लो
ज़ीनित छु बापा'यें हा'रित गव ज़ा'यें ब०

२ सुलम तिमन.य इमव. तिम गा'यें
नत. छा अंदन न्याये लो लो
दयि लांनि वंव्मम.च् न.ज़ि मंज़िमि या'यें ब०

३ सु दपि पानै मा खसनम बा'यें
ब. दप. गयि लायि लाये लो लो
रूद क्या मूद क्या नुकसान कंमि चा़यें ब०

४ कालन ज़िथुर्यें मा' ग'र्यम.ति मा खा'यें
इम ख्य'लि कत्यू द्राये लो लो
पुज्य मा रंङ्गि चौपांनि या ता'य चमा'यें ब०

५ वाति मा दादम सु सा'द मका'यें
दायि अकि च़लिहम वाये लो ल
दो.पनम च़. बलक चालख्य वेमा'यें ब०

६ मरिन. कूंछा बलन इम सा'यें
मो थाव वों.दस ग्राये लो ल
'परमानन्द' हाथ छु सा'र.य तया'यें ब०



(५४)

भेद. दृष्टि सांन्य हार पर्नान कुमर.चि द्र.य च्य छौ ।

१ सत. मुख. प्रवतार धार मो.ह प्रमुक दैत्य मार
भव.सागरस कर म्य पार पननी०

२ वारिरस मंज पांच दोह इन. त. गछनं दित म्य छोह
युथ न. अस्थिर. जान सार पननी०

३ नश.स.य मंज बुद्ध न'शित युन गछुन गछ्यं म.शित
कर नायुम सत् विचार पननी०

४ ध्यान शम् दम् धर्म दान तप जप छ्यथ योग ज्ञान
कर दया कैंछा म्य यार पननी०

५ मूलं.बोज सू.ति रात दोह छिम समेम.ति पाप. कोह
शोरस.य जन गंडत. नार पननी०

६ इयतनै वो.त्र म्योन प्रार युछत. म्योनुय ठग. कार
अनुग्रहकिय लदत. द्यार पननि०

७ आसि यो.दवै गाट. लार क.नोन इयस न. हार
दिम ज्ञानुक गाट.आर पननि०

८ छुस ब. मदुक लान.दार सा'र्य छिम गर्वकि म्य यार
कर.नाव निष्काम. कार पननि०

९ छुस ऋणान हुंद कर्जदार मत. वावत पत. लार
लो.च़रावतं कर्म भार पननि०

१० नाव छुय संसार. सार भव.सरस दिम म्य तार
पत. नितम शोमियार पननि०

११ त्रा'वित गोम लो.कचार यावन म्रोस म्रंधकार
रछ बुडिस छुम नाबकार पननि०

प्यव म्य कर्मुक कुल छ'नित चो.ल म्य चित्त बुलबुल वुछित
हाव नो.न योगुक बहार पननि०

१३ खो.ट छु म्योनुय व्यवहार म्रावनस मत छुम न. वार
थव म्य निर्मल निर्विकार पननि०

१४ 'कृष्ण' करनाव मत विचार थो.द छु चोनुय मोक्ष द्वार
जन नभस कुन रेह् म्य खार पननि०

---

(५५)

संकट कट म्रथ रठ दयाले।
चट् सोन माया जाल ॥

१ वो.लमुत छुम म्रमर म्रकाले भ्रम. काल. सर्पन नाल
मो.कलाव चलनं काल.सि जाले चट०

२ ताप रुस्त तर. फो.जि बंगरमाले खसनस छुम वो.ड बाल
निष्वुद्ध वृद्ध छुस दिम कल छाले चट०

३ शक्ति पात सू.तिभिक्षुकस कृपाले दात. बन. छुस कंगाल
जीठिस मजिलस वात कमि ह्राले चट०

४ अख अ'छि नाठा करत श्याम लालै अशि सू.ति भ.रिथय छि लाल
ना'लि छुनहोह भक्ति भाव मु.क्त मालै चट०

५ नेर.हा मंज़ घरिके जजालै टोठ छुम अन्न धन माल
तत मंज़ थावत त्याग. स्यालै चट०

६ हाव. का'चाह देह. अमचिय चालै का'लि मा मुख हावि काल
सूक्ष्म स्थूल स्योन रछ त्याग. संभालै चट०

७ अन्नजल असि सान भोग इत. सालै भरनाव अनुग्रह थाल
आतमा तृप्तो दिम बो.छि क.च चालै चट०

८ असि कर्म. हीनन दोन. दयाल काम क्रोध लोभ मद गाल
दुख हार गगनस खार पातालै चट०

९ का'त्याह बलवीर समयिकि हालै स.ह आ'सित गयि शाल
राजन नाव प्यव खरि दज़ालै चट०

१० पुन्यवान थव शांतियि व्रत पालै स्योद कर हो.ल कपाल
नत. कर्म. लेखा क्यथ. पा'ठि डालै चट०

११ या'र ह्यु सब्ज़ कर मृत. हर्द कालै पशु भाव.चि लशि ज़ाल
मो.क्त बनाव त्राव अषत्रे चालै चट०

१२ प्रेम.चि जमुना व'छ नाल. नालै ज़न छुस माला माल
तन नाव गोपियि ह्यथ गोपालै चट०

१४ ज्ञान मुख हाव त्राव मलालै म्य म. बनाव गो फ शाल
स्फूर्तियि सीमिञि म'शराव छालै चट०

१४ फीर्य फीर्य क्र्या वाति व्रज वंगालै ह्यय काशी नैपाल
मुख हात्र पननि देश. प्यठ वंगालें चट०

१५ प्रवृ'च म.ज निष्कल. कल वालै निवृ'च. नश. दित डाल
'कृष्णस' मोक्ष मस चाव प्याल. प्यालें चट०



(५६)

अज सा'ञ विनती सत्गुर साधय., कुनिय नादै बोज ।

१ रातस गं'जर्यम नभ.चे तारय
कृष्ण. चं.द्र. इत प्रारै कूत
श्याम. रूप. सुबह फो.ल इन डलि वादै कुनिय०

२ विज्ञान. रव. चूरिमि पद्म पादे
चि.त्त बबूर सोन व्यूर ह्यन द्राव
गीत ग्यवि चानि मत्सग. संवादै कुनिय०

३ मायातीत अंत रस्ति अनादै
कुस अखा चा'निस अन्तस वोत
हे अगम अपार. आखकि आदै कुनिय०

४ मंज चावि माया सागर. उत्पत्त
छिय गछान ब्रह्मांड बुद्बुद वत्
अवतार कारण देव अगाधै कुनिय०

५ चित्त अवलक चो.ल को.त पक. प्यादे
स्यज़ि वति को.छि क्यत रुन पकनाव
छुस पथर प्योमुत करम इस्तादे कुनिय०

६ उन्मत्त भूता छुय जगत गोमुत
तथ मंज़ प्योमुत छुय ब. अनज़ान
सु विचारस वात. चानि प्रसादे कुनिय०

७ पानै सोरुय छुक उपदावन
कल. गिलनावन बु.ति छुस कांह
पो.त ह्यत. हथि भ्रमके अपराधे कुनिय०

८ मेघ, वर्ण. रञ्जत. व्यवहार.चि त्रटि मंज़
गह्स्त गठि मंज़ नो.न हाव गाश
अमृत चाव प्रेम. शब्द. अह्लादे कुनिय०

९ म्यानि भक्ति भावनायि हुंदि प्रह्लादे
सर्व आतमा भाव सम दृष्ट प्राव
सुख दुख सम ज्ञान मंज़ कम ज्यादे कुनिय०

१० बुद्धि योग. होश. गछि. जीव. भाव मशनुय
वशानुय अद. चलि दोन आलमन
इथि मशन.कि नत. याद.कि यादे कुनिय०

११ अनुग्रह. चानि सु.ति भोग भोंठ. इयतन
'कृष्णस' प्ययतन भोग.नि तिम
एक. रस. ह्यस दिस ताल किस्वादे कुनिय०

छुक मोक्ष दाता पान. च.य केवल सतक विचार दिम ।
यी गछि. आसुन तीम्य दिम योगुक ज्ञानुक सार दिम ॥

१ सन्मुख इतं सोरुय नितम युतमुत यि छुय फीरित सतम
भक्ती दिनम भक्ती दितम भक्ती हुंदुय दरबार दिम०

२ भक्ती होशस थ्यत मंगय मत. नचुनावतं वित बंगय
भक्ती कोंगय जामय रंगय सुय रंग.नुक विस्तार दिम०

३ मोह किस ज़िनिस दज़ुन स्वभाव च य ज्ञान. रूपी अग्न हाथ
भक्ती हंज़य रेह प्रज़लाव अज्ञान. शोरस नार दिम०

४ ममतायि लंका ज़ालतम भावुक विभीषण पालतं
श्रीराम. मोह मद गालतं यथ भवसरस तार दिम०

५ भक्ती त. मुक्ती शं भि च्यथ मन क्याज़ि तत प्यठ लोभि ञ्य
भक्ती दितम भक्ती दितम भक्ती ज्य बारम्बार दिम०

६ छुक भेद हस्त शिव कृष्ण राम आसन क'रित प्यठ परम्. धाम
प्रारान छुसै च्यय निश इनस जल्द य बो.ञ आंकार दिम०

७ मिथ्या पदार्थ क्या मंगय तिम भोगि बो.ञ आसै टंगय
शांत गछ. अद सु.ति सत् संगय इछि. मछिच् हुंद आचार दिम०

८ वा'सा गयम मिथ्या वनन कथ करन. हस्त छा केंह बनन
छुस लोभ. फल पेहनस अनन बो.ञ भ्रट.चिय अनवार दिम०

९ करुणावतारस च्यय सो.रित ताकम म्य तारस थप क'रित
पारस बनावुम श'स्त. रस नारस क'रित गुलज़ार दिम०

१० छुय क्या म्य चारुन छो.त कृहुन छुम मज प्रत भोगस च हुन
छुम अरसरव रुस्तुय बिहुन शुमरित म्य इन्द्रिय द्वार दिम०

११ काया छुय म्या'त्रि द्वारिका च.य छुक 'कृष्ण' परमात्मा
मंगन सुदामा छुम भिक्षा सर्व ऐश्वरी यकबार दिम०



(५८)

राधे श्याम हरि कृष्ण अरे प्रभु गोपाल ।
गोपीनाथ मक्खन चोर मदन मोहन लाल ।।

१ मेरा मन है जमुना जी वृत्तियां गोप ग्वाल
वह है प्रेम अमृत रूपी जल से माला माल
उसमें नहाओ खेल बयाओ बालकपन की चाल गोपी०

२ देह भ्रमरूपी शेर को है मद से आंखें लाल
उसको पकडो खेंचो बांधो मारो उतारो खाल
इस सिह आसन के ऊपर अपना आसन डाल गोपी०

३ हम तुम पर अर्पन करते हैं तन मन अन्न धन माल
सब प्राणों से तुम प्यारा हो न्यारा हो अकाल
हमको मोह से मद भ्रम से दुख से गम से टाल गोपी०

४ क्या करे हमको मथुरा काशी गोकुल ब्रज नैपाल
साडी चित्त नगरी में बसिया तुम हो दीन दयाल
भगतों का तुम पालन वाला तीनों जगत का पाल गोपी०

५ हम गृहस्थ में फँस गये हैं काटो माया जाल
फकत तुम्हारा आसरा है देख हमारा हाल
कृष्ण को शुभ दर्शन देवो लेवो अपने नाल गोपी०



(५१)

वाक्य

प्राण० स्मरणीय स्व० श्री टिककाक जी ॥

(१)

इन्द्रिय द्वार ज़ानुन ज़ा'नित सुज्ञान
विज्ञान मोनुत प्रकृत लय ।
ज़ा'नी ज़ान परज़ान परमात्म.य
तव. ज़ानन सपनक देव तन्मय ॥

(२)

वनखय केंह वन छो.पि हुं'दि मुखय
वोज़खय केंह, पो'ज़ त्रोवरित कन
इच्छखय पूर्ण हृदय सुखय
कर्म कर केंह ब'नित निश्चल मन ॥

(३)

कॅंच़व वो.नुय वुछुन केंछाह
वुछव.न्यव कॅंच़व केंछाह न. ।
साक्षी चैतन परमार्थ बोधस
कारण कुनि केंह रेंछाह न ॥

कँचव मोनुय कँह क्या वुधनुय
वुछव न्यव वुछुन कँचव मोन।
कँह कँह कँचव अनुसंधोनुध
कँचव बाह्य ज़ा'न ज़ा'न प्रेरक़ोन ॥

(५)

युसुय बाह्य स्फारस प्रावे
अन्तर्मुख सुय उलसावे।
सन्मुख भावै सुय शिव. मुख हावे
एकाकी शक्त दो'यि मुख. छय ॥

(६)

पोज़ प'ज़राव पज़ि पो. ज़निश. अनुभाव
प'ज़ि ज़्यायिव पज़्युक रुछ भाव।
पचनूय पालुन अपुज़ गालुन
अपुज़ भ्रम. पोज़ ब्रह्म. स्वभाव

(७)

पज़्यव कनव हमव बूज़ुव पो.ज़
पज़रुक र्निनय पोज़ तत्तन।
क्षण क्षण सत अमि किच नित्य स्य'ज़रुक
रज़नी दिने शो.मरित मन

(८)

प'ज़िस त्यठ यस यछ पछ. आसिय
पज़ि पुछि. राव.रि न्य'न्दर त. नेह।
पो ज़ बोज़न रस. मस च्ययि स्वा'सिय
पज़ि विना मास्य. न. तस कुनि कँह ॥

(९)

भय. निशि रछि रव वन गाह ह्यटे
छटे मजय क्येठे गाथ ।
भैरव भक्तयन रछि मंज ग्रटे
छटि गटि प्रकटावि स्वप्रकाश ॥



(६०)

आक नन्द. गोरिनि श्रक. नन्दनै ।
श्राक जगि कास.नि मोह. श्रँधकार ॥

१ यादव कुलके कुल दीप - कै
लोल. चानी चोलुवन. श्राव संसार
व.ल. सोन श्रज छुं पोश. पूज्ये श्राक०

२ लो.लकि मंजले लो.लि लो.लि करहै
मो.लि ह्यमहत छिम न. मुखत त. वार
मुक्त गछ़हा चानि शुभ. दर्शनै श्राक०

३ ज्यो.न चोन जगि मंज सिर्यि उदये
नत. वन जगि मंज प्राण आधार
लगहाय नावस रघु नन्दनै श्राक०

साक्षात्कार चोनुय श्रवतार.य
चार. श्योन भव.सर. लगिहं तार
'परमानन्दने' कृष्ण. गन्धरै श्राक०

(६१)

कस क्या छु जेनुन यमि ससा'री।
सा'रिय गयि हा'यं हा'रिये ॥

१ को.त गयि बब न' मा'जि भा'य बंध त. या'री
अक अ'किस तिमन. कांसि कांसि प्राचिये
ता'र ल'जिन. तस यस यलि वा'च़ वा'री सा'रिय०

२ यमि देह. पुछ़ि क'र म्य बान निसा'शी
बांयन प्यठ खा'यं बा'रिये
कुनि विजि दजि पत. चित्तायि ना'री सा'रिय०

३ कंचन गुयं 'स्ति रथ सवा'री
कंह न्यथ.ननि त. नन वा'रिये
वुछि वुछि बुछि इम काल. शहमा'रो सा'रिय०

४ नाम. रूप. जंगलस कर्म. कुलि वा'र।
विगि विगि गयि उजा'रिये
उत्पन्न म्यो.न म्यो.न उत्पात सा'री सा'रिय०

५ वासनायि ब्योल ब्ययि न'वि नोव खारो
भो.वि भो.वि बारंबा'रिये
व'वि व'वि लोनुन हरद. त. हा'री सा'रिय०

६ जगत अरहटस देह तोल. वा'रो
कर्म. रज़न.य चा'यं चा'रिये
छ़रि लट. लट छक पोश्न सा'यो सा'री सा'रिय०

७ मनुष्य मोर प्रा'वित देव हितकारी
यथ मंत्र सर्व आधि का'रिये
गछि न रावरुन छु दुर्लभ त. दुश्वा'री सा'रिय०

८ छ्ययन. गोमुत पान परम. सुख. धा'री
मटि ह्यथ कर्म दुख मा'रिये
मोह. भ्रम. राज़. आ'सित बेचा'री सा'रिय०

९ व्यथि कोच् मो.कलन य'मि अँधका'री
सत् सिर्शिकि चमका'रिये
चलनस न्याय बलनस बेमा'री सा'रिय०

१० योद कां'सि मुच़रन वरुन ता'री
अनुग्रह अनुभव धा'रिये
चारनस त. खारनस लगि विचा'री सा'रिय०

११ भक्ति श्रवणन बोजि कन धाय' धा'री
प्रेम नेत्रव अ.ष तार्य ता'रिये
साधन गुरुन लभ्य पादन पा'री सा'रिय०

१२ वणस तत्व उपदेश उपका'री
करनस पारं पा'रिये
वे इख्तियार द बनि बा ख्तया'री सा'रिय०

१३ "लछमण" परम आनन्द चोपा'री
साक्षी छु साक्षात् का'रिये
पानै पानस करि छ्का'री सा'रिय०

(६२)

कामि यम. भय चोन प्रेयम त. लो लो ।
ज्यो, न मवन त. युन गछुन छु भ्रम त. लो लो ।

१ नित्य नियम. युस वि करनस लगि भक्ति चा'ग्र
मन तुरगस. छ्यकि र'टित वगि भक्ति चा'ग्र
पय सहजुक दियि रगि रगि भक्ति चा'ग्र
अनुभव भो.वि अनुग्रह अगम त. लो लो ज्यो न०

२ पत. लारनस अष्ट. स्यज स्यो.ध बुछ्यथ्‌क न. ज़ांह
असि सायंन.य सु गोमुत ओ.द बुछ्यथ्‌क न. ज़ांह
तस विन युस छु सयिन.य थो.द वछ्यथ्‌क न. ज़ांह
शांत एकांत प्रावि शम दम त. लो लो ज्यो.न०

३ कॅंह ति रोज़िन. ज्ञानुन न अज्ञानुन तस
स्वाद. अस्वाद. निशि कॅंछ़ाह स्यो.न न. नुन तस
कॅंह खटनस लायक त. नो.न वनुन तस
सुख दुख क्या अ'थि दी.पुक सम त. लो लो ज्यो.न०

४ दिज़ि देहस नज़ि पज़ि अमृत फल
दिस प्रथक तै प्रथम.य दपुस मृत फल
कान नेरि क्या निर्णय कानय फल
मो.क्त. पलज्या ता'यंज्यस न त्रम त. लो लो ज्यो.न०

५ गाल हन हन कालुन त्रास म'शराव
ज़ाल मर. मर. सोर वस्वास म'शराव
वर्णं. आश्रम कृत त. सन्यास म'शराव
क्रोध पनुनय छु सूद सोऽहं त. लो लो ज्यो.न०

६ वेद पुराण शास्त्र य'च प'र्य प'र्य
कर्म क'र्यज्यन. अभिमान. स'च़ क'र्य क'र्य
मश.न युस बुझ बूज़ि बूज़ि य'च सोर्य सोर्य
ता'र छुन. तस तार. तारि श्रोम् त. लो लो ज्यो.न०

७ य'लि तेलिय अं'दरिमि लोलुक स्नेह
त्यलि मेलिय पानस छ्य़ुव लूक. स्नेह
खेलि अन्तर् बहिर् बुक. बुक स्नेह
छुन. परवाय गेलि आलम त. लो लो ज्यो.न०

८ कथ. करनस त. मरणस छुन. हिशर
मानि बोज़नस म परनस छुन । हिशर
ध्यान सो.रमस त. शरणस छुन. हिशर
च़मि तस युस बनि छ्यय्. च़मि त. लो लो ज्यो.न०

९ 'परमानन्द" परम. आनन्द प्रा'वित
प्रावि नो.व नो.व सांग नोव जंद. प्रा'वित
नावि तरि अथ. छोत्ररुक चन्द. प्रा'वित
रुजि़ज्यन. कुनि नजि़ दिजि तम त. लो लो ज्यो.न०



(६३)

हे निरंजन कष्ट भंजन भक्त रंजन हे दयाल ।
ज्ञान कुय लाग प'छि म्य अंजन अज्ञान कुय पोह म्य गाल ॥

१ भवसरै फो.टमुतुय छुस मोह मायायि वो.ल म्य नाल
छुस न. ज़ानान बोठ स्व'सित वोष्व अथ. रोट करतम दयाल०

२ सत असत् विचार छुम न काम. य'न्दिलि क्रिम पतै
असत.चि ह्री'कल म्य चटतम हावतं सतचिय वथ.य०

३ काम क्रोधन लोभ मोहन छुस ब. को.रमुत ज़ेरबार
भवसागर दुख घर. मंज़ अथ. रो.ट करतम दया'ल०

४ दीन वत्सल रछ़ पद्यन तल आनन्दुक अमृत म्य चाव
यव. किव शांती म्य बनिहे वैर. मावस गछि अभाव



(६४)

ज़न्मस इथ यति केंह छुन'. लारुन ।
धारणायि धारुन गोविंद गो ॥

१ अल फाल अथि ह्यथ खेत संभालुन
नित्य नियम. स्मरणि वायुन ह्य०
धैर्य.चि यट.फोरि दत. फुटरावुन धारणायि०

२ युस करि स्वमन. दारुन त. प्रारुन
ती छुस लारुन संसारस
तव. खो.त. रुत छुय परउपकारुन धारणायि०

३ धन. द्यार अथे इथ म'शरावुन
कर्म.चि वति प्यठ धर्मस ह्य०
य'ति नो प्रोनुय फो.त छुय लारुन धारणायि०

४ दांद-हूर न्य'न्दरे सुलि वुज़नावुन
कल करनावुन सोऽहं सो
"लल द्यद" गुरु ह्यत स्वरूप वुछनावुन धारणायि०

ॐ

श्री शारिका लीला-लहरी

(षष्ट - तरंग)

(६५)

ललवान सिरि ह्क ज़ेरि ज़ेरि ह्यरि वो.न
छम वज़ान ज़ीर बम तार

ह्यसक्य मयखान. मस य'लि ब. चोवनस
भोवनम सिरि असरार

आलव तोरै गोक द'रियाव दाम. चोक
शीकन को.रुक मिलचार

सतवय आकाश सतवय पाताल
तल प्यठ दित कुनुय ठान

गाह गट. गाश गाह प्रकाश नूरान
यक्सान सोरि समान

रंग. रंग. बेरंग सूरत सो. मूरत
न'ग्र द्रायि दर बाज़ार

गगनयि पवनयि नागनयि भागनयि
सत नयि व्ययि नवद्वार

सुय हज़ार दास्तान बोलान नयि
मो.लवान ह्यथ खरीदार

पननुय सो.न पुय पननुव बाज़ार
पानै ग्राक त. सौदागार

हरद. सौंत. कुन्परस वौंत कुनि लो.ममस न.
दरद. नयि फयूर शेहजार

सत परद. चटिथ.य हूर द्रायि बनबान
पोशन क'रिक तूमार

ग्रक ल'जि सो.दरस दरवाज खुल. गयि
अनुग्रह ग्रतुक प्रंबार

कंद पुरी जू.न. डवि शश त. रव सा'बथ
ना'वित ग्रंदरिमि तौं दर प्राण

गटि मंज़ "भास्कर" सास मासना'वित
सुय प्रावि शांत ग्राकार



(६६)

सुन्दरो सो.न. संदल गरय. हो हो करै श्याम. सुन्दरै ।

१ गोपिय प्रारान गोकुलै वेरि चाम्नि फेरान निर्मलै
खेलव त. मेलव ग्रमरै हो०

२ जसोधा वुछतोन भाग्यवान टोठेय यस इम ज़ संतान
बलभद्र ब. व्यथि कृष्ण. गंदरै हो० ।

३ म'तरे पलंग पा'रावयो पा'टिय करच बथ.रावयो
ग्रंज़.लि दर्शन मोक्त. हो जरै हो०

४ गलि गलि दो.ध बो चावथो फलि फलि नावंद ख्यावथ
बादाम कंद चंद हो मरै हो

५ आसान छुक कैलास कोह मासान छुक यति रात त. दोह
हरमुख. क्यय गंगा धरै हो०

६ ना'लि माल. खा'लि कनवा'ली रंग. रंग. जाम ज़रका'री
शीतल स्वभाव पीतांबरै हो०



(६७)

करुम म्य हे प्रभो! मंगल वरुम चरणार्बिन्दन तल ॥

१ शरण आसै ब. दयि नावस च. टोठ्योक शरण्य भावस
ग'डित छुस भक्ती हु द अंज़ल वरुम०

२ वुज़ान छुम चानि प्रेमुक सौ ह करुम अनुभव म्य नो.न अनुग्रह
गछ्यं युथ वासना निर्मल वरुम०

३ दि म्य शक्ति पातकुय प्रसाद वुछ.न छुस कोन. चानिय पाद
तवै छु.म चित्त गोमुत चंचल वरुम०

४ छु चोनुय आसनुय सन्मुख छ.यनन दुख प्राव निर्भय सुख
म्य सो.य भक्ती गयम सुफल वरुम०

५ छो.च.र छुम ओसमुत कर्मुक यि ब्राह्मण ज़न्म छुम धर्मुक
तुलन प्रारब्ध छुस अनज़ल वरुम०

६ वुछस पुनर् आवृती कालन फसोवमुत वासना ज़ालन
म्य कास अविद्यायि हंज़ गांगल वरुम०

७ ग्रछयं सज्ञान त्युथ उपदुन इयम युथ दृष्टि मंज़ दो.न कुन
छ्र सोऽहं नाव युथ केवल वरुम०

८ म्य रोजुन ग'छ़ि न रज तय तम बनुन तत् सत् गो.छ़ुन उत्तम
छसै स्वभाव. किनि शीतल वरुम०

९ दया हुंज़ दृष्टि कुन्य केवल करुम अतर् ब्रहिर् निर्मल
डलस मंज़ युथ ज़लस कंवल वरुम०

१० दितम विकार. अन्नुक बल दजन कामादिक,कि जंगल
वुछ़न स्वप्रकाशचिय वुज़मल वरुम०

११ हे केशव.! केशव अर्पणै सदा निर्मल सुदर्शनै
म्य फो.लनाव द्वादशांत मंडल वरुम०



(६८)

भगवान. तमि काल. कर म्य अनुग्रह
य'मि काल. प्राणांत आसि म्य।

आनि अनुग्रह रुस्त ईश्वर कर्म न्याय कुस कासि म्य।

१ सा.यॅ त्रा'वित रो.ट म्य दामन चोन. कामन सिद्ध म्य कर
मा'य बंध संतान नारी इम छ़ि अस्थिर छुख च. स्थिर
नाव चोन लयि लछ़ करोर.य दिम पनुन भक्ति भाव म्य०

२ बाल. माव. किञ ग्युंद म्य हारण ग्राव. वोञ्य व्रो. कस करै
वक्ति सखती छुमन. कांह. छुस तारि गोमुत शशदरै
छुम म्य तकसीर पानस.य चा'ञ नाम. स्मरण क'र न. म्य

३ कर्म फल किञ लोक.चारस रंग. रंग भूगिम विषाद
यावनस मुतवाल. सांपनुस काल. मय. रूदुम न. याद
वुज़रस मंज अंत कालुक छुम स्यठाह वसवास म्य०

४ राज़ होंज़ाह ज़ाल. लोगनस कठिनिय कर्मय फलन
ज़ांह क'रम न. राम स्मरण. साधु सेवन हरि भजन
लाभ अथि इथ रावरोवुम सुय खो.तुम अपराध म्य

५ अंतः करणन ज़न्म. ज़न्मन हुंद म्य सार्योमुत छु मल
आदि दैवक आदि भौतिकि आध्यात्मिक कर्म. फल
कर दया पनञिय प्रभो! विचार. मन शुज़रावत. म्य०

६ ईर. गोस भव सागरस मंज़ धैर. भाव रूदुम न. कैंह
गोपाल चा'ञिय छुम म्य आशा पान म्योन मटि छुय हा च्य
म्योन रूत क्रुत छुय च्य रौशन थफ क'रित बोठ खार म्य०

७ अंत समयस टा'ठि छि खोचान अक अ'किस पत कुन चलान
पान.वा'ञ अक अ'किस वनान वुछत वुनि छुस शाह खसान
वुछत. भ्रम बा'ज़िगार यि संसार स्नेह तिमन रोज़ान न. कैंह०

८ हे प्रभो! बोज़त म्य ज़ारी सर्व ख्वा'री कास्तम
वक्ति पोरी दस्त गीरी कर प्रभो! चा'ञ आश छुम
छुस पथर प्योमुत म्य थर. छुम करत. गम. मंज़ शाद म्य०

९ निर् अर्थ आत्मा को.हम हाय वो.ञ ब. कोताह छुस पशन
पत. नार छुम. ब्रोठ छुंत्र आमुत त. चामुत छुस गशन
कर दया पननिय प्रभो ! छम चा'ञ वाराह आश म्य०

१० छुख क्या दया सागर करतम शरण ब्रो आस च्यय
विष्णार्पण करत. म्यान्यन सा.र्यनय पापन चं. क्षय
अत कालस हाव म्य दर्शन सर्व संकट कास म्य०



(६६)

१ भक्त वत्सल. मोनुक म्यानि मन.न.य ।
शक्ति नाथ. गडयो मन.नय माल ।।

२ बूज़ि बूज़ि श्रवणाय त. क'र्य क'र्य मनन.य
निधि ध्यासन ज्ञान. दीप प्रज़लाव
साक्षात्कार छुक शिव. रूप ननन.य शक्ति०

३ अधिकार च्युतमुत छुय सत जनन.य
मंज छिय अंद ह्यत माया जाल
निर्गुण. लगयो इथिन.य गुणन.य शक्ति०

४ भीषण. इम मुख च्यय कुन मन.न.य
तिमन.य आय मंगि काल य'चकाल
तिहं.ज़ि अ'छि नाटि मंज कल्पांत बननय शक्ति०

५ च़ित्त आकाश. हाव निथ मुख पननुय
छारनस लो.गमुत छुस ब. पाताल
ओन छुस खो.नवट. खोड छुम खनन.य शक्ति:

६ युथ छुक त. त्यथ छुक क्युथ छुक ननन.य
सुय जानि यस बनि युथ ह्यव हाल
वान दित छु नोन. वुछि वुछि ओन बनन.य शक्ति०

७ देह अभिमानुक कुल ह्यायि छन.नुय
तीव्र वैरागुक सूराह् वाल
शिव. रूप. ती बनि ई प'हि पनन.य शक्ति०

८ लोल. आलव प्र'श फयोर भा'न्स कनन.य
चान्यन गछि ना, तर छिम लाल
सुय मुखत बनिहस यत छि मुखत वन.नय शक्ति०

९ पज़ि भाव. पान प्रमाण नाव पननुय
शाह पूर वर्ताव अथि ह्यत माल
मज़ बाज़रस वान लो.द निर्धनन.य शक्ति०

१० ह्यलि ह्यलि लावि लावि मावि भावि गो.निन.य
कुज़र.कि खल. फल. व'छ मुखत. हाल
गाटस गाट. प्यव ह.ि'रस छु छो.नन.य शक्ति०

११ नियम.च्यन ना'यंज़्यन यम.कयन यन.न.य
समदृष्ट. जल फयुर माला माल
निष्काम. कर्म. भूमि कल्पवृक्ष बनन.य शक्ति०

१२ योग. अग्न. विन छुस ज्ञान. अन्न रन नय
योगेश्वर. छुय मूर्ख. मुँ'द साल
अन इच्छा करतम अनुग्रह पन:नुय शक्तिः

१३ दय. धन. प्राप्त प्रत कां'सि वन.न.य
वान. रोस्त कर्म हीन छस कंगाल
बडि भगवान. लदतं वान. पन.नु.य शक्तिः

१४ गंड. गंड वुन्नि छम आम्यन पन.न.य
वर दिम इन्द्र. चन्द्र. छक दयाल
दो.गनाव उल्लंघित छक त्र्यन गुण.न.य शक्तिः

१५ साध. छम इच्छा कुमा'री नन.न.य
स्यं'ज़ साज़ ग'र सूज़िन संमाल
को.रणस सं'जिवरिकिय वर्तन.न.य शक्तिः

१६ शक्तिपात सू.ति भक्ति माव. न्यथ ननिनय
भक्त कर मीना वाम हिमाल
ताह खोल वर दिन.क्यन वर्दन.न.य शक्तिः

१७ थप क'र मनस चित्त आनन्द. घनन.य
तप गव सिद्ध अथि म'ठ जप माल
मस्त को.रनस इथिय प्रेम मस च्यन.न.य शक्तिः

१८ मीनायि हीमाल पर्वत बन.न.य
चक्रेश्वर छुय त्रि ज़गत पाल
सा'यं देव चक्रस फीयें प्रदत्तण.न.य शक्तिः

११ 'कृष्णस' हरमुख. मुख हाव पननुय
थपि खारतन प्यठ सोऽहं बाल
फीरि फीरि नीरि नीरि निरणयि नयिन.य



(७०)

१ गोकुल हृदय ब्योन तति चोन गूर्य वान।
चित्त विमर्श. दीप्तिमान. भगवानो ॥

२ वृन्च म्याञि गोपियि च्यय पत. लारान.
बन्सरी नाद. वाद. मतानो
न'शरित ह्यस त.होश म'शरित परत. पान चित्त०

३ अथ.वास च्यय सू.ति रास आस. खेलान
व्यास नारद ति तनि आसानो
दास. भाव. राधा कृष्ण. कृष्ण. जपान चित्त०

४ देवियि त. देवता सेव च्यय करान.
भवसर. तव. तार लभानो
ग्यवान रिवान ज्यव छ्खन लोसान चित्त०

५ अम.व.नि कोसम मुख. चानि फो.लान
कुसतब नजि आसि शेहलानो
कौस्तुव अ'टि त. माल. आसहोय पा'रान चित्त०

६ मायायि सू.तिन च. शायि आसान.
कायायि मज भिन्न न. रोजानो
सिर्यिकि आसन. छाया छ्य भासान. चित्त०

७ आकाश· मुख छुक आकाश भासान·
तत् सत् प्रकाश आसानो
देवन हंदि देव· प्रा'णियन हंदि प्राण चित्त॰

८ युस युथ सो·रिय तस त्युथ छुक हावान·
मुख हाव म्य'ति श्री नाराणो
प्रारन·चि फुरसत छमन· रूज़म·च् दान· चित्त॰

९ यस ई इच्छि, ता'य तिच्छि, छुय प्रावन·
कर्म· फल दात· च्यय वखनानो
ह्यो·न चुन पननुय लक लकन बहान· चित्त॰

१० त्तमा मूर्खस गाट·लि छि करान·
गाट· छक न॰ तमि· सू·ति प्यवानो
पाठ पूज़ायि कनि मूर्खस ई जान· चित्त॰

११ तगिहं त· ज़गि मंज़ आसहा थ्यकान·
वन कस कां·सि छु न· न्य'पानो
कुम्र·चि कथ छय सव्रस अपाण चित्त॰

१२ सिर्यि चंद्रम· रोस्त· ज़ग छा प्रज़लान·
भगवान· रुस्त प्राण अप्रमाणो
लगहास नित्य नियम· रोजिहं सन्निधान· चित्त॰

१३ दास छिय अ'सि चा'नि कोन छुक मानान·
ला'गिज़िन· पनन्यन बेगानो
शर·म छय ना छिय शरण ईवान· चित्त॰

१४ वनन.चि जाय छमन. वनुन कव ज़ान.
सनन. चियि कथ छय ब्याक आसानो
बनि यस ई पानस सु व'नित न. ज़ालान. चित्त०

१५ बाकि बाकि वदनस ति वाक्य छिन फोरान.
साक्ष छुन अन हित आसानो
चाक गा'म जिगरस आक छिम न.बलान. चित्त०

१६ छ्सन. डेंशान बो देश' देश. छारान
प्रारान छुसस छुम न ईवानो
प'दि लूसिम.ति व'दि व'दि चडि भरान. चित्त०

१७ अत छुन. भगवत मायायि लासान.
आयायि तति कति छारानो
छारित त. गा'रित ल'भित त. रावान. चित्त०

१८ गिंदनस रंग. रंग. टंग. छ्न. ईवान
भग. हाय ब.ति श्री नाराणो
हंग. ता'य मंग रोज़तम संतुष्टान. चित्त०
१९ हे कृष्ण। पाप सा'नि चय छक डेंशान
शाप कास असि - अ'सि छि नादानो
क्षमा कर यव. पायस छि प्यवान. चित्त०

२० भगवन मायायि कांह छ्न. ज्ञानान.
तस त्युथ छु युस युथ छु मानानो
मान. अवमान रुस्त च.ति मान ब.ति मान. चित्त०

२१ युस न. जाव कांसि ता'य कांह छुसन ज़्यवान.
ज़ीव आन मा.नि यस छि जपानो
ज़ानि सु सोख्य न. ज़ानि तस कांछ़ा न. चित्त०

२२ ब्रह्मा ति छुन चोर वेद ह्यत पोशान.
तुतनस यूत तस पजाना
शेष नाग सासि ज़्यवि सू.ति को.ल गछान. चित्त०

२३ युस जि यूत मंगि तस सुय त्यूत प्रावान.
दय नज़ि मनि कुनि आसानो
बु.य च्यय अर्प त. च.य म्योन आसान. चित्त०

२४ धन. ध्यार पत.व त्राविथ गछान.
भाग्यवान तिम इमन न आसानो
सन्तोष वृत्त दिम छिम तिम नव निधान चित्त०

२५ सन्तोष. वृत्त दिम छिम नव निधान
तृप्त कर म्य सत् स्वरूप ज्ञानो
यथावत् युथ ब. आसहथ वुछान. चित्त०

२६ 'परमानन्द' परम. आनन्द प्रावान.
सूरमुत हनि हनि अरमानो
राधा माता त. बब कृष्ण भगवान चित्त०



(७१)

शुभ मुख हाव म्यति अमृत चावतं ।
सत्गुरु हावतं गटि मंज गाश ॥

१ गो.ड सत्गुरु सु'द ध्यान सो.रनावतं
दम. दम. वद. च्यय कुन नम.हा
रात दिन अक त्तण छयन मत थावतं सत्गुरु०

२ ज़न्मस इथ कर्म खुर सं मालतं
मत. दिपिरावतं साधन मंज़
मन चे कलि इन्द्रिय चूर् पावतं सत्गुरु०

३ दह शो.मरा'वित मद हो.स्त पावतं
काहन हावतं कुत्रिय वथ
सोऽहं शब्द. निशि भ्योन मत थावतं सत्गुरु०

४ शिशरम नाग. सर. तन नावनावतं
मत. वुछ्त म्यानिस कुकर्मस कुन
मोहक्ने सिंधि भ्य'ति अपोर तारतं सत्गुरु०

५ त्तण. त्तण. पननुय ग्यान धारनावतं
सोर.नावतं ती यी पज़िहे
कामदेव. श्याम सुन्दर. लट. मत. दावतं सत्गुरु०

६ विश्वंभर. पननुय शुभ मुख हावतं
रोजत तं. मावहा'य पननुय हाल
मं'शरोवमुत नाव चित्तस पावतं सत्गुरु०

७ वनमाल धा'रित दर्शन हावतं
हावतं पननुय प्रकाश रूप
दोह गं'म लूसित मत. प्रारनावतं सत्गुरु०

(७२)

१ शिव नाथस प्यठ सपज.क म'तिये ।
श्री पारव. तिये भ'विनै जय ॥

२ पूजायि पोश लागय लव: ह'निये
अ'किन गामि आसव.ञ छक शिवा
रक्त बोज मा'रिल छक पान. त'निये श्री०

३ पोश सोंबरा'विम वो.ज़लि नीलि छ'निये
पूज़ा करहय इष्ट देवीये
ज़ार. पार. वार बोज छिय आर.क'तिये श्री०

४ अमर नाथ कैलासकिस सूर. म'तिये
व'रनक त. क'रनक अर्ध शरीर
नित्य छक आसव.ञ तस सू.ति मतिये श्री०

५ अष्ट. स्यज सू.ति छय ञ'ठि ता'य प'तिये
शिव शक्ति रूप. छक सर्व व्यापक
'कृष्णस' टोठ छक बोज़ान य'तिये श्री०



(७३)

प्रेम. पोश लाग शेरि तसं.जि वेरि करवा'य रो.वये ।

१ होश बुल बुल प्राण पोशनूल व्यान.कुल चा'व फो.लनम
प्रारवुन रोज़ खबरि तसं.ज़े वेरि०

२ आव बंबूर द्राव गोशस पोश. वागस चाव मंज़
करनि गूँ गूँ असज़ि वेरि०

३ स'मिवि स'खियव अस्त. अस्तै तमनि लागव भाव. पोश
यस नन्द लाल नाव प्यवये वेरि०

४ शशकिल प्रावक अद, चाव ज़ाव अमृत द्राव नो.न
श्याम. सुन्दरन दाम. च्यवये वेरि०

५ आव सोंत ता'य छाव अछि पोश चाव बुलबुल बागन.य
त्राव मोह. जंद वंद. कुवये वेरि०

६ नो.न सु वुछ्त. जानावारय मो.क्त. हार.य आव ह्यत
ज़ीव. डल. दित द्राव व'रिये वेरि०

७ ह्यछत. वार. करत. चार, पननुय ध्यान धारणायि धार ध्यान
ज़ान प्राण मा छु मूर्ख. प्रवये वेरि०



(७४)

पाद. कमलन तल मा'जि श्य'ति वरतम् ।
अनुग्रह करतम मा'जि अनुग्रह करतम् ।।

१ कष्ट दूर करतं संतुष्ट रोज़बम्
तालकस नाल ता'य फ'रियाद बोज़तम्
पाप शाप कास्तम संताप हरतम् -अनु०

२ म्योन हाल पानस छुय ना रौशन
बे होशस म्य'ति अनतम होशन
तोषतं त. मनि मंज़ लोल. रस भरतम् अनु०

३ कन थव म्यान्यन आ'रत्यन नादन
आसय शरण बोज़तं फ'रियादन
सार छक च.य मा'ज़ि धारणायि धरतम् अनु०

४ मय दूर करतं य'मि संसारुक
मटि बोर वालतं खो.टि व्यवहारुक
तंग आस य'मि निशि वासना फिरतम् अनु०

५ चो.दहान भवनन माता च.य छक
दाता च.य छख त्राता च.य छुक
रोग. ता'य शोक' निशि जल च.य म्य कडतम् अनु०

६ वदवुन बालुक मा'जि छुल प्रारान
थो.द तुलतं इत. लारान लारान
दिलास. दित म्य ओ श वुथरावतं अनु०

७ दीनस त. क्षीणस सत छम चा'त्रिय
भास्तं हृदयस मंज़ हे भवानी!
दासस त्रास ता'य वसवास हरतम् अनु०

८ संसार. द्वैतन ब.य रो टमुत छस
दुख सागरस मंज़ ब य फो.टमु छस
खारतं आवलन. मत. म'शरावतम् अनु०

९ पाय म्योन च्यय रुस्त कांह करिन. माता
उपाय र'स्त्यन चय छुक त्राता
कास्त अंधकार दास गंज़रावतम् अनु०

१० वील.जार मा'जि वोज़ चय नील कंठस
शील हर चं.य छुक आशा जा'व्र छुस
भक्ति भाव पननुय म्य'ति पुशरावतम् अनु०



(७५)

गन्योमुत छुम मनस चोन माव जगत् माता म्य दर्शन हाव।
म्य आमुत लोल. वानन छाव जगत् माता म्य दर्शन हाव।

१ ज़गत माता च. टोठान छुक भगत सन्तानन.य बेशक
हावान युस लोल सू.ति चोन नाव ज़गत०

२ म्य वोल शानव प्यठै वोर.य म्य पुशरोव पान च्यय सोरुय
म्य केवल चोन छुम चिक. चाव ज़गत०

३ ब. छुस प'ज़ि किनि स्यठा नादान करान छुस पाप छुस अनजान
करुम माफ़ छुय च्य माता नाव ज़गत०

४ प्रियम नगरस अंदर चामुत ब. चाव्‌ने डेडि तस आमुत
प्रियम अमृत पनुन दो.ध चाव ज़गत०

५ त'मिस क्या गम य'मिस यावर च. आसक ताज दित वर सर
शत्रु सुदं पोरि कति तस दाव ज़गत०

६ वदान छुस चा'ञ वनेयम कल   द'लिस तल मा'जि ह्यतं जल-२
म्य सतचे प्रेम. न्यंदरे साव   ज़गत०

७ वनान छुस वील. ता'य ज़ा'री   थो.कुस यूत काल प्रा'रि प्रा'री०
म्य लो.कचार गव बुजर वो.ञ आव   ज़गत०

८ ज़गत माता म्य सतुष्ट रोज़   वनान ज़ा'री छुसै च.य बोज़
पन.ञ दयगत दयालु हाव   ज़गत०

९ ब. छुस हियि गों.दि च्य किति सारान प्रेयम सान डेडि तल प्रारान
च. प्रेम कि भाव. हियि गों.दि छाव   ज़गत०

१० छु 'बागवान' च्यय परन प्योमुत   गंडित गुलि च्यय शरण गोमुत
छु स्मरण चोन हर दम नाव   ज़गत०



(७६)

द्रौपदी विलाप ॥   जय राधा कृष्ण ।

श्लोकः– हा कृष्ण मनसि वासिन्   क्वासि यादव नन्दन ।
इमां अवस्थां संप्राप्तां   अनाथां किं न रक्षसि ॥

वलो श्याम. लालो   ब. कोताह इ चालै
सभाये अंदर छिम   कडान जाम. नाल ।

१   ल'जिस वो.परन मंज़   व'जिस क'मि ब. शापन
ग'जिस शर्मि दावै   ल'जिस गिस ब. ज़ालै०

२ म्य वुज़क्यन करान छुमन. कांछा हिमायत
यि क्या ओस दयन ल्यूखमुत म्य कपालै॰

३ न्य रुस्तुय रछ्यं कुम अबल छुस ब. ना'री
च. रछ्तं त. वुछ्तं छुमै कमि हालै॰

४ प्य'यिय मा न्यंदर चय मदा छुक न. बोज़ान
म'यि को.त दया वुज़क्यनम हे दयालै॰

५ च. छुक दीन बन्धु म' म'शराव दीनस
हृषाकेश. अशजे हरान छुमया चालै॰

६ म्य वोत्र रूजमच छुम न. कांसि ह.ज आशा
तमन्ना म्य टाठि छुम त. रट.हत ब. नाल॰

७ सभासद बनेम.ति छि मोनिक चित्र ज़न
दया छुकन. वुज़क्यन इत्रान हे दयालै॰

८ दया सागरो कर दया "नील-कठस"
च. दिस पान. दर्शन यिस अन्त. कालै॰



(७७)

जय जगदम्बे ॥

ओरुत प्रारान छुक बर तलै बलै दर्शन. सू.नि ।
घनेम. च मा'जि छुम चा'अ कलै बलै दर्शन. सू.ति ॥

१ संसारण म्य ग्युँदनम छलै मिलनोवनस म्य'चि सू.ति
अज्ञानन बो को.रनस नलै बलै॰

२ मायायि कोरनं मन चं.चलै मस्त गोस लोभस सू.ति
मोहन आवरुस रो.टनस तलै बलै॰

३ पापन ह्.दि बारि छु अल.अलै चा'रिथ छुम र ज़ सू.ति
मंज़िलस किथ वात छुस निर्बलै बलै॰

४ सो रुम न नाव चोन सुय छुम मलै छयो.नुस ब. इत गं छ सू ति
आवागमनच कास गांगलै बलै॰

५ मन दर्पण म्य कर निर्मलै मल्यून छु गरदे सू.ति
दयायि ह्ंज़ करतस सैकलै बलै॰

६ व्या'पित सोरुय छक जल स्थलै भ्रम छुम अज्ञान. सू.ति
टुइ कास युथ भासि कुन केवलै बलै॰

७ ज़जरयोमुत छुस बो कवलै फोंल चानि अनुग्रह सू.ति
सरताज बो बन. दयायि ज़लै बलै॰

८ मा'ज्य रटतं दामनस तलै खोचान छुस भय. सू.ति
प्रेमच न्यंद.र म्य पांव जल ज़लै बलै॰

९ भक्ती दिम तिछ युथ नय डलै बनि चानि कृपायि सू.ति
अद म्य ज़न्म गछि सफलै बलै॰

१० अशि ज़ल. गं ड दित पाद बो छलै तिम रट. हृदयस सू.ति
लोल.सान करक बो मोर छलै बलै॰

११ 'हंसा' आमुत छुय बर तलै मगान आ'चंर सू.ति
मो.कलावतन यंमि मायायि छलै बलै॰

(७५)

श्रोस कस रूज़ित अदरी वैंर क'मि निय. प्राटित म्या'ञ पर. पहा'र
मुरलीधर. सुंद छुमा यी खैंर क'मि निय. प्राटित म्या'ञ पन.पहा'र

१ थो.कमुत सुदामा घर. यलि आ'व नेत्रव त्रोवुन आ'शि द'रियाव
यति कुस राजा रोज़ान गैर कमि०

२ कति छुम घर. बार यो.नको.त आस फाकै वां'लिजि गोम तलवान
गाम.च़ कोत म्या'ञ तुलसी वार कमि०

३ कति गयि पा'द. इम गुल त. गुलज़ार
आंय कति योतनस मोक्त. फँवार

रंग. मंदोर्यन ल'ज़ ना ता'र कमि०

४ आय कर यो.त इम दास दा'सी शुयें म्या'नि गय मा.वन वा'सी
माथि ह च़ भार्या द्रायि ना सा'र कमि०

५ को.त गयि मा'सूम सुन्दर पोश लोल आम वुछहक रोवुम होश
मूरान गुलि श्रोस प्राटान दा'र कमि०

६ ओरुत सुदामा गव परेशान व्य'ग्वच़.य माया ओस डेशान
द्रायस सुशीला वुथि वन हा'र कमि०

---

(७६)

मेव. कनि मो.क्त. वो.थ चदन बागस
नागस प्यठ लो.ग हंस. दरबार।

ज़ल. कनि अमृत नो.न द्राव नागस
बागस मंज चाव संत. अट.हार ।।
(हंस. दरबार परम. हंस. दरबार)

१ बुद्ध क्या वाति अथ रागस त. त्यागस
वरणि आव शक्तियि त्रिभुवन सार
तस रुस्त क्या छु ती भु पूज़ि लागस नागस०

२ त्युथ दशहार कर तिथिस.य प्रयागस
यथ दह इन्द्रिय छि दह अवतार
का'हिम द्वादशांतस पूज़ि लागस नागस०

३ नाम. रून कल्पित ज़ोन ह्यथ रागस
अस्ति भाती प्रिये रूप पत् द्राव सार
शर्मन्दगी च'जि मंद. वैरागस नागस०

४ प्रियम. कर्म. फलन.य यम. नियम द्रागस
प्राव.नावि अनुग्रह किय अंबार
तृप्तियि पंपोश फो.लि लल. आगस नागस०

५ होश. पोश फो.लि उद्योग. पोश. बागस
दास. भाव. किञ आस ख'दमतगार
'कृष्ण' सेवा कर आत्म. रूप. आगस नागस०



(८०)

आव केवल्य हा केवलो योग चाने बनि आज़ा'दो ।
भोग. सुखा हा निष्कलो य'लि चलनं पाप.नि ला'दी ।।

१ चोन दूर्यर ह्यक कव ज़'रित कमि बलै ह्यक. च्यय निशि इथ
खुमन. करार गम चानि गलो योग०

२ गर्भ. नयन मंज़ फीरि फीरि वुछ ह्यय लो.कचार यौवन त.पीरि
ब्रांड ब'नि ब'नि कम जाम वलो योग०

३ पय अजताम लोभुम न. चोनुय धर्म हीनस ह्यय आेस कर्म लोनुय
नठ छ़म वति निशि मा ड नो योग०

४ मन दर्पण छुम मा'ल. गोमुत मोहकुय मदिरा छुम ह्यय चोमुत
ज्ञान. गंग जल मल कल. छलो योग०

५ नारायण कस गछ़ु शरण छोटनं किथ. पा'ठि जन्म मरण
हे शरणागत वत्सलो ! योग०

६ य'च् कोल चानि वते द्रासै बुजरुकुय प्य'यनै पासै
बुजरस आ'वित वो.श म. चलो योग०

७ मन काफ़ूर अन. चानि वेरे रत्न ज्योति फिरवै शेरे
गाल मल 'ठाकुरस' निर्मलो योग०



(८१)

(गजल) —श्रीमती अरनी माल

१ दौरि दुनिया सोरि आव.र यार छांडुन पननुय
आव दर जा ज़ेरि ज़मीन नेरि तस नो.य य'मि खो.नुय
२ नूर डेंशुन छु न. आसान सूर मलुन छु व पानसय।
रहवरस कुन पान गालुन वथ सु हावियि तस कुनुय॥



(८२)
(गज़ल)

ज़ानवै कर जान फ़िदा'ई यौर वफ़ा'ई कैंह छयनो।
१ अच अन्दर लोल. भागस लाग आशक बुलबुलो
तति गछनै खल्‌ति शा'ही योर०
२ यो दवै करक बादशा'ही तस ज़मीनस जाय छयो
तो.त छु वातुन तनहा'ई योर०
३ पाक तार.चि यलि तोलनं पाक छु पानै क्या ह.लुय
नरि ज़ंग अ'छि दिन गवा'ही योर०
४ नमरूदन दम दिचा'ई कान त'मि लोय आस्मान
खून तोर. प्यव बर हवाई योर०
५ कारि बद छय रोय मिया'ही बार गो.ब छुय क'त तुलक
वुछत. तह.ज़य बारगा'ही योर०
६ 'उस्मानो' मंग पना'ही तति न बियन ज़सज़लो
तति अरशस थर. चा'ई योर०

(८३)

वुछित गत चा'ज दैवागत च्य विन दयि नो सोरै लो जो।
म्य अन्दर कर पनुन मन्दिर ब. च्यय पूजा करै लो लो॥

१ ब. चाजे वेरि सों.बरावय अ'छिव किअ रंग. रूपुक रस
कनव किज शब्द. माजुक मम अ'नित खाम्यन भरै लो लो०

२ म्य कुन वुछि वुछि अमान छुक दूरि रूज़ित आस्मानन मज़
गुपित छुक दास्तानन मज़ ब. दूर्यर नो ज़रै लो लो०

३ फिज़ा आ'वित म्य खनिमति छिसि
जमीनस तल त. पूर.णि छिम
स्यठा देवार लूर.नि छिम च्य रुस्तुय क्या करै लो लो०

४ ब. छुस पोंपूर च्य दीपम पत चटित इम जाम करहै गत
दिहंनै जाम. चटन चि वृत्त क्यो.मा ह्यु व मा मरै लो लो०

५ म्य निम पंपोश. पादन तल तिमन हुंद बों.बरा सूजित
कंडयन प्यठ छुस मरे रूजित ब. .चाने आसरै लो लो०

६ जमीनस जन्मकिस व त्रिम.ति अशिकि दुर्दान. कैंह भ'विम.ति
अ'छिन मज छि र'छित थ'विम.ति तिमै ख्यावे जरै लो लो०

७ इमन जोयन अन्दर यो.दवय छ चाने सहज धर्मुक जल
बठ्यन हुंद छुक सम्योमुत मल म्य चावुम आगरै लो लो०

८ पनुन म्य तेज.कुय आगुर इमन जचन अन्दर भासुम
कुन्यर भा'वित दुई कासुम गटे हंदि गाशरै लो लो०

(८४)

अज़ वाति बूजुम मोल म्योन   कोसम वतन वथरावसा'य ।।

१ लछ जन ड्रवित संताप ताप   अतः करण घर. नात्रमय
ठाकुर कुटिस मज रंग. रुत   प्रग आदरुक पा'रावसय०

२ सों.वरित र'मिलि र.ति कर्म. फल मस खा'मि भ'र्य भ'र्य थावसय
अशि गंग वात्रे खोर छलस रुमालि गुम. वुथरावसय०

३ तिम पाद हृदयस प्यठ रटित दुख दा'दि जन्म.कि भावसय
काछि क्यत रछुन लोक.चारकुय स्मृत चित्तस अद पावसय०

४ भावुक घन्यर लोनुक सन्यर वां'लिज़ मुचरित हावसय
नो.व नागरादस सूं तिजन स्नेह मायि हुद वुजनावसय०

५ गुरु भावनाये सू.ति शेर नो.मरित खो.रन तल त्रावसय०
घर. बार 'य आसुन वसुन सोरुय पनुन पुशरावसय०

६ गट. प'छि चन्द्र जन नाम. रूप प्रख प्रख कला व्य'गलावसै
सिर्यस अन्दर लय प्रावि जून सार्यय बनन त्यछ मावसय०



(८५)

स्मरण पन.त्र दिचा'यनम प्रेमुक निशान. व्य'सिये ।
र'छरुन तो.गुम न. रीवुम ओसुम न. बान. व्य'सिये ।।

१ पत कालि छुम न द्यतमुत सोन मोखत दान व्यंसिये
अंनि सारि क्या लभक वोन्य तिम मोखत दान व्यंसिये।

२ वांलिंजि मंज़ थवुन गोछ हावुन थोवुम अथस प्यठ
राह कस छु कोरम्य पानस नुकसान पान. व्यंसिये।

३ हावुन छु राव रावुन चावुक समर छ. खांमी
थावान ज़ि छाव. बापत बानन छि ठान व्यंसिये।

४ यन सुय निशान रोवुम तन. मंचु गयस ब. फलवाल
न्युन ह्योन न कँह ति फेरान छुस वान. वान. व्यंसिये।

उत्तर

५ व्यसरुन पनुन वनस क्या वननस ति वार मा छम
बुथ मा सम्यस दोहस थिव्थ गछ कोत शबान व्यंसिये।

६ यछ पछ म. हार ब्याखा ह्यत यूर्य वाति कांछाह
तस छा कंमी निशानन भंर्य भर्य खज़ान. व्यंसिये।

७ डोलान कोहन वनन मंज़ शोलान छि गुलशनन मंज़
ज़ोतान छि तारकन मंज़ कंत्याह निशान. व्यंसिये।

८ व्यंसरित डंलित पथर प्यथ बुथ क्या दिमव तंमिस निशि
पुत फेरनुक पकान छा युत ह्युव बहान. व्यंसिये।

९ मानव ज़ि अंसि ह्यमव पोत छोर्या तसुँद मुहब्बत
पैवंद यि आदनुक छा शुर्य कारखान व्यंसिये।

१० दिल फुटिम.त्यन छु तोषन य'च़ गरि'मत्यन छु रोशन
गछ़ व'र्यमत्यन सुदामन— प्रिछ़ गा'यबान व्य'सिये०

११ अंदि प'खि तति छु आसान बोद. ब्रोर सूर दासुन
बोज़ान छु माय ला'गित लोलकि तरान. व्य'सिये०



(८६)

तरवुन छु करनोव हक दित वनन
कांह मा. स. त'रिव अपोर।
पत. तार बन्यव न. आलुस म. क'रिव
उखम. त'रिव अपोर॥

१ करनावि तार छुन. घरि घरि बनन
वुज़क्यन छ्य बेला जान
निस्तुर त. यि सात म. राव.र.विव
वज़िव त. त. त'रिव अपोर पत०

२ घरवेठ सोंबरान छिव मार. गा'मति
छ्य'नित थ'कित पेमति
घर. रोजि य'तिय कथ क्युत भ'रिव
छ्'रिय त'रिव अपोर पत०

३ अन अन वननस कन मो था'विव
गो.बरा'वित्र क्याज़ि पान
गो.ब बोर ह्यत वति प्यठ क्या क'रिव
लो.तिय त'रिव अपोर पत०

४ चूर युस क'रिव सु पानस फ'रिव
कर्मुक छु अटल नियम
सो.न रुफ छ्वा'रित गोड. क'यं म. ग'रिव
संतोष त'रिव अपोर पत०

५ प्रछ. गा'र य'लि लगि बर दित स्यनस
इसबात सु.य गयि चूर
थरि थरि मा हरद. थ.र ज़न ह'रिव
औधार्य त'रिव अपोर

६ प'ज़ि पान होव र्षि रस्त्यन ऋषण
पशन ति भ'रक प्रय
अथ ऋषि धर्मस प्यठ तोहि ति ध'रिव
सम दृष्टि त'रिव अपोर पत०

७ र्ति भाव था'विव र्तिय ब'निव
र्तिय क'रिव कार
यी य'ति क'रिव तिय तति सो.रिव
सत्कर्म. त'रिव अपोर पत०

८ अपारि बदलै विद्या छय पर.त्र
योग.च छय तत बोल चाल
प'रिवै य'ति श्री गीता प'रिव
योगै त'रिव अपोर पत०

९ अपारि ब्रह्मय छु छ्वारान त. गारान
य'च छुस ज़ि तुहुंद लोल
य'ति क्या छु प्रावुन ज़ि वियोग ज़'रिव
पज़ि प्रेम त'रिव अपोर पत०

१० वाव तस क्या करि तारक मन्त्र
यस आसि दय. मुँद नाव
पानँ छु करनांवि चिन्ता म. मंरिव
डंरिथ म. तंरिव अपार पत०



(८७)

गज़ल

यार. संदे दादि दोदमुन दिल वहारम क्या करे।
वाव योदवै सोंत कालुक आसि नारम क्या करे।।

१ कांसि प्रारान दारि प्यठ युस वांसि हारे धारि ओंश
आवशारुक तस हवस क्या शालमारस क्या करे

२ कांमि पलज़न कांसि हुँद ज़ेवर बनुन यस योछ न. लांनि
सो.न बनांवितन संगि पारस तस विचारस क्या करे०

३ होश डंजमच जोश वंबमच पोश. गहनस तोषि क्या
रोश यस चोल ओश त्रांवित गोश्वारस क्या करे०

४ कालिदासस तालि कंत्र पत कलि त्रोनमुत गाटल्यव
तालि यन युम लोग ज़ालस गाटजारस क्या करे०

५ लोल मस ज़ाल्यं त. गाल्यम यस बुडित मांलूम गव
मीम नशके त्राविहे मस चोन ख़ुमारस क्या करे०

६ रंग हा'वित छ्रम दिवान ग्रोस   कहवचन खोट क्योन सो न
ग्र'मि कोडुस ग्रदर्युम खोचर नोन   लोल नारस क्या   करे०

७ हालि निम. क्या बाल यारस   ग्रोर त. शुद्ध पाथ्य न. दिल
छ्यनि मतिस यत दागदारस   नाबकारस क्या   करे०

८ ग्रोठ छुय चो.र क्रूठ मंज़िल   गा'फिलो बस कर म. चे र
यस म'तिस माघस जिगर   शेहल्यव न. हारस क्या करे०



कोरनम यी टा'ठि त. क्याह वनस।
थोवनम न. बाकय केंहति ग्रारनस।।

मोय रुम छ्रम मनकिम ग्राईनस।
यि कोर न. कां'सि ति दुश्मनस।।

सो.रुम सु लाल. रुख मनस।
जलाव लो.ग कज़लि वनस।।

फोरुम सु नाव खरमनस।
लो.गुस न. केंहति ज्येठनस।।

दिलस छ्यो.तुन त. जिगर तत्यव।
शोर गत्र जि नार हा।।

—मा० ज़िंदा कौल



ॐ नमो भवान्यै ।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(सप्तम - तरंग)

(८८)

घमुंक धँर कोर खति हा'रवनस.य
रंग. रंग. पोशन क'र्य अंबार।
मादलि तुलर्सिाय आरवलि व्यनसय ।।
नारायणस.य छु जय जय कार ।।

१ घरि द्राय भावनायि सू.ति दर्शनस.य
चाय पर्बत राजनुय दरबार—
आय चक्रेश्वरस.य प्रदक्षणस.य नारा०

२ समेरु पर्बत. कोह ख'ति मो नस.य
सिद्ध पीठ सायंव.य प्रोव अधिकार
नाश गव दारिद्रस अ'किस क्षणस.य नारा०

३ जय जय छु गोकुलस त. बिंद्राबनस.य
जय जय छु नोन द्राव कृष्ण अवतार
जय जय छु गोपियन त. गोवर्धनस.य नारा०

४ जय जय छु वसुदेवनिस च्य'ह ह्यनस.य
जय जय छु देवकियि यमि चोल बार
जय जय छु दुख. अंद बंद होज़्नस.य नारा०

५ जय जय छु भलभद्रस त॰ अर्ज़ुनस.य
मकितयि मंज़ इम द्राय सरदार
जय जय छु तत विश्वरूप दर्शनस.य नारा॰

६ जय जय छु दशरथ राज़निस गुणस.य
माजि कौशल्यायि बार बार
जय जय छु अजोध्यायि रामजुव ज्यनस.य नारा॰

७ जय जय छु राम चन्द्रस त॰ लक्ष्मणस.य
सीता मातायि जय जय कार
जय जय छु भरतस त॰ शत्रुघ्नस.य नारा॰

८ जय जय छु वाव॰ लोकपाल नन्दनस.य
य'मि गोंड लचि सू.ति लंकायि नार
जय जय छु सुग्रीवस विभीषणस.य नारा॰

९ मन म्योन पत॰ लारि मधुसूदनस.य
काम॰ क्रोध॰ कंसस दिवनावि मार
होश कति हारि मारि मोह॰ रावणस.य नारा॰

१० कोह आव ब्रोंठ दोह वोत प्यठ खनस.य
तार दियि करि पचालस पार
सतचिय स्थित थावि शुद्ध चित्त मनस.य नारा॰

११ वन.वुन सोन गव मंज़ त्रिभुवनस.य
थवनुय तस प्यठ ग्यवनुय सार
मानवुन छु भक्त राज़स त॰ निर्धनस.य नारा॰

१२ हीत. प्रकि मायातीत निर्गुणस.य
महामायायि सू.ति विवाकार
श्वेत पीत वर्ण सोर.न टोठ रातस दिनस.य नारा०

१३ वनपुन यि कोंछाह प्रोस प्रत वनस.य
ती वातनोव गोपियव गुपकार
वार. प्राव शंकराचार उलसनस.य नारा०

१४ अनुग्रह योन मंत्र प्रश्नस.य धन सय
वांसि तात्र पोशनाव होश व्यवहार
कृष्णस' तोषि मज पोश वर्षणस.य नारा०

---

(८६)

१ कमल चरण रटोय शरण च्य प्राये
प्रियम भरव त. ध्याना सोरव करव नमः शिवाय

स्तुता परन परन शरण च्य प्राये
प्रियम भरव त. ध्याना सोरव करव नमः शिवाय

२ चय प्रुक भक्तन वरण शरण च्य प्राये
चय छुक दुखन हरण तारण च्य प्राये
च्यय मोक्ष दातस मोक्ष य मंगव करव०

३ वडय्ुव योगव सू.ति सत् संगव करव०
उत्तम पदव त. सुन्दर भंगव करव०

अधर्मियन स.तिय जंगव करव०
संसार. समन्दरस तरव करव०
अज़ ताम तिय वोन महा जनव करव०
तम्युक निर्णय अ'सि क्या वनव करव०
'कृष्णन' सत सोर त. सत बोज़ कनव करव०
मोकलाव रटि मायि पनन्यव घरव करव०



(१०)

सन्यास वे परवाय मस्तानै, पा'यै हो लगै म्यानि जानानै

१ कावन अथि उम श्यछि सोज़ानै पोज़ बोज़ डंजि छ्मन रोज़ान दिल
रोजखै त. बोज़क लोल अफसानै ज्यूठ नो वनै म्यानि जानानै०

२ लूख क्याज़ि कन तलके दुर्दानै ओरुक योर म्योन वननै हाल
ब्याक मा छ्ू व्य'य सुंद दोद ज़ानानै पान. हो वनै म्यानि जाननै०

३ मोहन च्यति छिया मन मोंहानै चानि खोत. सु'दराति उपद्यव कांह
च्य'ति छ्ूयना सु वील. ज़ार बोज़ानै आर इयतौ म्यानि जानानै०

४ अं'दरिमि राग अज़न धूप्र प्रज़लानै लोक़ त्याग छ्ुय न्यबर मोलमुतसूर
ओबर तल यि वुज़मल छय द्रेठ ईवानै सूर गोसाञि म्यानि ज़ानानै०

५ यं'बरज़ल चश्मन रूद अरमानै शबनम रोस्त कुनि वुछहोक ज़ांह
सों'बलस कस छि तिम पाद पूज़ानै पूज़ हो करै म्यानि जानानै०

६ घरि घरि मोंरहक देव सुंद द्यानै क्याज़ि रटहक गोफ त. बाल
मन म्योन कंर्यज़िहे खल्वत खान चूरि हो यवत म्यानि जानानै०

७ दूरि रूज़ित दोल लोयथ कानै छिह लंगित ब्यथि ब्यूठ जरूमन क्रोर
यति योर स्योघ कर तीरि मिजगानै सीन. धारयो म्यानि जानानै०

८ रग रूप प्रतअंग छुक खोवानै देवता स्वभावस वातिहिय न. कांह
हग मंग नय आसहक रोशानै आशु तोष हा म्यानि जानानै०

९ मन क्याज़ि योर कुन छुय न.नरमानै कोमल तनि चांज़ि पश्मोन पोट
फर्यशर मोख छिन नख.ठहरानै नाज़ुक बदन म्यानि जानान०

१० यूत नय च. आसहक शेर नोमरानै कद चोंन प्रोस खास स्वर्गच थंर
पोत छायि शूभिहिय सर्वि बोस्तानै अभिमान रस्ति म्यानि जानानै०

११ शानन प्यठ केश छुय परेशानै तालि प्यठ गंडित जट. सर्पाकार
काल बंबूर गण जन छ. नांपानै अबर मोय म्यानि जानानै०

१२ कोंग तेहजव छ. बोड प्रोवमुत शानै कातिक मास पूर्ण चन्द्रस मज़
निथ वुछ्वनि सु खाल केंह भाग्यवानै पूर्ण चन्द्रम म्यानि जानानै०

१३ ज़ाविलि वोज़लि वुठ कुनि २ आनै असनचि त्रायियलि कुमलानछिय
दांन पोश बर्गन छि मंद छावानै वुठ कुमलाव म्यानि जानानै०

४ मांसूम अथ खोर माज़ि रुस्त पानँ परम राग रंग कनि प्रज़लान छिय
नम चांनि छा अक़ीक़ किन मिरजानै आदनय सुंदर म्यानि जानानै०

१५ यथ हुस्नस न. ज़ेवरुक एहसान खा'लिस सोनस मूल माथि त क्या
युथ रूप छा भूषणस ओरुज़माने साद शाहज़ाद म्यानि जानाने॰

१६ इम चानि खतुखाल याद पावाने दूरिरुक दोद ताम म'शरान छुस
दोद बलि यलि वैद्य आसि वाताने दा'दिस वात म्यानि जानाने॰

"स्व॰ मास्टर ज़िंदा कौल"

---

(६१)

१ दान मनसा'वित अथ धारनोवथस
अथ पत नित म'चरोवथस
य'च कोर.थम अवमान मदनो। ईछा स ज्ञान

२ रस रस कमि ताम वति पकनोवथस
कुन ज़ोन वति प्यठ त्रोवथस
अनजान - सरिगरदान मार. मति। ईछा स ज्ञान

३ मन वारि म्याञि आश पोश रुवनावित
संग दित बार. फोलनावित
पाने कोरथस फान मस्ताना। ईछा स ज्ञान



(९२)

दिल फोलि दर्शन चाने सूरमति सर्फ गोसाञ्वे
दिमयो गोड् अशि वाञ्वे सूरमति सर्फ गोसाञ्वे

१ शिव छुक कैलास वा'सी शक्ती छुय चा'ञ्य दां'सी
तति छुय वज़ान शीन शाञ्वे सूर०

२ जटि छुय च.'न्द्रम. लोमान हटि छुय वासुक शोमान
गौरी शंकर. साने सूर०

३ मृग. शाला छुक व लिथ.य पानस भस्मा म.लिथ.य
खुर कास असि ज़्यक.ताने सूर०

४ जटि छुक गंगा त्रावान पापव निश. मोकलावान
यमराज़ भय चोन माने सूर०

५ छुय त्रिशूल काल. संहा'री पान. छुक कल्याण का'री
चानि क्रोध जग मा फाने सूर०

६ नन्दकेश्वर चोन वाहन पूर्ण कर मन. कामन
कुस न चोन महिमा ज़ाने सूर०

७ रुद्र गण छिय चा'नि संगी सा'रिय चरसी बंगी
कामदेव दो.द च़खि चाञ्वे सूर०

८ आ'रित छिय आशि छारान कोन-छुक मवसर तारान
प्रारान तन मा प्राने सूर०

६ भोलानाथ- सोन संकट आवागमनुक चय चठ
इत गछ्. रोज़ि बे माने सूर०

—श्री प्रेमनाथ जी साबनू 'प्रेमी'



(१३)

ओम् पर-वुन हंस ताजदार, कमि वन-कुय जानावार।

१ ज़ाल लगिना सुय अनका माल- गंडहस छुम तमन्ना
नाल रटहन सुय बाल यार कमि०

२ कोछ् ब- दिमयो हा कावो गछत वनतम दियि दर्शन
वछि वां लिंजि मावस असरार कमि०

३ पोशनूलव पोर यि हंसो कुकिल् बोलान गोविंद-गो
हर मुख-छा किन-हरिद्वार कमि०

४ प्यठ गोशन र'टनम जाय का'लि पोशन प्ययि मो हाय
वोंद हंदयेस त- रोश च्लियार कमि०

५ खत ब- लेखस हटिके रत- ज़ा'विलि खत सू.ति शोभिदार
इयि नत- छुस ब- दा'वादार कमि०

६ बा'लि अनतने दूरि मा का'लि का'लि जिगरस गा'म परगा'लि
ना'लि जामे तस छि जरकार कमि०

७ हंस पख.वय पत. लारोस प्रारि प्रारोस डंडक वन
दोह दरि लगि सोरि लोक चार कमि०

८ दरद. सोज़क संतूर साज़ सासि प'रद. ग्यवि कस्तूर राग
व.ति तिय तिय वनान कोल.तार कमि०

९ 'भास्कर' चेन त सासन मंज़ रुम रुम. खास छु मासा'नी
ल.लवुन छुम सु सिरि असरार कमि०

---

(१४)

व्यल ता'य मादल व्यन. गुलाब पंपोश. दस्ता'य।
पूज़ायि लागस परम. शिवस त. शिवनाथस्ता'य॥

१ जटा मुकटा. प्यठ गंगा वसान छस ता'य
देवियि त. देवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस्तबस्ता'य
भक्ति भावुक जय जयकार आ'सिन तस ना'य पू०

२ दया सागर. लोल विज़यायि कोरनस मस्ता'य
हा पोश मते होश ह'लिम.ति थव ध्यान ह्यस ता'य
असार संसार छ'लरावान सोर रोजि कस ता'य पू०

३ पपोश पादव सू.ति इतम अस्ता'य अस्ता'य
चरणन ब वंदै जुव जान ह्यथ वांलिज वस ता'य
राग चानि सू.तिन पोत्र वुज्यम नाग.रादस ता.य पू०

४ पा'र्य पा'र्य लगोय ना शिव शंकर शिव नावस ता'य
दर्शन चान्युक छुम य'च़ लोल सू.ति हावस ता'य
टोठतम सदाशिव जगत ईश्वर छुम बेकस ता'य पू०

५ अमर नाथम नीलकंठस कल. वंदस ता'य
विचा'र सू तिन "कृष्णस" प्यठ आर इयिनस ता'य
यछ़ि पछ़ि सू तिन गछ़ि अर्पण शिव भावस ता'य पू०

कीर्तन :- जयति शिवा शिव जय जय जानकी राम।
जय जय लक्ष्मीनारायण जय जय राधे श्याम ॥



(१५)

(गज़ल)

शरीर ज़ोलन अ'मि मदनवारन. बे आरस आर नो छुये ॥

१ प्राण ज़ोलन पवन.कि नारन शशि कलि हुंद म्य नार छुये
समाह कोरन म्य ओंकारन बे०

२ ल.यि लोसं म्य तोस चारन रुम चा'र्यमस म्य मोयि मोये
दम.किय पन ज़न छुस खारन बे०

३ बडि मनसर.यार छुस ब.गारन माह ईश्वर अथ मज़ छुये
काम क्रोध लोभ मोह छुस ब. थारन बे०

४ वुछ़त मार कू ति क'र्य अहंकारन नार गोंडनक हा मोयि मोये
फान कोरनस अनफासकि नारन बे०

५ बदन ज़ोलनं अ'मि मदन वारन हये व्य'सि यार इयम नाये
विचार मनसर· गारहोन विचारन बे॰

६ शास्त्र वल छसया गारन ना'लि 'रा'हिमस' शास्त्र छये
ताज वरसर शास्त्र दीन दारन बे॰



(१६)

मतज़न वन मन कर कैलास·य बस्तियि मंज़ वनवास·य रोज़॥

१ चित्त॰ किन्य मस्म मल वल अतलास·य
साधु प्रकृच सन्यास·य रोज़
ॐ शिव शंभू कर अभ्यास य बस्तियि॰

२ विषय त्यागुक धर माघ मास·य
सत्संगकुय उपवास·य कर
आत्म तीर्थ मन नाव मोह·मस कास·य बस्तियि॰

३ पान प्रज़ना'वित पानय म· आस·य
सर्व संकल्पन ग्रास·य कर
तल॰ प्यठ॰ त्रा'वित त्राव तलवास·य बस्तियि॰

४ महामाया ह्यत रछवुन दास·य
शिवना'थ हृदयावास·य छुय
तोति तस नाव द्राव साधु सन्यास·य बस्तियि॰

५ श्री कृष्ण महाराजन स्यूल रास.य
गोपियि शुराह सास.य ह्यथ
बाल. ब्रह्मचा'री तोति नाव द्रास.य बस्तियि०

६ 'कृष्ण' अं'दरिमि त्याग. मल सूर सास.य
न्य'बरिमि राग. उल्लास.य कर
शुकदेवस गव यी व'नित व्यास.य बस्तियि०



(६७)

कर सन. कुनुय बनि सू.ति तस जानानस.य जानानस.य ।
तन लोल. नारन ज़ा'जनम अनज़ानस.य अनज़ानस.य ।

१ मश्किस दूकानस व'थि छि बर पैमान भ'र्य भ'र्य क्या ज़बर
चन रुस्त ब. छुस आ'सित अंदर बुमखानस.य बुमखानस य०

२ निश आ'सिय.य दूर्यर न्य व्योम रूसिस न. पय नाफ़ुक नन्योग
छांडान सुगंध दिल तार गोम नादानस.य नादानस.य०

३ गोस नज़ि पयस मो.क़ुजारकिस कोचस ब. गोस व्यवहारकिस
सों.बरनि लो.गुस मसारकिस सामानस.य सामानस.य०

४ देव आ'सिथय ज़ीव नाव प्योम सो.न आ'सिथय न्यज़ि आम गोम
मो.क्तस न्य फातय खाम गोम दुरदानस.य दुरदानस.य०

५ अद्वैत अमृत कुय सु मस चन. सू.ति ब. बनहा एक रस
दु.य रोज़िहे कति न्य त. तस कुनि आनस.य कुनि आनस.य०

६ य'च़ काल कुय तस निश जुदा गोमुत ब. छुस मेलि ना सना
तस हस्त म्य आराम ज़रा कर देवानस.य देवानस.य।

७ यत दा'दिस.य गछि़ वैद्य वनुन तस बावहा बो सिर वनुन
नत.राज़ि दिल क्या छुम वनुन बेगानस.य बेगानस.य।

८ 'नीलकंठ' प्रेम.चि वति च़.नेर वातक मुकामस पुत म. फेर
प्रावक च़. अद.कैंह लगिन च़े.र निर्वाणस.य निर्वाणस.य।



(६८)

भ्रम छु संसार शम त. ज़ीवो दम म. कर कांह ख़ा'लिये।
करत. शम दम सो.रत.सोऽहं आसि गछ़नुय का'लिये॥

१ इछ़ छय शोभान ओवरस य मज़ बुज़मला हाय त्युथ छु आय
आयि गयि कू.ति काल हारन शीन ज़न तिम ग.लिये।

२ बाज़िगर सं.ज़्य यि बा'ज़्याह सोर संसार ज़ानतन
मय च्य चोमुत मोहकुय छुय—छय च्य कमिचिय चा'लिये।

३ रूदि ना य'ति राज़ ता'य रक रूदि ना य'ति शूरवीर
अथ मूरान स्यत त. अफ़सोस कु.त गयि धन. वालिये।

४ 'नीलकंठो' बन शरण सत्गुरु च़रणन मन. किञ
युन त. गछ़नुय तस छु माया दाम यस गव ना'लिये।



(९९)

इतना तो कर ले स्वामी जब प्राण तन से निकलें।
गोविंद नाम लेकर फिर प्राण तन से निकलें॥

१ श्री गंगा जी का तट हो या जमुना जी का बट हो
और सांवरा निकट हो मेरे०

२ श्री विंदरावन का स्थल हो मेरे मुख में तुलसी दल हो
विष्णु चरण का जल हो मेरे०

३ सांवरा सन्मुख खडा हो बंसी का स्वर भरा हो
तिरछा चरण धरा हो मेरे०

४ सिर सोहना मुकट हो मुखडे पै काली लट हो
यह ही ध्यान मेरे घट हो मेरे०

५ निकलें जो प्राण मुख से तेरा नाम बोलूं मुख से
बच जाऊँ घोर दुख से मेरे०

६ मुझ 'दास' की इस अरज़ी—को मानना न फरज़ी
आगे है तेरी मरजी मेरे०

---

(१००)

ध्यान का वैदा करके सजन तूने
ध्यान लगाना छोड दिया।

१ सीस तले पग ऊपर थे
जब माल के पेट में लेट रहा
तब ईश्वर से इकरार किया
तूने भूल के वह सब तोड दिया ध्यान०

२ देख लुभाय गया जग की
रचना सब सुन्दर साज बनो
उस सरजनहार को सार नहीं
तूने भोगन में मन जोड दिया ध्यान०

३ घर काजन बीच फसाय रहा
दिन रात न मौत की याद रही
उमरा सब बीतत जाय चली
तूने क्यों प्रभु से मुख मोड दिया ध्यान०

४ बार ही बार फिरा जग भीतर
जीवन की सब जूनन में
'ब्रह्मानन्द' भजा भगवंत नहीं
भव सागर में सिर बोड दिया ध्यान०



१०१)

कीर्तन—देवी चरण चा'निय भक्त सो.रन छिय।
इमोय शरण करोय नमो नमस्ते ॥

१ संकट हरण कवच चा'निय परन छिय
कमल चरण चा'निय भक्त'न वरन छिय
प्रेयम भरन यत भव सरस तरन छिय इमोय०

२ यति पूर्य त्रावक तत जायि नेत्र जरन छिय
मंगल रूपी ध्यानस चा'निस सो.रन छिय
'कृष्णस' स्तु.ति ह्यत स्तुता चा'नय परन छिय इमोय०



(१०२)

त्रिज़गत नाथ. परम. आनन्दै सच्चित् रूप. च्यय पान वंदै।

१ कुस व'नित ह्यकि महिमां चोनुय क'मि चोनुय प्रभाव ज़ोनुय
हे निरञ्जन. हे निर्द्वन्दै सत्०

२ चानि आसर. हरि हरै हे सत्य रूप. च्यय पत ब. मरै
छुस ब. लज्जित स्यठा शरमंदै सत्०

३ कुस च्य'य ह्यु व बनि परम. मित्र बंध बांधव सा'रिय छि शत्रुय
निर्मल. निष्कल. गोविंदै सत्०

४ भव.सरस लो.भुम न. तार.य गोलुम च्यय पत लो.कचार.य
मोकलावतम मोह्.नि फंदै सत्०

५ ऋषि बालुक छुस छमन. चाह्त मनस.य म्य ग'छम धन संपत
छम म्य चाह् ज़ानन.च ज्ञान. इंदै सत्०

६ संपदा आपदा ज्ञान. र'स्तिस आपदा संपदा ज्ञान. स'स्तिस
ज्ञान. हीलस वखनान अंधै सत्०

७ रचना ज़गत.च स्वप्न माया सत बननिय पनञी छय छाया
ज्ञान निश मत थवतं श्य अंदे सत०

८ 'ठाकुरस' चांम्र अभेद भक्ती यलि वन्यस सो.य गयि मुक्ती
नत. क्या करि खांली चंदे सत०

---

(१०३)

गा'फिल म. बन पायस प्यतो. तस जानि जानस वो.न दितो ।

१ दो.र च्यय पनुन मो.र ज़ोनथुय रज़ि गो.य सरुफ पोज़ मोनथुय
सत्संग गंगि अमृत च्यतो तस०

२ दिल साफ थावतो आईनै मल गालतस तुलतस च. खय
छोटि पांठिय कथ मटि चय ह्यतो तस०

३ दिलन.य सहल कोर मुश्किलय ब्रेठयोक त. ज़ेठयोय मंज़िज़य
स्यज़ि वति पकनस प्यठ ह्यतो तस०

४ यलि च.य दिलसय संकल करक चलनय च्य शाक त्रावक.च फक
शुद्ध सात्वकी भोजन ख्यतो तस०

५ ज़ान जानि जान छुय पान पनुन छुयनो च्य कैंह छांडित अनुन
सत्संग द्वार वार. पय ह्यतो तस०

६ बननुय छु कैंह बननुय छु कैंह 'ठाकुर' पान पननुय छु कैंह
गुरु मुख सर कर वर दितो तस०

(१०४)

१ हे प्रभु ! अज्ञान का'सित योग दिम विज्ञान दिम ।
अंग हीनस दिम म्य काया मुर्द जिस्मस जान दिम ।।

२ शक्ति र'स्तिस दिम म्य शक्ती भक्ति र'स्तिस दिम म्य भक्ती
एक भक्तिस दो.शवं दिम ई म्य धर्मस दान दिम०

३ पकनस क्युत ओन त. रोन छुस भक्ति क्युत छुस न्यथ नोन
ज्ञान वाल्यन योगियन क्युत गिदनुक सामान दिम०

४ हीन छुस विद्यायि अंदर दीन छुस श्रद्धायि मंज
हान छुम प्रत कुनि कर्म.चि सत् जनन मज़ मान दिम हे०

५ ओंठ कुन पानस अ'नित श्रवण करुम व्याख्यान दिम
लूक युथ मोहित गछन त्युथ मुखस निर्वाण दिम हे०

६ क्रम गछ़न अद ईर. खस हिवि होशकुय तूफान दिम
गोफ शाल खोचन म्य पान सहसुंद ह्यु व त्राण दिम हे०

७ जय जय श्री रामच'न्द्रस त'मि सुंदुय वर दान दिम
क्षय गछ़्य्‌म इन्द्रिय शुत्रन वीर धर्मुक कान दिम हे०

८ यसि युक्तियि बनि मुक्ती तमिकुय विज्ञान दिम
दित मनोजय वासना क्षय सत स्वरूपचि ज्ञान दिम हे०

९ सर्व मंगल परम सुख दिम हर्ष दिम कल्यान दिम
अंत कालस मज़ ख्यालस सत् स्वरूपुक ध्यान दिम हे०

१० बाग दिम बंगाल दिम हमाम दिम डालान दिम
रायि रोस्तुय इम बनन निम ज़ायि आलीशान दिम हे०

११ ज़ीवतुक भ्रम च़लन बापत पानसय ह्यूव पान दिम
ध्यान 'कृष्णस योग ह्यत दिम मोग अमि यमि सान दिम हे०



(१०५)

१ बनुन आज़ाद ज़ि यक मिर्णय
करुन गछि़ पा'नि पानस जय।
क'रित भक्ती च्य मुक्ती छय
करुन गछि़ पा'नि पानस जय॥

२ व हर सो वुछ तसुन्दुय रूप
विवेक.य नोम प्रज़लाव धूप
त'मिस रुस्त वुछ छय मा कांह शय करुन०

३ चि़त्त.य नोम शीशा युस छुय चोन
विद्वानव ज्ञान वानव ज़ोन
करुन निर्मल त. कासुस ख्यय करुन०

४ चि़त्तक गुर वार पकनावुन
द'छिनि खोव.यं म. वुछिनावुन
विचा़र.कि कोच त्रावुस ह्य करुन०

५ सिलाह सामान युद्ध वेष गंड
दिवान गछ सर्व विषयन दंड
सो गयि निष्काम कर्म.चि क्रय करुन०

६ प्रमाद आलस्य पथर त्रा'वित
उद्योग कि जाम. पा'रा'वित
च. कर संकल्प चृ'रस त्तय करुन०

७ रटुन मोह. राज दिस गर्दन
छु दुर्योधन च. बन अर्जुन
ननक बहादुर बनक निर्भय करुन०

८ श'त्रु गालित च. मित्रन मंज़
क'रि संयोग. हर्षुक संज़
लमक विश्राम स्यठ्‌ गव तय करुन०

९ छु वथरित फश त हर्षुंक प्रंय
ख'सित संयोग न्य'न्दरे शोंग
भ'रित ख्वास्यन छु आनन्द मय करुन०

१० यि जानुन छुय स्यठाह मुश्किल
यि गव संयोगकुय मंज़िल
बि गव निर्वाण थातुक पय करुन०

११ रटुन मन बुद्ध चित्तस कुन गछ
ब. सोऽहं सो अंदर कुन अछ
अचे'तस सु.ति सुर्च'त करन करुन०

१२ सो.रुन सत्‌ चित्त आनन्दय
लमक त्यलि परम. आनन्दय
स्व आनन्द तत अंदर गछि लय करुन०

१३ अगर जानक च. पननुय पान
करुस अर्पण च. मन बुद्ध प्राण
पन.न मर पा'नि पानस प्रय करुन०

१४ हतो 'विष्णो' म. गछ दिलगीर
पूर्व कर्मुक यि छुय ता सीर
पन.न कर बुद्ध टोठिय दय करुन०



(१०६)

१ देहकिस द्वारस ल.यि त्रो पराव.नि
मोह. निशि चित्त छुय प्रावुन हो।
थावस मंज़बाग चोंग संदारुन
सत् विचारुन सोऽहं सो ॥ सत्०

२ मनचै पच्छियि गाश हात. सारुन
शशिकलि प्रमात फो.लवुन छुव
द्वादशांत मंज़ चित्त सिर्यि गछि़ खारुन सत्०.

३ गुरु शब्द निरोध किन्य. हांगिमि हारुन
यछि बोंद पछि़ सिधि साधुन छुव
मुक्तकार मोक्त समंदर गछि़ खारुन सत्०

४ प्राणस त. पवनस मन मिलनावुन
ध्यान धारणायि किन्य धारुन छुव
तमि योग ज्योति रूप ब्रह्म विस्तारुन सत्०

५ जाग्रत ज़ा'वित स्वप्न प्रकटावुन
सुषुप्ति मंज़ सुख ' प्रावुन ह्य ू व
तुर्यायि सु.ति चित्त लयि संदारुन सत्‌०

६ पद्मव रु^न मद होश्त विस्तार ता^रन
शमशेरि धारि ^'यठ ला^रन ह्यु व
पख उपज़ावित वुफि गछि ता^रन सत्‌०

७ दम ह्यथ दमनस मन. सो.नुर गा^रन
देह मायायि ज़ाम का^रन ह्यु व
ज्ञान सोन. चित्त कह्वचि गछि़ खा^रन सत्‌०

८ 'चन्द्रो' अन्दरी वाव ह्यत ता^रन
ओबर तल सिर्यि प्रकटावुन ह्य ू व
अंधकार च'लित गटि गाश ह्यक सा^रन सत्‌०

---

(१०७)

१ जाफ.'गं पोशास छु लक्ष्मी अंग ता'य।
सो.न सुन्द रंग ता'य पूज़ायि लाग ॥

२ सत्य देव लक्ष्मी नारायण ता'य
सर्व देव· ह्यथ कासिय दुर्गत
पोश पूज़ कर तस अन्न धन मंग ता'य सोन०

३ मादलि ह्यिथि पंपोशन ढेर कर
तुलसी छा'वि छा'वि शेरतस पान
सुन्दर डयूकसय टयोक लाग कोंग ता'य सोन०

४ सुय दियि मोक्ष आय अन्न धन धार
धारणा ध्यान ज्ञान योग विचार
वसनस नाव खसनस क्युत प्रंग ता'य सोन०

५ सत्पुरुषन निश छुक करन भक्ति भाव
तिहन्दन पादन तल पान त्राव
पान थव दास भाव तिम बरहंग ता'य सोन०

६ साध छुय पूज़नीय तसुन्दुय मन छु सेर
मुश्का ह्यत चरण कमलन नेर
आ'ल मान राधा कृष्ण जान रोंग ता'य सोन०

७ यूत ज्ञानक त्यूत पूज़ि मंज़ लीन बन
भक्ति भावस मंज़ आधीन बन
सुय छुय रत सात सो.य रच़ ज़ंग ता'य सोन०

८ सोय दया मंगतस भक्ति भावस सान
योस कासिय रोग देह अभिमान
व्यवहारन छुक ओनमुत टंग ता'य सोन०

९ ज्ञान कुलिसय छिय शम दम तन ता'य
शान्ती मूल मोक्ष त्युहल्य छुस
ल्यत भक्ति भाव रस भ'र्येथय टंग ता'य सोन०

१० ब्रह्मांड पान ज्ञान वार. सैरस नेर
मार्यनय तीर्थ यात्रायन फेर
ओर. मुचराव चित्त तोरगस डंग ता'य सोन०

११ अज्ञान॰ गटि मंज़ प्रज़लाव दीपय
शंकर 'कृष्ण' एक रूपय छुय
यी वनान साध संत क'रित सत्संग ता'य सोन॰



(१०८)

श्री परमानन्द जियनि 'शिवलग्न' मंज़ केंह श्लोक॥

१ रस पूर्ण परम सदा शिवह। सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह॥

२ दीन चा'नि नव निध अष्ट सिद्धह जीवन हृदि करुणा निधह
गलि गलि अमृत इमव च्यवह सत्॰

३ कुंभज मजना चा'ष करह गागरि मंज़ इतम सागरह
ज़्यव दिम तिछ़ युथ चानि गीत ग्यवह सत्॰

४ छ़्युष्मच् सो आशव पाशव सान आशो मटि छुय पान दपान
हे शिव! थ'वमै म्य आशवै सत्॰

५ पानस पानै छ़ु मेलनुय गिंदुना छ़ु गिंदुन त॰ गेलनुय
सोन नेरि नार मंज गलि ज़ुवह सत्॰

६ देह दृष्ट गलि चलि अभिमान अद बनि सत् स्वरूप ज्ञान
कृष्णस युथ जि मेलि उद्धवह सत्॰

७ युस इछ़ि सुय सुय तस इछ़े गछ़ि यस सुय सुय तस गछ़ि
इछ़ि पछ़ि त'मिसय प्रारवह सत्॰

८ लोलय छु ग्रोर योर मुलवनुय लोलय छु ग्रोर योर ललवुनय.
लोल सू.ति सुय लोल ललवह सत्०

९ केंह छुन लोल रस्त ग्रासवुन बोलय छु सार व्याध कासवुन
लोलके गाश गट कासवह सत्०

१० लोल बोज़ बोल वोज्ञ बोवनै लोलय छु चोदाह भवनय
शोलवुन छ लोरुय लोलवह सत्०

११ लोल सू.ति उलसन ग्रायि ज्ञग
लोल सू.ति छुम भ'रित पय ता'य रग
लोल परमानन्द प्राववह सत्०

१२ 'परमानन्द' बोज दय गत बो.य त्राव सा'यं मत मो च मत
कथ बोज्ञ नत. क्या यि क्रव क्रवह सत्०



(१०२)

१ यस छु हटि वासुक तस छु जटि पोत्र ।
गो.सोत्र हा'य गो.सोत्र हा'य गो सोत्र हा य गो.सोत्र ॥

२ गुस देव सर्व देवन हुंद छु ग्राद
सुय वरि पाप हरि करि प्रसाद
यस देवस छि पंपोश हिव्य पाद
हर मुख बर तल लायोस नाद
पादव त'लि छुस पकान सिध वोत्र गोसोत्र०

३ यस थ्यकनुय छु देवियन त. देवन
तस देवस छि सर्व देव सेवन
आत्म रूप आसवुन छु मंज़ जीवन
प्राण धा'रियन क्युत छु संजीवन
सुय नंग नोन च्योन दियि गंग वोत्र गोसोत्र॰

४ पूर्णायि सोस्ता छु नूर भ'रिथय
ब्रह्मांडन पालना करिथय
सुख मुख सू.ति छुय दुख ह'रिथय
वर-अभय सू.तिन छुय व'रिथय
य'मि सू.ति पानस ग्युव सो.दि वोत्र गोसोत्र॰

५ जन्मन हंज़ व्या'ध जालवुन छुय
ज्यन मरणकि गुण गालवुन छुय
माजि मा'लि संदि खोत पालवुन छुय
सात्रि कर्म भूतरा'च् वालवुन छुय
आत्म बोधुक रूद शांतियि शोत्र गोसोत्र॰

६ प्रेम मस चावि म'शरावि हन हन
सत भावि नित थाँवि निष्कल मन
मोक्ष दावि करनावि आनन्द गण
सन्मुख न'ञ हावि जोतन तन
'कृष्णस' प्यठ आवि शांतियि शोत्र गोसोत्र॰



(११०)

१ श्री निराकारै त्रिभुवन सारै प्रारै पनने यारै बल ।
भस्मा धारै छम चा'न लादन साधन प्यमयो पादन तल ।

२ लमयो आमन रटयो दामन शिवनाथ छम चा'न मन कामन
त्रिजगत्पालै इत सानि सालै चावतं प्यालै अमृत जल०

३ त्रिभुवन सारो हनि हनि मंज छुक मायायि सु.ति छुकन इवान द्रेंठ
सत्चित्त आनन्द गोविद केवल जाय चा'न हृदयुक पंपोश डल०

४ मनकिस बागस फुलया द्रायै रछव.नि लछ.नावि अछपोश छाव
शोक चानि प्रेमुक बुलबुल छु नालान
बोलान लोल.नै दिदरित. जल०

५ हे 'कृष्ण' ! वासना शुद्ध थव स्योध थव
बुद्ध थव सवसय छुन सन्निधान
सतस.य कन थव सतस.य मन थव
सतकिस कुजिस बसि आनन्द फल०



पर त. पान य'मि सम्नुय मोनुय य'मि हियुय मोनुय दिन क्यो रात
य'मिस अद्वय मन सां'पुन त'मिय ड्यूठुय सुर गुरु नाथ
—ललेश्वरी

(१११)

—स्व० मास्टर ज़िंदा कौल

१ कर सना ह्यथि ज़न्म यथ हृदयस अंदर श्री कृष्ण देव।
कर सना इयि माति असि पोज रुत सुन्दर श्री कृष्ण देव॥

२ कर सना गट कूठरे अनि गाश वुज़मुत स्व प्रकाश
बांदिवान.चि बेडि फुटरित खोलि बर: श्री कृष्ण देव०

३ वैर लोभ त. द्वेष ता'य अन्याय रूपी दानवन
चक्र सू.ति अभिमानचे फुटरावि थर श्री कृष्ण देव०

४ ज़ोर ज़र रस्त्यन दरिद्रन दलितन करि यावरी
द'दिम.त्यन शेहलावि दित शीतल नज़र श्री कृष्ण देव०

५ अर्ज़ुनस दित आज्ञा वददिल म. बन थोद वुथ च. लड
कासि ना असि दीनता पस्ती ह्यर श्री कृष्ण देव०

६ कृष्ण पूज़ा क्या छ्य? पालुन त'मि सुंदुय थोद कर्म योग
धर्मचे वति हुंद बनावुन राहवर श्री कृष्ण देव०

७ यसि न. वरतावस ओनुन गीतायि हुंद अक ओड श्लोक
लाभ क्या व्यक.नावनुय लूकन अंदर श्री कृष्ण देव०

८ का'र नोभरित दित बुधिम अथ अ'सि वदव ना शर्मि सू.ति
वुछ्यनस असि मंज़ अगर इयि चक्रधर श्री कृष्ण देव०

९ सा'नि दुख ता'य दा'दि त'मिस दि इम्तिहान निष्ठायि मंज़
हाल निशि न त. सानि व'निज्या बेखबर श्री कृष्ण देव०

१० कृष्ण सं.दे लोल इम आम.ति छि यो.त श्री कृष्ण भक्त
अज कर्यक प'ञि किञ सफल ज़न्मुक सफर श्री कृष्ण देव०



(११२)

पा'नि पानस दितो वो.नये।
हाविय शुभ दर्शुनये॥

१ संसार कठोर छु हुन्ये.नये वुछित यति केंह न. लारुनये
कुनि रंग नाव तारुनये हाविय०

२ भक्ति कामधेन रछुनये वासनायि घास दिस ल्योनये
गुरु शब्द वो.छ़ लागुनये हाविय०

३ विचार ह्यस दिस घोनये ज्ञान अमृत ह्यथि द्युनये
संतोष दज्जि फयारुनये हाविय०

४ वैराग ल्यजि कारुनये ध्यान. ज़ागि सू.ति ह्यथि ज़्योनये
ह्यन लो.लि ललनावुनये हाविय०

५ चित्त क.यि शेहलावुनये सोऽहं दोन त्रावुनये
रात दोह ह्यन मंदुनये हाविय०

६ नेर्यस प्रकाश. थ'व्यिये देह गुरसस मंज़ न'व्यिये
आत्म देव ग़्यव रछुनये हाविय०

७ दारि बर बंद करुनये यि रत्न ह्यथि चमकुनये
दो.गुन गछि ओंगुनये हाविय०

८ प्रज़नाव पान पनुनये अद कति ज़गत भ्यो.नये
चि़त्त प्रकाश ह्यथि उलसुनये ह़ाविय॰

९ फलि निश कुल कति भ्योनये फ'लिस.य मंज सु प्रास. वुनये
सुय फोल. ह्यवान फो.लुनये ह़ाविय॰

१० कति रोज़ुन त. मरुनये दु.य मति पत रोज़ि कुनये
कुस धारि कस होरुनये ह़ाविन॰

११ इच्छा कुल गालुनये त्यलि क्याह नो.न बनुनये
'भक्तिस' हाल भावुनये ह़ाविय॰

—स्व॰ श्री नन्द लाल जी आलवासी

---

(११३)

१ परिपूरण छु नूर. भो.रमुतये—सूर.मो.तये आंगन चाव।

२ शांत निर्मल अोंत कास.वुनये
भास वुनये सास़ रव ज़न
शिव शंभो अलक्ष्य बोल वुनये सूर॰

३ नंग भस्मा अगन मो.लमुतये
हटि भुजग जटि छ्स गंग
डय्‌कि चन्द्रम टिक. शोलवुनये सूर॰

४ अलक्ष्य बृज़ित तिम. गूर्य भाये
जसुधायि सान करान विनती
घन. बारव भो.रहस फो.तये सूर॰

५ जोगि दोपनक योगी ज़ा'निव
भोग त्रा'वित छुस निराहार
कामदेवस भस्म कोर.मुतये सूर०

६ लोभ च्रोभ नहीं ना अभिलाषा
आशा यह एक मन में
कृष्ण दर्शन करनि आमुतये सूर०

७ राधे श्याम को बोलो आदेश
ईश जोगी वेष धर के
तमि अभिप्राय योर आमुतये सूर०

८ बूज़ जसुधायि ह्यस व्यस.रा'नी
स्वामी सा'त्र विनती बोज़
खोचि़ बालुक छु रात ज़ामुतये सूर०

९ चानि दर्शन गछि तस छाये
राय क्या छय माय मरहस
अघोर भैरव फेर गछ पो.तये सूर०

१० जोगि वो.नस छक अनजा'नी
मान योगियन हुँद सरकार
राज़. ज़गि हुंद माजि ज़ामुतये सूर०

११ मार जगि हुँद वार. छुस वालुन
गालुन छुस दुष्ट संबन्ध
पालन कर्म वेदव वो.नमुतयें सूर०

१२ व्यन भवनन मय. सुय कासान
मासान सु नित्य ननि नो.न
मूल ज़ागि हुंद क्योल वोव.मुतये सूर०

१३ योग. मायायि संयोग क'र्यथ य
प्रेम. भ'रिथ.य निन हर्षाण
कृष्ण. शंकर क'रित नाल.मोतये सूर०

१४ ईक्षण. किन्य क.रुक वार.संवाद
दर्शन. आ'सि हरषा'णी
ती वो.तुक ई ज़गतस ह्योतये सूर०

१५ देव आकाश पोश वर्षा'णी
अछ-रछ मच् नचनस गयि
द्राव शम्भू सु आकाश खोतये सूर०

१६ नाद लोयुम त'तिय लोल म'तिये
रासुक भास यां'च्य वनि आम
सास "भास्कर" ज़न पूरि खो.तये सूर०



(११४)

१ वन्दयो मुच्य व. पादन छारथो राम. राधन।

२ विचार ना'गि वति लारै नुनर.कि तार. प्रारै
ब्रह्म.सर. किन्य दिमै वन्य छारथो०

३ अ'छिन हुंद गाश म्योनुय — ख़ुश इव.वोन नुँद. बोनुय
का'लि रा्यम हि्ये तन — छारथो॰

४ कश. तीर लोयथं म्य — लशि छ्रम नार.त्र रेह
अशि फय्'यंन ईयँम तन — छारथो॰

५ महा'लिशि किञ इमा'यो — हरमुख व'नि दिमा'यो
ह्स. द्वार. ग'छित र्टै वन — छारथो॰

६ च. रुदहम कथ शाये — क्रँक. न'दियि वो.ठ ब.लाये
गंग.बल युन छु आदन — छारथो॰

७ गोस. नो कँह म्य चोनुय — दयन य'लि वान. जोनुय
चार. नो ला'नि वादन — छारथो॰

८ च. ज़ि गोक म्य निश दूर — इज़ि त्यलि यलि गछ़्यं सूर
वुज़ि पोत्र नाग. रादन — छारथो॰

९ नाव तन त्राव कीनह — माव मीर दा.द म्य सीनह
हात्र मुख थाव लादन — छारथो॰

१० वरत्रि बल युथ न. रावँ — राम. राम क्रख त्रावँ
आलव दिज़्यम म्य नादन — छ.रथो॰

११ नेत्रन मंज़ र्टै पाद — बुथि शेरि किञ दिमै नाद
मरयो वुत्रि छु आदन — छारथो॰

१२ नाराण नाग. प्रा'ँ — वांगत जाय छा़रँ
प्रा'ँ सृ.ति साधन — छारथो॰

१३ सिर्यस छु गाश चोनुय — तस छु "प्रकाश" चोनुय
सो.य छै योग. साधन — छारथो॰

(११५)

१ सिर्यि वुज़नं वुम चंद्रम॰ सोवुम
तारकन दोवुम शून्य मंज़॰ थान।
गाश॰सू॰ति गाशुक गाश प्रज़नोवुम
सुबह रूप होवुम श्याम॰ लालन॥

२ दिन त॰ रात पांद गयि सिर्यि प्रक्रम॰ सुबह
चन्द्रमन प्याल॰ मयं शबनम सू॰ति
तमि प्याल॰ श्याम॰लाल दामा चोवुम सुबह॰

३ मन गुलि आफ्ताब ज़ान फो॰ल नोवुम
सिर्यि गंज़रोवुम परमात्मा
तत कुन मुख हांवित सुख प्रोवुम सुबह॰

४ आत्म॰ तीर्थ॰मार्तण्ड॰ मंज़ तन नांवम
पितृ लोकस दांवम तृप्ती
तमि कर्म॰ऋन हुंद ऋ॰ण मो॰कलोवुम सुबह॰

५ निर्वासनकुल्य आसन प्रोवुम
तति वेहनोवुम प्रत्यक्ष देव
निर्मल पंपोश॰ डल फोलनोवुम सुबह॰

६ श्री 'कृष्णस' सू॰ति दोह गुज़रोवुम
शामन होवुम तंमि श्याम॰ रूप
सुबहस सू॰तिन शाम मिलनोवुम सुबह॰

(११६)

१ अ'रिन्नि रंग गोम आवन हि्ये ।
कर इये दर्शन दि्ये ॥

२ श्याम. सोन्दर पामन ल'जि़स
आम. तावह् कोताह ग'ज़िस
नाम. पैगाम तस क़ुस नियेे कर०

३ कंद नावद आरुदमुतुय
फंद क'रित चोलुम कोतुय
खंद. क'यनम लूकन थिये कर०

४ सुलि वोथवो संगर मालन
लाल. छ्अरोन कोह्न त. बालन
प्रारान छुस ब. तहंज़ि वि्ये कर०

—अरन्निमाल



(११७)

१ मुझे राम से कोई मिला दे ।
बिन लाठी का निकला अँधा—राह से कोई लगादे मुझे०

२ कोई कहे वह बसे अवध में
कोई कहे वृंदावन में
कोई कहे तीरथ मन्दिर में
कोई कहे मिलते बन में
देख सकूँ में उनको मन में—ऐसी जोत जगादे मुझे०

ॐ नमो भवान्यै ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(अष्टम् - तरंग)

(११८)

१ स्मरणि चान्यि पाप सा'री हा'री—हारै पर्बत चि हा'रिये ।

२ संकट कट छुक हे मुकुट धारी
तेज़ चानि प्रज़लन आव संसार
सिंह आसन चिय छय सवा'री हारै०

३ गौरी नावस लगोय पा'यै पा'री
चाव प्रेम दो.ध चडवा'रिये
जानिनक अभिनव गुप्त आचा'री हारै०

४ न'टि लच्छलि आकाशन ग्रटन ता'री
नोन नीदिल बोन महिमा चोन
परम शक्त मा'निक शंकराचा'री हारै०

५ शिव शक्ति रूप ज़ा'नित चो.पा'री
गुलि ग'डित नन्य वुन्य या'री म्य कर
ह्यथ नवस नियनक मं'ज कष्टवा'री हारै०

६ नित्य सुमेरुस ता'व ला'यं ला'री
कति आ'स वातन चि शक्त ओस सख्त
पर्बत. प्रदक्षिण. पाप निवा'री हारै०

७ शारिका नाव छुय भाव छुम ब'नुय
नो.व न'षराव व्राव प्रोनुय याद
हाल मोष बाल पापन हंदि बा'री हारॆ०

८ आद्य शक्त पान.छक सर्व अधिका'री
पूज़ा करन.नि सा'रिय व्यय
साध सत वैरा'गि जोगि ब्रह्मचा'री हार०

९ चक्रेश्वरस य छु जय जय कारय
सार्यव.य रो.ट दरबार.य मुय
सिद्ध पीठ प्यठ गयि सिद्ध सत सा'री हार०

१० स्थानि सू.ति सा'य देव जीव व्यवहा'री
थानि सू.ति उल्लसन भाव संसार
थानि सू.ति सा'नी छय दुनियादा'री हारॆ०

११ अष्टादश भुजवय सू.ति पर्वत.
हित.कार. पुषि छक बत. बा'गरान
सब व्यापक छक सर्व उपका'री हार०

१२ कर्म लेखा छक पान. परम शक्ती
कर्म सान्य पनुनिय भक्ती लेख
कृत कर्म फल छक दिव. व.नि सा'री हार०

१३ अजपा गायत्री जपहोय अंन्दरी
श्री सुन्दरी योग. न्य'न्दरे मंज़
मन. प्राण. ध्यान ज्ञान. विचा'री हुरॆ०

१४ परमात्म. रूप. छक जगत.चि साक्षी
जितेन्द्रिय इन्द्राक्षी छक
प्राण शक्ति सु.ति छक पान. व्यवहा'री हारै.

१५ पान. छक योगी पान. ज्ञा'नी
वाणी रूप भवानी छक
बुज़ सू.ति ह्यस रटन.चि विस्ता'री हारै.

१६ चामर लाग.होय पोश चा'यँ चा'री
चण्डी च.य छक चेतन स्वरूप
चित्त शक्त छक चेनव.ञ चोपा'री हारै.

१७ मोह ज़ाल मंज़. नेरनुक उपाया
कर राज. हंसुन साया त्राव
हंस नाद सु.ति तार यमि हंस द्वा'री हारै.

१८ हीमाल पर्बत.व राज़. कुमा'री
चरणन लगोय पा'यँ पा'रीये
'कृष्णव' भक्ति बोज कन धा'यँ धा'री हारै.



(११६)

१ हीमाल. पर्बतने घरि ज़ायक।
भायक करने जगि पालना॥

परम शक्त परम. शिव छ्यांड.नि द्रायक
कर्म. सू.ति सांपनिक शिव शक्ति रूप
भगवत् माया बोज़.न. आयक भायक.

३ परमात्म. सिर्यि मंज. तेज़ा द्रायक
प्रज़ल.नि आयक संसारस
यमि मंज़ द्रायक त'थि मंज चायक आयक०

४ जगत.चि दाता क्रक फल दायक
यस च.य दिव तस दिगि शिवजी
सुय च्य लायक च.य तस दायक आयक०

५ वरण इयिय ह्यथ वैकुँठ नायक
वीगिस खसनस छुय छायक
मान.यॆब पतिव्रता सती द्रायक आयक०

६ 'कृष्ण' लोल. तारव सेतार वायक
वाणी भवानी च्यय गछिय सिद्ध
सुय करि नाद बिंदु बोज़नस लायक आयक०

(१२०)

मिलाप

१ पानै म्य पान हा'वित आशायि धारना'वित।
तन्हा सो लुक म्य थ्रावित कस ? म्यानि जोगि रायो।।

२ वुछनोवथस मनुक मल सो.न म्योन द्राव सरतल
वुछमक न. वार. को.र्थं चस म्यानि जोगि रायो

३ ह्यकखॅ वुछित च. तिम छोख मुचरित ब. सीन. हावय
चय वन च्यय रुस्त भावय कस ? म्यानि जोगि रायो

४ यव किञ बे सुम छय कोमल हृदयस कठोर वाणी
ग्रावन दिमव यतिय छ़यन बस ? म्यानि जोगि रायो

५ लो.भमक त. वो.ञ म. रावुम बालन कोहन म. छावुम
सत्संग. प्लाल. चावुम मस. म्यानि जोगि रायो

६ भगवान सोन बूज़िन असि आश चा'ञ रूज़िन
हथ वा'सि माजि मा'लिस लस. म्य.नि जोगि रायो

७ नित्य इष्ट देव. सद्यन पंपोश. पादन य तन
बंबुर ब'नित चवान गछ़ रस. म्यानि जोगि रायो

८ पज़ि प्रेयमके प्रभावय भोगान सुख त. सावय
निराग राज़. योगस खस. म्यानि जोगि रायो

९ दय. सुद प्रसाद सत्ज़न भक्तन छि बा'ग रावान
प्रेमुक चवान त. चावान मस. म्यानि जोगि रायो

१० ब.ति चा'ञ दा'सिया छुस च्यय मूल. माल. अर्पण
युथ छुक च. इष्ट देवस तस. म्यानि जोगि रायो

११ उपकार. म्यानि बापत थो.द योग. पोठ आ'वित
असि निशिति क्यूंच काला बस. म्यानि जोगि रायो

१२ भाषण मधुर मधुर कर फुटराव शकरस मो.ल
अभिमान कोसमन हर अस. म्यानि जोगि रायो



(१२१)

१ आमच मनस रच् वासना ईश्वर सफल करिनासना।

२ एकांतकिस गुहलिस अंदर उपरामकिस शिहलिस अंदर
पंपोश. पादन दो.न मलान पननिस गुरुस बो आस हा०

३ पूजायि विध कैंह ज़ान. मा लोलस निषध कैंह मान मा।
यद्यपि चृरि कुनि म्यूठा विज़ान लो.त तथ खो.रस बो आस हा०

४ य'च लोल. अ'छि वछ थावुन अ'छ टींटि रु्रत वो श त्रावुन
सुन्दर मुखचि इकांती वुछान तस सुन्दरस बो आस हा०

५ वाणी तस ज़ विज्ञान मय ज़न साम ग्यवनस पान दय
तन मन ब'नित कन बोज़वुन मधुरिस बो आस. हा०

६ सन् शब्द नोन विस्तारिहे उद्गीत स्वर थोद खारिहे
करवुन मनन स्वादुल चवान श्रवणुक सुरस बो आस हा०

७ बूज़ित श्रवण पादन प्योमुत संसार निश मोकलित गोमुत
पुशरित पनुन सोरुय गत परमेश्वरस बो आस हा०

८ 'वुछ तात.' व'नि व'नि गारिहम
कर. पदन. हृदयस सारिहम
जल बिंदु ज़न मीलित. गोमुत
सुख. सागरस बो आसहा०



(१२२)

१ हतो जीवो तसंज थव कल च. प्रावक सर्वदा मंगल

२ खबर मा छै ब. कव. ज़ायोस करनि क्याह योर ब.य आयोस
सु मेहनत कर लभक रुत फल च॰

३ म. रावर क्षण त. दिन तस विन सोरुन हरदम च़ जीनित मन
प्रेयम ज़ल चय मनुक मल छल च॰

४ सतन सू.तिन च. सत् थांपन च. सत् आ'णसित असत् मो बन
अचल आ'सित म. बन चञ्चल च॰

५ क'रित तय वोथ च. थानन फेर र'टित दम दम क'रित च.य नेरु
वज़िय ज्योति वुज़ी शशिकल च.॰

६ दमन अंदर नज़र था'वित पनुन तेज़ा दियम हा'वित
सिर्यि चन्द्रम अग्न वुज़मल च॰

७ व्यजितहठ वठ च. इन्द्रिय ज़ाल
यि काम क्रोध लोभ त. मोह मद गाल
उदासीन रोज़ त. भोग अन्न ज़ल च॰

८ गछुन युन योस गछिय व्यय हान
तम्युक काहण च. ज्ञान अज्ञान
विचार कर बनि सू मुशक़िल हल च॰

९ च. भूतन करत. विसर्जन स्व आत्म चि ज़ान आवाहन
व्यनह मरण. चि चलिय गांगल च॰

१० च़ मित्रस अथि पनुन जर थाव समुद्रस वस त. वस्वास त्राव
च़ लाल खारकत. लाग ड्ंगल च़०

११ हृंस आ'सित च मो बन काव हृंस बन दीघ त. पोश अंज़राव
स्व स्मृत अन सिरन मो डल च़०

१२ अ'द.र्य किञ सारिकुय कर त्याग न्यब.र्यकिञ सारिकुय थव राग
वैराग तनि राग. जाम वल च़०

१३ च़. 'नीलहकंठ' कर सन्यास नदी उपाध पानस कास
च. सू.तिन तत समुद्रस रल च०



(१२३)

१ मनि मंज़ ललवथ कन्हैया लालो।
भय हर बाल. गोपालो वे ॥

२ भय. मज कडतम् दयि अकालो
रक्षपाल. हा कृपालो वे
प्रेम. रस. भरतम् मनकुय प्यालो भय०

३ गोपियन सु.तिन मारव.नि छालो
दुख हर, भक्त रक्षपालो वे
ज़न्म गम कास्तम् कठ.नि कालो भय०

४ दूर्यर चोनुय कोताह चालो
वलनै आस ज़न्म जालो वे
ध्यान. दुकारि तथ बनि परनालो भय०

५ खटतं मत. पान रटथो· नालो
आस्तम् च. ना'ली नालो वे
लूस्मुत प्रार. वोष्न कोताह् कालो मय०

६ हारान वुछ्त. छुस अशवे चालो
लालो ! छंति गा'म लालो वे
वालि आम वुज़र ता'य क'हि संमालो मय०

७ दोह् आम सोरान छ्'ति गा'म वालो
प'लि कँह् ति पोवुम न. मालो वे
अथ छोन त. न्यथ नोन छुस वे हालो मय०

८ यलि वनि सयोग आसि कुस कालो
दूय रोज़ि न. कुनि कालो वे
गुरु शब्द एकुत बनि नन्दलालो मय०

९ नय छुक आकाश नय पातालो
नय छुक जंगल त. बालो वे
वनि छुकन इवान आ'सित ना'ली नालो मय०

१० मन सर.कुय बन राज़ निरालो
'नीलकंठनि' छुय सालो वे
रछ्तम संकट यमि कलि कालो मय०



(१२४)

१ नाद विन्द. परमानन्द नन्द लाले।
गोकुलानन्द. गोविन्द. गोपाले॥

२ मधु कैटभ मारवनि हा दो.ध चूरें
मन. मंज़लिस मंज़ करें गूर गूरें
गोपी नाथ. वाल. त्रिज़गत पालें गोकु०

३ यादव कुलके माधव रामै
हे निर्मल निष्कल. निष्कामै
गूर्य बालकन सृ.ति मारवनि छालें गोकु०

४ राधा-कृष्ण च्यय नादा लायय
श्रीधर प्रेम. स्वर मुरली वायय
रोज़ राम. बोज़ साम वे.दचि तालै गोकु०

५ हृदयस मंज़ बसवनि नित्य लसव.नि
असवनि आसवनि गरुडस खसव.नि
नाल.मति रटहत मो दिम डालें गोकु०

६ हनि हनि मंज आसवनि वासुदेवै
रास मंड़ल खेलव.नि कृष्ण देवै
नित्य मामवनि सत यमि कलि कालें गोकु०

७ पंकज तनि वैजयन्ती माला
तरज़ अकि ना'लि ता'य मौज दुवाला
संत छिय व'लित वसंत दुशालें गोकु०

८ केशव. शिव रूप नारायणै
वुन दित नोन गोक विंदराबनै
चोन ह्योत चंन प्रेम. मस प्याल प्यालै गोकु०

९ विदुर जियनुय घर. यलि चाख.य
मावनायि सू ति ख्योथ सिवमुत हा.खयु
कति गोख तति कोरवन ह्रदि सालै गोकु०

१० द्रौपदियि अकि कृष्ण. नाव सू.ति शामै
पैद.नयि तस ति कू.ति वस्त्र त. जामै
ईति क'डिस दुर्योधनन.य नालै गोकु०

११ चाञि 'मायायि सु.ति मंज़ द्वारिकाये
मथुरायि ह्यज़. हिश. लरि ता'य आये
पैद. गयि अकि दम. मंज कमि हालै गोकु०

१२ अज़ामल द्राव बोड भाग्य वान.य
निचविस नाव तस ओस नाराण.य
मृत. विजि फूर तस श्री अकालै गोकु०

१३ श्री भगवान् छुख पान. प्रत शाये
कुस वोत कुस वाति चाञि मायाये
मोकलाव असि यमि मोहनि ज़ाल गोकु०

१४ 'कृष्णस' शिव रूप. दर्शन दित चय
सुय चय चय सुय कंवल छुख न. चय
श्याम. प्रभात. रूप हावतस कालै गोकु०

(१२५

१ लत ला'इथ ससारस—पत. लारस ल'तिये ।

२ हंस. नादकिस जानवारस ना'लि जाम. त्रिस छ'तिये
वुफि तार्यम हंस. द्वारस पत०

३ सूर कोर त'मि अंधकारस युस वोर सूर म'तिये
वु.ति धारणाय ध्यान धारस पत०

४ अथ तेज रूप आकारस फेर ब्रठि ता'य प'तिये
पोंपुर ज़न गत. मारस पत०

५ लोल फंबकिस अंबारस रेह म्य दिच् सूर. म'तिये
स्रेह म्य छुम वोज़ कति प्रारस पत०

६ आरवल मंज लोल नारस द'ज़मच् 'प्रियम सू.तिये
शेहजारस मंज़ छ्र आरस पत०

७ नित्य लग.हा सत विचारस सत भाव्नाव स'तिये
स्वर फिरत. चित्त सेतारस पत०

८ वंदुन छुम पान यारस अंदुन छुम य'तिये
चन्दुन गोम देव. दारस पत०

९ गज व'छ सोंद.य नारस यति आ'सित छु त'तिये
वन. वन स.य कन धारस पत०

१० छाल मा'र्ये मा'र्ये लोकचारस क'र्ये म्य पोशन फो.तिये
शेरि लागस जटा धारस पत०

११ 'कृष्णन' दुप बाल यारस करहस नाल य'तिये
मेलि श'स्तर त. संगि पारस पत॰



(१२६)

१ चाल. छुम अशिजे कोनाह ब. चाल. लाल. ।
वाल. गोपाल म्या'ज पालना कर ॥

२ गिदनस आमुत पायस न. य्योमुत
न्याय अज़राव नत रावय बो
आ'वित म्य कर-म डाल बाल. विशाल लाल. वाल॰

३ कृष्ण ! चा'ज द्र य छुम वायै बोज़क
लायय न. मोक्त मालि पुछि मो खोच
अक रटत नाल लाल. व्ययि गंडे लोल माल. वाल॰

४ देवता यी आ'सि अंदि प'खि बोज़नस
सेव करनस तस भगवानस
संतूर वायनस भैरव वेताल ताल. बाल॰

५ पुशरुन छु मोक्त मालि माल कव छुच'थं
मोक्त हार पुछि ब. मोक्त हारन छुस
वात्यक न पनजिय वनतम छिनाल. लाल. बाल॰

६ ह्यरि बोन लोभमक न. लूक मा छ्यडनम
छुक बालुक त. छुय न. हर्ष-शोक केंह
कृष्ण इम वनान छिय बननै छुनाल.लाल बाल॰

७ मनस ब्राह्मणस व'निस मंज न. आखो
ज़नार्दन. सु न. व.निस मंज़
काल ओस पोज़ त. म्य मारनं अकाल लाल. बाल०

८ मोक्त मालि पुछि पुक्त. प्राण गव ब्राह्मणस
सक्त गोस पानस ज़ि वापस चाव
इथि नथ कद वुछान पान ज़ाल. लाल. बाल०

९ अ'रिस वुरिस रूग प्योस वा'तित
च'रिस गाटस खुर क्याह आस
राज हंस ज़ाल लोग चलनम न. ज़ाल. लाल. बाल०

१० संसार भ्रम छुय बा'ज्या त. बाज़ा
सूरमुत बाज कस फीरित आव
शश, पंज, चहार, सेह ब्ययि दुखाल लाल. बाल०

११ परमानन्द मोक्त हार. कथि कन थव
स'नि स'नि यति क्याह छि सोन डेशान
मुक्त गछि युस करि मोक्तस माल. लाल. बाल०

१२ 'परमानन्द' चन्द. छोन वुछान पानस
नत कति ओस तति मोक्तस मोल
प्रावि मुक्त त्रावि युस धन द्यार माल लाल. बाल०

---

(१६७)

भगवान् कृष्णुन मोक्त ववुन

१ गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वान ।
चित् विमर्श दीप्तिमान. भगवानो ॥

२ मोक्त मालि रोस्त ताम कृष्णस डेंशान
लारन त. नाल. मति रटानो
मुख डयूंठनस ता'य मुक्त ग्रा'स गछान. चित्त०

३ शाह छुसन फोरन त. तोरै छुस प्रछान
मा'जि मोक्त ब्योल छा ववानो
म्य'ति बोव ब्योल खल कोन छक सोंबरान. चित्त०

४ हाव बो कूं.ति लछ कुलि खसान.
बागस छि सास ब'दि बागवानो
तसली गोस छुम कृष्ण म'चरावान चित्त०

५ मोक्तस त. म्य'चि छुन बालुक ज़ानान.
म्य चय क्याह छि य'च फिकिर ग्रसानो
मोचि क्याह पतकुन यि यस ग्रासि मोचान. चित्त०

६ कृष्ण य ह्यकि स्यकि मोक्त ग्रासि करान.
यछ पछ कोन छव ग्रासानो
रूदमुत संशय रूद मोक्त. वालान. चित्त०

असुधायि मोह. माया ह्यस डालान.
मोक्त क्याह ज़ि त्युथ मोक्त ग्रासानो
युत छुन मोक्त मज़ राज द्वारस ति मेलान. चित्त०

८ ग्रंबना'वित छुसन. तमन्ना नेरान
रंबवाञ्रि मोक्त मालि सोरानो
छ'करित मालि बालि छुम तंबलावान. चित्त०

९ ह्यत क्या गछि़ वोज्ञ सु प्रोहत वनान.
ह्रीत छुमन रीत क्याह् कव ज़ानो
ब'नित क्याह् ग्राम वनित कव ज़ान. चि़त्त०

१० करनम न. पछ़ मोक्त छुन ग्रासान.
पछ़ क्याह् छ्य श्री नाराणो
म्यचि़ मुयं ग्रा'स दित य'च़ ग्रा'स भरान चित्त्०

११ वसुधायि ह्यस होश नज़ि रूदमुत दान.
मोक्त दान. पुछ़ि दान मनसानो
मोक्तसर ज़ि मायायि कांह् छुन ज़ानान. चित्त०

१२ ज़गतस मोह ग्रंधकार ग्राव वलान.
बुद्ध छकन सिद्ध छिन प्रावानो
ऋद्ध सिद्ध तस यस संतोष ग्रासान चि़त्त०

१३ गरज़मंद लूक ग्रा'सि गा'मति देवान
कृष्णज़ि कथि पछ छ्यि करानो
नेरि मा बीरि टंग द्यव नेरि ग्ररमान. चि़त्त०

१४ पकन कृष्णस पत. पत. लारान.
जंगलस मंज़ बाग डेंशानो
मोक्त कुलि भ'यं भ'यं त. मोक्त फल नेरान. चि़त्त०

१५ भ'यं भ'यं छि मोक्त लंग पथर नमान.
मुफ्त ज़न सु मोक्त डार मेलानो
मथुरायि बूज़मुत मोक्त द्युन गुयंन दान. चि़त्त०

१६ आश्चय मायायि आयायि वुछान.
कारण त. ऋषि मुनियन सानो
अ'नि ज़न छि तिम ति तति असि हि्व्य गछान. चित्त०

१७ सोबरा'वि लूकव मोक्त अंबर खान
नन्द गोप मोक्त. ओस बा'गरानो
पंच, त्र्य भाग.नि फो.त फो ति मेनान. चित्त०

१८ प्रोहत सूबमुत गरोष्ट त्रक सोंबरान.
दछिणा थि पूरि पूरि रिंज़वानो
पछ़ छ़्यन लूकन ह्वान त. नवान' चित्त०

१९ घर. आव म'र्य म'र्य वो.ग्र छुकन. रोचान.
मोक्तय छि लूख तृप्त गछानो
भगवान छु चो.पा'र्य मो.क्तय छकान. चित्त०

२० घर. आव प्रोहत ह्यत सोरि सामान.
धर्म त. दान य'च छु करानो
गृ्य कामधेनन मो.क्त. माल. पा'रान. चित्त०

२१ सास. बोज़. मोक्त. माल. तमि मालि खोत. जान.
रत्नव ज'र्य ज'र्य छि वुगानो
सो.ब्रन छि बोग ह्यत सु प्रोहत सोजान. चित्त०

२२ तव पत गोकुल कि जग होम करान.
देवता कृष्णस छि पूज़ानो
इच्छा भोज़न ब्राह्मणन ति ख्यावान चित्त०

२३ नच़नस त॰ गिंदनस गूर्य माथि तोषान॰
शुर्यन रटनस न॰ पोशानो
कृष्णस त॰ राधा माताथि वनवान॰ चित्त॰

२४ प्रोहत सु सूज़मुत मोक्त॰ दच्छिणायि सान
ग्यवान त॰ य'च़ गव रिवानो
धन॰ श्रवणस छुन॰ म्योन ह्युव खज़ान॰ चित्त॰

२५ बद्व भानस वति कुन्य अ'छि लोसान
ब्राह्मणस छु ताम दूरि डैंशानो
राज्य ज़न प्रा'वित बाज ह्यत ईवान॰ चित्त॰

२६ मा'रन छु मोक्त सो॰न स्वार्गी सामान
सास॰ ब'दि लूक ह्यथ छि पकानो
बार॰ बार॰ डैंशान त॰ बार॰ बार॰ वनान चित्त॰

२७ कोरमुत सु तदबीर घरि छुक रोज़ान॰
भगवत मायायि डैंशानो
वुछनस न॰ वननस न॰ बोज़नस न॰ ईवान॰ चित्त

२८ वनि क्याह कांछ वनि छा ईवान॰
ब्राह्मणस ति छिन॰ प्रज़नाशानो
सुशीलायि ज़न त॰ सुदाम वातान॰ चित्त॰

२९ डीशित मोक्त माल रत्नव त॰ सो॰न सान
मोक्त॰ माल पनत्रिय छय मंदछानो
पन॰ पहा'र पनन्यिय छु सुदाम छारान॰ चित्त॰

३० डीशि डीशि सोर देश असन त. गिदान.
राधा मालायि तुतानो
डयक ब'ड कोस इछ् प्रज़ि मंज आसान. चित्त्०

३१ संपता नच्नस त. वच्न वनान.
हर्षस गोमुत सु बृक्ष भानो
शरण कृष्णस छुय राधा गछान चित्त्०

३२ ब्राह्मण अभ्यागत त. ऋषण सोंबरावान.
पजन. खोत आसि धन. खर्चानो
रज्ञिता'य प्रजि मंज आश्चर्य ज्ञानान चित्त्०

३३ जग. होम ज़प तप ऋषि मुनी पूज़ान.
तुतान दोशवति त. वनवानो
देव कन्यकन मनि प्रकाश प्यवान. चित्त्०

३४ देवियि त. देवता धारणायि धारण.
राधा कृष्ण. कृष्ण. जपानो
राज्य लक्ष्मियि मा'जि को.छि को.छि क्यत ह्यवान चित्त्०

३५ व्यस. ता'य दास इम' खास खास आसान.
तिमन.य मू.ति धरि गिन्दानो
घरि घरि करिहे मनि कृष्णन ध्यान. चित्त०

३६ यी मनि फोरान त. ता आस सो.रान.
प्रेम सू.ति वा'णियि वनानो
व्ययि व्ययि व'नि व'नि त. व्ययि व्ययि बनान. चित्त्०

३७ "परमानन्द" तति पादन प्यत्रान.
साधन सुय फल मंगानो
टूठिनस राधा सहित कृष्ण. भगवान. चित्त्०



(१२८

१ मधु कैटभ मारवनि युद्ध वेष धारवनि।
शुद्ध शांन दोष चूर. गूर.गूर. करयो ॥

२ शहर शहर. गाम गाम. राम. राम. परयो
दक्षरण उत्तर पछ्रम पूर. गूर०

३ छिय वसंत रग जाम इन. चानि फोजम शाम.
लजि-लजि मूर. मूर. गूर०

४ कर हृषो केश. राग द्वेषकिस शोशस
खजि खंजि चूर. चूर. गूर०

५ बंबूर. गीता छुय गोपियि गावान
स्वर्ग. मंडल.चि हूर गूर०

६ सिर्यि दर्शन दित. मोह गटि मंज़ नित
इत. नूर.कि नूर गूर०

७ होश अ'लिवि पोश.किस गोशस प्यठ वेह
श्याम. रंग बंबूर. गूर०

८ तुलमी छावय — हियि तन नावै
फ'लिल. मुश्क. काफूर. — गूर०

९ मन.नकि तेलन. — निधि ध्यासन टोठ
श्रवण.कि कन. दूर. — गूर०

१० राज़. योग राज़ बोज़ — सा'नि ताज ताज स्वर
प्रेम. साज़. संतूर. — गूर०

११ देह. अभि मानुक — कुल ह्यथि छननुय
तीव्र. वैराग. सूर. — गूर०

१२ हे हरिहर.! पाप — पाप हर "कृष्णस" कर
अनुग्रह पूर. पूर. — गूर०



१ मंज़ पोश. बागन प्यठ नागरादन।
फेर.नि द्राहम साधन सू.ति॥

२ कन थावत प्रेम भ'रत्यन नादन
आदन बाजि छम लादन पा'अ
पूर्यर करतम था'विन.श्यन वादन
फेर.नि द्राहम साधन सू.ति



(१२६)

शिव निर्वाण

शिव शंकर भव भय हर हर. लगयो चरणन।
गुरु लगयो पादि कमलन् सत् गुरु लगयो चरितन्॥

१ चरणन् तल वार. वरतन् वरदा छुक शरणन्
शरण.य च्यय ग्रास कासतम मल म्य ग्रन्त: करणन्
मार शंकर कर रटहम कर ग्रर हर मरणन्
मर मर छुम ज्यन मरनुक ग्रमरेश्वर भगवन्
पादि कमलन तल म्य पालतम पालवुन छुक कालहन्
हन्य हन्य चय शिव वुछहथ यव दु.य गल्य हन हन शिव०

२ दय ग्रदुय द.इ म्य गच्छतम कर, दय दय निशि दिन
दीन दयाल कन म्य थावतम दीन वचनन त. वदनन
जर ज़र छुम ज़ुज़रणकुय ज़ोरनावतम मत. हन्
हननावन. हननावतम मन्य मोह युथ मुनियन्
देहपुष्ट मन तुष्ट थावतम देवजुष्ट छुक दुष्टहन्
वानै ईश्वर पानै तोषतम् पान वन्दयो तोषणन् शिव०

३ ग्रन्त कुस ज़ान्य च्य ग्रनन्तस सन्त व्यसरेय चिन्तनन्
क्याह निश्चय करि वेदान्तीय यत्य वेद लग्य पन्थनन्
ब्रह्मादिक गय मोहस् तत्व च्योन क्या व्यज़रन्
तत्पुरुष चय तत्व म्य भावतम वथ म्य हावतम ज़ाननन्
गय छुय सिद्ध शुद्ध मुनियन् सथ छुय्म शाप मोचनन
शाप मोचन ज्ञान लोचन पा'यं मार्या लोचनन शिव०

४ तेजोरूप तेज़ च़्य छुक सोम सूर्यन त. अग्नं
तेजोरूप च़.य मासान बाह्य अन्तर योगियन्
स्वप्रकाश त. स्वानुभवगम् शान्ततेजः ज्ञानियन्
शिव म्यत्य दित कर्म सुम स्यज़ ज़ान यछ़ ज़न कादिकन
ज्ञान ज़ानुन जाननीय च़.य क्याह ब. ज़ान. च्यान्य ज़ान्ब व्यन
ज्ञान उपदेश वार. वरतम् फर अज्ञान पटलन शिब०

५ निष्कारण सर्व कारण च़्य कारण कारणन
त्रेकार छुक च़.य कारण सृष्ट स्थिच तय प्रलयन्
च़.य कर्ता च़.य भर्ता च़.य हर्ता ज़गतन्
व्याप्य व्यापक भाव व्यापीत चय निरन्तर भवतन्
भुजि क्याह वन. चजि क्याह छुक युस न ज़ोन कांसि ज़ान्ब व्यन
ज़ान सोरुय चान्य दया चान्य कृपा भगवन शिब०

६ देव पोज़ छुक देव पूज़नीय पूज़ा व्यध पूज़नन्
विजि विजि भुजि पनि पूजहथ युथ च़ पूज़नस्व विष्णन
भाव वामन फुलनाविथ माल करहय कौसमन्
बो सं मन्य ब्यन लागहय ध्यय गुन्ध्य करहय कौसमन्
सोवुन्द यछ़ि पछ़ि हन्दय् पोग लागहय पादि कमल।
पादि कमलन तल म्य पालनम तल छ़्यथ क्यथ विघ्नन शिव०

७ शुद्ध निर्मल शिव पूजहथ यव सपन्य शुद्ध मन
शुद्ध मन च्यय ध्यान धारीथ शुद्ध स्फाटिक विकसन
नीलकण्ठस च्यय हटि वासुक चित्त् आत्मस् तमोगुण
सुधा धारा गंग ह्यरि शेरि छ्यय तारव.न् सु.ज़ि नरकन
शिवा धारमंच वाम मागस चित्त् शक्त चित्त् आत्मन
धर्म रूप वृषभ वगि त्रिशूल त्रि अवस्थाय अथि सन् शिव०

८ श्वेत सुन्दर छुत भस्मा तन्य प्रकटयोग सत्वोगुण
रुण्ड माला गल्य गंडम.च़ रोष कोरमुत इन्द्रियन
क्याह छय जटा मुकट शोभान छ़ल गुण्डमुत रजोगुण
टिकि शाय हिरि डिकि चन्द्रम प्रकटयुथ च्योन शुद्ध मन
दिक् वासन निर्वासन त्रास च्योन मन्य सुमनन
त्रिवाम छुख ज्ञान बुज़तय त्रिकार रूप त्रिनयनण शिव०

९ माया तीत माया चान्य त्रिगुण सू.ति विकसन
निर्गुण छुक गुण उल्लङ्घित माया गुण विलसन
भूत भावत भूत पंचक देह खर कुर अहमन
दह इन्द्रिय मन बुध ह्यथ प्राणबल सू.ति प्रसरण
सच्चिदानन्द रूप आत्मन जीवभावस कुर शयन
तादातम भाव देह के लोभ प्राकृत बल ज़ीवनन शिव०

१० मोह जाल सू.ति ज़ीव गण्डने आव कर्मनिन बन्धनन
काम क्रोधन स्थित रटनस प्यठ मनस बुज़ त इन्द्रियन
द्वन्द्वभावत रागद्वेष सू,ति काप्य लुग षट् शुत्रन्
गुण सङ्ग सू ति न्त गछय् लुग पुण्य पाप वश बांध.जन
मुक जारोक पाय चय शिव मोक्षदा छुक भक्तिन
भव बन्धन मुकलावतम छुक च़ य भव. ! भव. भयहन् शिव०

११ निष्प्रपञ्च च्योन सौख्य प्रपञ्च वाञ्छ छुम कस बर. कन
हे हरे हर विरिञ्चि बोज़तम क्याह़ वन. पञ्च दैवतन
वन च़. क्याह़ कर. चञ्चल मन. संसार क्यन ख्येंचलन
पञ्चवदन मुकलावतम केंह अन्त छुन न च्यान्य व्यन
कून. कून. कून कुनोय तोषतम केंह अन्त छुन हेरि बुन
रति मुख मुख सुख वरतम सुख सुन्दर दुःख हन् शिव०

१२ सम दितम संपदा यव सम सुम रोज़हा समयन
सम यस गछ़िय चान्य दया लग्य सुम स्यज संयन
सम्य समिरस. प्रथ गुण किन्य समयन तय साधनन
सुम आहार सुम विहार सम निद्रा त. जागरण
संभालिथ पानस सुम सुम शुज़रिथ शायहन
लग्य समाध योग सम स्यज़ विज़ि सत् गुरु वचनन् शिव०

१३ भक्ति प्रिय भक्ति दायक. दय युस इच्छहन भक्ति ज़न
भक्ति भावत. भक्ति भावनाय च्यय कुन लग्य निशि दिन
भक्ति वत्सल भक्ति छलबल. बल. फिरि गुड विषयन
दरि श्रद्धाय ध्यान धारीथ रटि प्राण बुद्ध चित्त् त.मन
यम नियम शम दम सम्य मन. सुरि सुय दय त्तण त्तण
मन जीनिथ पोज च़ीनिथ गछ़ि ज़ीनिथ भवनन शिव०

१४ यस संस्रति पोत अच्य मन सुस्त आस्यतन विभवन
लोर. आस्यन अन्न धन्नन् घरबारन त. सन्तनन
व्यवहार क्रयन काम्यन प्यठ परद्यन हज्य काम्य ज़न
प्रारब्धुक भोग भोगान् भोगवुन ज़न स्वप्नन
रागीज़न सार्यस.य सू.ति त्यागित सर्व कामनन
गच्छि संसार सर तरीथ लद करान सूह ज़न शिव०

१५ युदवै कांसि ओरै यीयि भंग संग मेल्यस साधुजन
साधुजन युस सम्य चित्त ताय ममताय निश आस्य भिन्न
भ्युन्न रूत क्रत द्वन्द्व भावन छ्यन दित सर्वे कामनन
शम दम ज्ञान विज्ञान सुस्त हस्त कपटन त. कल्पनन
ब्रह्म तत्पर आस्य आस्यस परेहट सर्वे विषयन
बुड दुर्लभ ब्रह्म रूप त्योंग लभ्य ज्य वु ह्योह साधुजन शिव०

१६ युस कांह यछि पानस रुत क्रुत त्राव्य प्राव्य शुद्ध मन
शुद्ध मन भक्ति भावतगुण कन थाव्य साधु वचनन
साधु वचनव प्राव्य जाग्रत जाग्य ज़ाग ह्यथ समयन
समय वात्यस शम यम नियम. पानै ता'यँ तस मुचरन
दीन दयाल. हे कृपाल कांस्य गथ छ्यन चान्य ब्यन
सत् भाव छम सथ चान्यी सत् गथ दिम भगवन शिव०

१७ त्यल्य च्योनुम भुज़ि क्याह छुस यलि वाचम चेनवन
चेनन आयम दया चा'ञ चेननावान सेवकन
भक्त युदवे मुक्त थावहम मुक्त छुस निष बन्धनन
सुप्रकाशत: अविनाशी माशवीथ ज्यन मरणन
सत चित्त आनन्द रूपस स्थिथ न्यन ह्यथ निर्गुण. गुण
प'ज़ दया चा'ञ भगवण कर्ति क्याह क्या'ञ वन.वन शिव

१८ शांत निर्मल भांत छम चा'ञ मानतम सार वन. वन.
अख शुभ दृष्टि शिव करतम नाव चोन शुभाअशुभन
शुभदायक शुभ दृष्टि चा'ञ सार शोभा शोभियन
शोभवुन च.ई त्रिन भवनन शोभ्रहथ पोषवर्षणन
शोभरावतम ज्ञान सदा शोभ यथ. यीय ज़गतन
शोभ स.रुय चा'ञ दया चा'ञ कृपा भगवन् शिव०

१९ अविनाश बंढ आश पूरतम नाश करहा कल्पनन
आशा पूर. आशा चा'ञ आश छम राश पपनन
गटि हन्दि घाश. चित्त् प्रकाश. घाश अनतम नेत्रन्
माशविथ रूज सर्व कल्पनन नाशविथ सर्ब वासनन
प्रकाश. शान्त. सु प्रकाश. च.ई घाशुर घाशरन्
पर. प्रसाद गुरु प्रसाद करू प्रसाद भगवन् शिव०

२० संसारचीय. छुच् माया शुयं मुयं ताय सम्तनन
भा'य बन्ध तय धन संगत घर बार तय सौजन
सोर असोर भ्रम सोंख्य मृगतृष्णा यिथ छान
शिव च.य न्योन शुयं मुयं तय भा'य बन्ध तय सारी जन
च्यय मोल मा'ज च्यय घरबार च्यय संपत् धार धन
च्यय सोंख्य च्यय सारय सहा रोजतम भगवन् शिव०

२१ लोभ छुम न सुरगण हुन्द क्षोभ तित. भिय नरकुन
रुत क्रूत सुख दुःख भोगान फल पनन्यन कर्मन्
हर नाव सूति थर.थर अचान दूरि यम. किंकरण
शिव भक्त सब सहाय छांडान माय. पनन्य देवगण
अख शुभ दृष्ट शिव छम चाञ्र लछ त्रिभवन त. स्वर्गन
सुय शुभ दृष्ट शिव करतम पानै वरतम भगवन् शिव०

२२ नव नाथेश्वर चय छुक नव निधान छुक सेवकन
नव्य खुत.नुव नुव बु वुछहथ लगि नुव नुव नवनन
नव गंडिथ नव रटीथ नव प्रणव व्याहरण
नव दक्षपाल ह्यथ रोजतम ईश राछ निश विघ्नन
नवदुर्गा करि पक्ष न्योन युस रक्षक शरणान्
नव द्वार पुर. खस वुफ ह्यथ नववुन्य शिव भवनन् शिव०

गोविन्द माला

१ निस्पन्द सांपन सो वुन्द सू.ति नित्य भगवत धारना धर
गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द कर।

२ मानुष्य जन्म दुर्लभ देवन सुलभ जीव प्रोवृत चे
गुरु शास्त्र पुर्षारथ पूर्वक निर्मल बुद्ध सांपनी
क्यों सोया मोहनी सजया पर जाग रे चत्रे नर गो०

३ अब है गोविन्द मिलने की भारी सब काज तजा कर
गोविन्द चर्णारविन्द अमृत पी के मन रजा कर
मानुष्य देह फिर हाथ नहीं आवत भवसर पार उतर गो०

४ श्रीमान सर्व लोक पाल दीन दयाल भगवान बाल गोपाल
कोमल श्यामल अंग, देव आभरण, गल तुलसी माल
गगन सदृश्य अविभूत दर्शन आश्चर्य.मय अक्षर गो०

५ स्युय शुभ समय कर सन ईयम युय म्य वरि रघु राये
रघु कुल दीपक दर्शन दियं करि म्योन मोक्षोपाये
श्याम सुन्दर राम चन्द्र दर्शुन आसि नख. शांत भासकर गो०



लेखक :— "संतोषी"

दिम म्य रच् त. शुद्ध वाणी महाराज्ञी भवानी।
यछ् त. पछ् छम म्य च्या'नी महाराज्ञी भवानी ॥

१ मंगहाय च्'य ब. वरदान छुम न. मंगनुक म्य त्युथ ज्ञान
रूज़ मा चा.ञ म्य निगरानी महाराज्ञी॰

२ यलि न. च. थवख म्या'ञ कल वन. कस ब. छुस दुर्बल
कुस लभन च्'य ह्य ब. दा.नो महार.ज्ञा॰

३ यल. छु चोनुय योत दरबार पूर. ब.रि ब.रि छि अंबार
तोलनस छि ब्रह्म ज्ञानी महाराज्ञी॰

४ कांह् अखा ति आशावान वाति युस च् निश माथि सान
लभि न ज़ांह सु मान हा.नो महाराज्ञी॰

५ यस च्. रोज़ख पान डखिदार दिख सुमन भक्त अधिकार
पोरि कुस तस प्राणी महाराज्ञो

६ भवितभावस च. छख ला'र फल दिनस छाच् निशि ता'र
छुय च् नाव ईशा.नी महाराज्ञी॰

७ छख शिवा च. शिव शक्ति चय हय युक्ति त. मुक्ति
चय् उमा चय् ब्रह्माणी महाराज्ञी॰

८ नव निधान छिय च् ब'डि कोश दिम म्य परम सुख त. 'संतोष'
छुस मंगान ब. सुय च्य ज्य'नी महाराज्ञी॰

लेखक :- "त्रैलोकी नाथ" हशरा

मा'ज्य शारिका.य कर दया वर दया ही भवा.नी
कर दयायि हज़ दृष्टी सु. छि ब'ड मेहरबानी।

१ आय लारान चे. निश योर कर्म खुरि बावा.नी
मत. वुछत. कर्मन कुन सारी छी पशेमानी ।०।

२ कुताम रोज़ि युन त. गछुन कुताम रोज़ि क्रेशुन त. वदुन
तार दिवान सारिन.य छख असि ति रोज़ तारानी ।०।

३ कुपुत्र छु माजि आसान मा'ज्य छन तस.ति रोशान
असि मगान चा'नी दया जगतच राज. रानी ।०।

४ नखि छख डखि छख चई चे.य सिव कोह ति छुन त्रियाख
दं ह त. रात चोनुय फिरान अख अजाब रूहानी ।०।

५ ओश वसान चालि चाले मा'ज्य भवा.नी हावी दर्शुन
कैंह ति छुन. नगान बोज़ुन कैंह नय छी असि ज़ानानी ।०।

६ बूज़मुत छु हलि मुशकिल बनि असि सवय आय योर
अख रछा करत वुन्य गोर हीमालच राज रानी ।०।

७ दासा छु दर इन्तिज़ार भवसागरस दिस तार
ल्यमभि मंज पंपोश खार बोज़तय चय म्याञ्ज ज़ारी
मा'य शारिका.य कर दया ॥



ओं नमो भवान्यं ।।

श्री शारिका लीला-लहरी

(नवम् - तरंग)

लल वाख

१ अभ्यास किनि व्यकास फोलुम,
सौ प्रकाश जोनुम यिहोय दीह ।
प्रकाश थ्रान मौख यी दोरुम,
सौख्य बोरुम कोरुम तिय ॥

२ गौर. कथ ,हृदयस मंज माग रटम,
गंग ज़ल नाविम तन त मन ।
सौ दीह जीवन मौखतय प्रोवम,
यम बयि चोलुम पोलुम अख ।।

३ पानय आव पानस सतिय,
पानय पनुन कोरुन व्यचार ।
पानय पनुन पान नेत्रि नोवुन,
पानय गुपुन पनुन पान ॥

४ ल्लिलि गौर ब्रमांड व्येठय किन्य वुछुम,
इयशकल वाचम पादन. तान्य,
ज्ञानकि अमरयत प्रकरथ बग्म ।
लूबय मोरुम अन्द वन्द तान्य ॥

५ क्या करम दग्म कोरुम,
तिरथन नावम पननिय काय।
पापन सौंबरिथ बसम क.रुम,
तति कुस ओस तय योत कम. आय ॥

६ पवन त प्राण सोमुय ड्यो.ठुम,
मीलिथ रूदुम शेर खोर तान्य।
दीह यलि मोठुम अद कयाह मोतुम,
न कुनि पवन त न कुने प्राण ॥

७ मनस स'तिय मन.य गोंडुम,
च्यतस रटम चौर्पाय वग।
अक्रच. सतिय पौढुय वोलुम
सर. मे कोरम लबम वथ ॥

८ कथा बूज़म कथय करम,
कथाय करम चौपार्य सथ।
शास्त्र किनिय कथय बूज़म,
कथायि हावम सतच वथ ॥

९ पूरक कौंबक रोचक कोरुम,
पवनस त्रावम प्यठय किन्य वथ
अनाहतस बसम कोरुम,
कैंह नो मोतुय सौय छम कथ।।

१० कैंहनस प्यठय क्या छुय न. चुन,
मौंचिय कैंह न त न. चुन त्राव।

पोत् फीरिथ छुय तोतुय अ़ चुन,
यिहोय व.चुन च्यतस थव ॥

११ कर्मुक कुला नो छुय बिनिथ ग़छुन,
वनिथ ग.छुन क्याह छुय पाय ।
कशफुक फलछुय मीलिथ ग.छन।
व.लिथ रो.जुन कुस छुय न्याय ॥

१२ कायस अन्द़र रुठुम अचिथ।
न्यायस थवनम चौपयि शाय,
पाय केंह् लोवुम नो माय छुस क'रिथ,
ज़ायस न आयस लोगुम नाव ॥

१३ कोसम बागस ग्रोतमय अ.चुन।
पचियय मन त अ.चुन त्राव,
सरुप दरशुन छु तोतुय अ.चुन।
कोत छुय ग.छुन पकुन त्राव ॥

१४ कामस सतिय प्रय नो ब.रम।
क्रूदस ध्युतुम पवनुन फेश,
लूबस मूहस चरण चटिम।
तृष्णा चजिम गयस खोश ॥

१५ ल्यक न थौक प्यठ शेरि ह्यचम।
न्यंदा स. पतिम पथ ब्रोंठ तान्य,
ललि चिह्न कल ज़ाह् नो छ्ययनिम।
अद यलि स. पनिस व्यपिहे क्याह ॥

१६ ज़्यस अन्दर कऽ त्याह् पऽलिम ।
सारिय छि छांडान दयि सं'ज़ वथ,
लछि मंज अकिस दया ज़ं'निम ।
मऽनिम यी दय्ज़ि ईशर गथ ॥

१७ गायत्रेय अजपा छल· अकि वऽजिम ।
सूहम सतचिय कं'ग्मस शक.
अहमस लोत पऽठय जठरय वऽजिम ।
गौर कथ पऽजिम च.ऽजिम चख ॥

१८ कौल तय मौल कथ क्योत छुय ।
तऽत. क्योत छुय शांत स्वभाव,
क्यि हुंद आगुर वति क्योत छुय ।
अन्तः क्योत छुय गौर. सोंद नाव ॥

१६ ज्ञान तय ध्यान क्याह् सन· करिय ।
च्यतस रठ त्रकरय वग,
मनस त पवनस मिलवन क.रय ।
सहज़स मज़ कर तिरथ स्नान ॥

२० प्राणस सतिय लय यलि करम,
ध्यानस थवतम न रोज़नस शाय ।
कायस अन्दर सो.रुय वुछुम,
पायस पोवुम कहमस ग्राय ॥

२१ मनस ग्राय चज पजिकुय अन्न स्योम,
तव कुय बल गौम करमस क्रय ।

आगुर क्षातिथ अमरथय जल चोम,
छ्विलय मन गोम बरमस प्रय ॥

२२ म्यथ्या कपट असथ त्रोवुम,
मनस कोरुम सुय वोपदीश ।
ज़नस अन्दर कीवल ज़ोनुम,
अनस ख्यनस कुस छुम दूष ॥

२३ कायस बल छुय मायस ज़ागुन,
प्राणस बल छुय शब्द स्वरूप ।
आयस बल छुय तत्व व्यद जानुन,
ज्ञानस बल छुय आदि अन्त तान्य ॥

२४ गगनस भूलस शिव यलि ड्यूठुम,
दास लबि न रोज़नस शाय ।
सिर्दयिकि प्रभाव व्यशमय ज़ोतुम,
ज़न गव थलस सत्य मीलिथ कयाह ॥

२५ वाव,च गाया पानस वुछिम,
वानस डोठिम सोरि रंग वस ।
ध्यानस अन्दर दम दम मीलस,
गौनन त्रोवुम मुचरिथ बर ॥

२६ रोज़नि आयस गछ़न गछ़यम,
पकुन गछ़यम वावलूक पाल ।
केहनस प्यठय न चुन गछ़यम,
अचुन गछ़यम सूक्ष्म प्रकार ॥

२७ वाख छोह दिथ मौखस बीठम,
मौखस ठीठम रोज़नस शाय ।
दौखस अन्दर न्यंदर मीठम,
बौद यलि जीठम मीठम कथ ॥

२८ शेलायि हंज़ऽय वौतमा बाजम,
सोंत्ररुम ट्योक पोष आसन पठ ।
मनस अन्दर व्य. चार कोरुम,
वुछम त डयू ठुम शेल कनिवठ ॥

२९ जनम प्राविथ व्यबव छोंडुम,
लूबन बूगन ब.रम प्रय ।
सोमुय आहार स्यठा जोनुम,
चोलुम दौख दौख ग्राव पोलुम ॥

३० ज़ल. प्येव पकुन छ्यकुन लूकन,
नारस अचुन मारस व्यद ।
आकऽश्य गमनो वुफुन आसुन,
कपट बासुन आसुन च्यथ ॥

३१ अन्दर आनिथ न्यबर छोंडुम,
पवनन रगन फ्युर नस सौर ।
ध्यान किन्य दयदगि कीवल जोनुम,
'रंग गव सन्गास मत्य मीलित कयथ

३२ ॐ कार शरीर कीवल ज़ोनुम,
शब्द रूप रस गंध स.तिय ह्यथ ।

आत्मस्वरूप सु पानय ओसुम,
परम तीथ दोरुम शेरस प्यठ ॥

३३ जन्म प्रावित कॅम सोदुम,
धर्म पोलुम सौय छम सथ ।
न्यत्रन अन्दर प्रथम दोरुम,
चोरुम त मोनुम यिहोह अख ॥

३४ सौरगस मा जुन कयाह छुय वासुनो,
नरकस वासुन आसुन दूश ।
चख र, शु न आसुन शिवमय खासुनो,
पान्य आसुन कासुन बीद ।

३५ मनस गुन छुय चंचल आसुन,
च्यतस गुन छुय गछुन दूर ।
जीवस गुन छुय ब'द्धि त्रेश आसुन,
आत्मस गुन छुय न आसुन लीफ ॥

३६ शिव त शक्त कल्यू डोंठिम,
तिमव र टम कामंस जाय ।
दायस दज्र ससि सने मीठम,
तीलिथ रूजम त्राविथ लर ॥

३७ शेरस सतिय सोदा कोरुम,
हरस कौरुम गौड सीवन ।
शेरस प्येठय किन्य न. चान डयूठम
गछान डयूठुम आयम पछ ॥

३८ क़ुनुय अछुर छु वरि पोरुम,
सोय म्य रोटुम हृदयस मज
सोय म्य लोन पाट'य गोरुम त चोरुम,
आ स् स सरतल ग्यस सोन ॥

श्री कृष्ण कार जी

१ वंदे शिला त्वम् ईश्वरीय श्री शारिका देवी नमः
म्यहरे चराचर सुँदरी श्री शारिका देवी नमः ॥
२ अव्वल तुई आखिर तुई बातिन तुई ज़ाहिर तुई।
गाईब तुई हाज़िर तुई श्री शारिका...............
३ जगरा सशे सामा तुई शाहे शहन्शांहा तुई ।
जिसमे जहां व जान तुई श्री शारिका......... ॥
४ लक्ष्मी जहां आरा तुई ममाई देश अफ्ज़ा तुई।
बुद्धी महाविद्या तुई श्री शारिका............... ॥
५ देवी जगत माता तुई शिव शक्त गुरु दाता तुई।
माता पिता भ्राता तुई श्री शारिका......... ॥
६ हाजत रवाऐ आलमें शाहे शुजाअत अक्रमे ।
कायम मुकामे दाम में श्री शारिका .... ॥
७ अज़हर से कारन बर्तनी दहेर से आलम सर्वरी।
बर्फर कि इन्द्र मुश्तरो श्री शारिका........... ॥
८ सीमवो जरो बहरे दुरो लोलोऐ लाला गवहरी।
ज़ेबे दु आलम अनवरो श्री शारिका........— ।

९ सहम व गजन फर वा हनत शिवजा अस्त ज़ेरे आसतल
लालो जवाहर दामनत श्री शारिका .... ॥
१० तू चार दह रत्ने गिरा तू नव निदाने बेकराँ ।
तू कानि गवहर दर अमा श्री शारिका........ ।
११ शक्ते तू कुदरत शुद्ध अचान तहते तू भखते जाविदान ।
तखते तू अरशे लामकान श्री शारिका........ ।।
१२ नागे त्रिलूको तिरथ जात सरचश्मे आबे हयात ।
आबस बकाये कथनाथ श्री शारिका........... ॥
१३ गरदे रहत् कोहलये बसर खाके दरत् नूरे नज़र ।
संगे समीरत सीभव जर श्री शारिका.... ... ।
१४ नूरे जहांने दावरी ताबन्द मेहेर अनवरी ।
माहे फिरोज़ा अख्तरी श्री........ ॥
१५ चिकरी शरव्हाजत् खा साजद् गदा रा पादश ।
वाह-वाह चह लक्ष्मी थापना श्री...... ।
१६ रोगन चरागे पारूपरी सिन्दूरी खासा लाहोरी ।
चहरव् कुनम् ज़रदोजरी श्री.............. ॥
१७ दर बारगाहत रोज व शब नारद मुनीशर बाअदब ।
दरबानि दरगाहत् तलब श्री——————— ॥
१८ गुल अज़ सरे खुद मी कुनम,
ब्रिनज अज़ दिलो जान आपरम्
पूजायत् खाहम् कुनम् श्री———— ॥
१९ अफ सुरदा अम मन बेनवा उफ तादा अभ बेदस्तव पा ।
दस्तम् बिगीर अई देवता श्री शारिका——— ॥
२० ही इश्ट देवी शारिका दासे तु केहतर कृष्णाकार ।
गोयद त्वता जोयद दया श्री शारिका———— ॥

पं॰ जानकीनाथ कौल 'कमल'

शिव - शंकर

मन स्थिर कर, मन्तर पर
शिव - शंकर शम्भो !

मन शुद्ध बनि साक्षात् ननि
हनि हनि गटि मन्ज़ गाश
सुव्यचार ब्ययि श्रद्धायि पर—शिव॰

प्रभातस अ्छ़ मन्दिरस
गंग - ज़ल तन ना'विथ
ध्यान - धारणायि मनि - मन्ज़ सुर—शिव॰

शिव नाथस गो'ड दि अशि - जल
शेरि लागुस भाव - पोष
मन - प्राण वार तुता कर—शिव॰

इन्द्रिय नैवेद्य स्वम्बराव
मन - ग्राम'रि मन्ज़ थाव
देह दीप ज़ा'लिथ वार पर—शिव॰

वास'नायि धूप थाव दज़वुन
विज्ञान - दीप व्रज़वुन
व्यज - पूवक व्यज़ना कर— शिव॰

सहस्त्रदल 'कमल' फोलराव
शिव - अनुग्रह यि'थ प्राव
शिव न्यथ सुर चलि ज़्यत मर
शिव - शंकर शम्मो !